

नास्तिक

ख़लील जिब्रान / अनुवाद-हृदयेश



नास्तिक



नास्तिक

ख़लील जिब्रान

अनुवादक- हृदयेश

प्रारूप प्रकाशन
६४, चौक गंगादास, इलाहाबाद-२११००३

मूल्य : १६.०० रुपया
प्रथम संस्करण : १६८४
प्रारूप प्रकाशन, ६४, चौक गंगादास, इलाहाबाद-२११००३ द्वारा
प्रकाशित तथा
नीलराज प्रेस, इलाहाबाद द्वारा
मुद्रित ।
NASTIK—(novel) by khalil jibron

भूमिका

खलील जिब्रान का कौल था :

मेरा कोई शत्रु नहीं है। पर, भगवान, यदि कोई हो, तो उसकी शक्ति मेरे बराबर हो और केवल सत्य की विजय हो !

सत्य के इस पुजारी खलील जिब्रान का जन्म १८८३ ई० में लेबनान के बशरा नामक नगर में एक सम्पन्न ईसाई परिवार में हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा बेरुत के अपने समय के सुप्रसिद्ध विद्यालय मदरसात-अल-हिकमत में हुई। सन् १९१२ में जब यह अपने विद्रोही विचारों के कारण देश-निष्कासित कर दिये गये, तो यह न्यूयार्क चले गये और स्थायी रूप से वहीं रहने लगे। १९३१ में १० अप्रैल को इस महान साहित्यकार का एक मोटर दुर्घटना में देहान्त हो गया। उस समय इनकी आयु केवल ४८ वर्ष की थी। पर इस छोटी आयु में ही इन्होंने जो कीर्ति अर्जित की, वह असाधारण थी।

खलील जिब्रान एक महान् चिन्तक, कवि, कथाकार, गद्यकार और चित्रकार थे। साहित्य की प्रत्येक विधा पर इनकी लौह-लेखनी समान गति से चली और उसे सम्पन्न किया। इनकी शैली बड़ी ही ओजपूर्ण, प्रवहमान और हृदयग्राही है। वह अन्तर को भिगोती चलती है। जितनी वह सरल है, उतनी ही तीक्ष्ण। इतने उच्च विचारों को इतनी सरल भाषा और इतने सीधे ढंग से शायद ही कोई कह सका हो। इनकी सारी रचनाएँ सुभाषितों से भरी हैं और इनके गद्य में कविता की सुकुमारता और संगीत का माधुर्य है।

खलील जिब्रान अन्धविश्वास और धर्मान्धता के घोर विरोधी थे। वह धर्म का पालन श्रद्धा से नहीं, वरन विवेक से करने के हिमायती थे। इन्होंने अपनी रचनाओं-द्वारा अज्ञान, रूढ़िवाद एवं धर्म और समाज के ठेकेदारों के काले कारनामों का अति निर्ममता से पर्दाफ़ाशकिक्र सामन्तवाद के अत्याचारों एवं पादरियों और सुल्तानों के दम न-या कराहती-सिसकती जनता और उनके विद्रोह का इन्होंने जैसा निर्भीक और सजीव चित्रण किया है, वह देखने की ही चीज़ है। इनके वर्णित प्रेम में वही तीव्रता और दर्द है, जो हमें सूफ़ी साहित्य में मिलता है।

खलील जिब्रान ने बहुत लिखा है। अरबी और अंग्रेजी भाषा पर इनका समानाधिकार था। इनकी रचनाओं की संख्या अभी निश्चित नहीं हो सकी क्योंकि अब भी इनका बहुत-सा साहित्य तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में बिखरा पड़ा है। 'प्राफेट' इनकी सर्वोत्कृष्ट कृति मानी जाती है। इसमें जीवन की जो सरस व्याख्या है, वह अप्रतिम है। इसका अनुवाद विश्व की प्रत्येक जीवित भाषा में हो चुका है। इनकी अन्य रचनाएँ भी बहुत तेज़ी से विभिन्न भाषाओं में अनूदित होकर पाठकों का कंठहार बन रही हैं। इनके चित्रों की प्रदर्शनी भी विश्व की बड़ी-बड़ी राजधानियों में हो चुकी है।

'नास्तिक' जिब्रान की उस समय की रचना है, जब उनकी अवस्था केवल २४-२५ वर्ष की थी। पर इसमें विचारों की जो परिपक्वता और कला की जो प्रौढ़ता है, वह किसी तपे हुए मनीषी की ही लगती है। यह कृति उन्हीं कृतियों में से एक है, जिनके कारण उन्हें जातिच्युत कर देश-निष्कासन दिया गया था। इसमें सामन्तवाद और उसके अत्याचारों और उसके प्रति खलील के विद्रोह का वर्णन निर्भीक वाणी और व्यंजना की शैली में किया गया है। उसका पुरस्कार यदि मदांध शासकों-द्वारा उन्हें यह मिला, तो कोई आश्चर्य नहीं। खलील का विद्रोह कराहती-सिसकती जनता का विद्रोह है। उसके उद्गार ईशू के उद्गारों की ही भाँति पवित्र हैं। 'स्वतंत्रता' को सम्बोधित कर पश्चिमी देशों के बारे

में उसने जो कुछ कहा है, वह आज अरब जगत में साम्राज्यवाद के चल रहे कुचक्र को देखते हुए बहुत सामयिक लगता है।

इस लघु उपन्यास के साथ यहाँ सम्मिलित दोनों कहानियों— "विद्रोही आत्मायें" तथा "सुहाग सेज" में भी इस लेखक का लगभग वही स्वर है—जड़ रीतियों-नीतियों और मानवता विरोधी धर्म, न्याय आदि पर तीखा आक्रमण करता हुआ एवं प्रेम, घृणा, पाप, पुण्य, धर्म, ईश्वर और राज्य व जन की मानवीय सन्दर्भों में व्याख्या करता हुआ।

उपर्युक्त रचनाओं का अनुवाद इस अनुवादक ने सन् १९५५ के आसपास किया था।

हृदयेश

नास्तिक

नास्तिक

उत्तरी लेबनान का वह गाँव। शेख़ अब्बास अपनी रिआया के बीच एक शहज़ादे के रूप में रह रहा था। उसका विशाल महल ग्रामीणों के निर्धन झोपड़ों के मध्य यों खड़ा था, जैसे बौनों के मध्य में कोई दैत्य। उसके जीने का तरीका उन लोगों से इतना दूर था, जितना पूर्णता से अभाव। उसका स्वभाव उन लोगों से इतना भिन्न था, जितना दौर्बल्य से बल।

शेख़ अब्बास उनके बीच अगर एक शब्द भी बोलता था, तो वे उसके समर्थन में अपना सर यों झुका देते थे, मानो वह ईश्वर का प्रतिनिधि है और उसकी ओर से बोल रहा है। अगर वह क्रोधित हो जाता था, तो वे उसके सामने भय से काँपते हुए यों लड़खड़ाने लगते थे, जैसे पतझड़ में अंधड़ से वृक्षों की पत्तियाँ। अगर वह किसी के थप्पड़ मार देता था, तो वह उसे गूंगा बनकर यों स्वीकार कर लेता था, मानो वह उसके लिए स्वर्ग से भेजा गया एक तोहफ़ा हो। मारनेवाले की ओर आँख उठाकर देखना एक पवित्र वस्तु का अपमान करना-जैसा था। अगर वह किसी की ओर देखकर मुस्करा भर देता था, तो अन्य उसके सौभाग्य से ईर्ष्या करने लगते थे कि वह अति बड़भागी है, कि उसने शेख़ को प्रसन्न किया।

शेख़ अब्बास के प्रति इन अभागों के इस आदर-भाव और उसकी कठोरता के प्रति इस भय का कारण केवल यही न था कि शेख़ अति शक्तिशाली था और वे अति निर्बल। बल्कि यह भी था कि वे बहुत ही ग़रीब थे और ज़रूरत से ज़्यादा उसपर विश्वास करते थे। जिन खेतों को वे जोतते थे और जिन कूहों में रहते थे, वे शेख़ अब्बास के थे। वे उसे

अपने पूर्वजों से विरासत में यों मिले थे, जैसे उन गरीबों को विरासत में ग़रीबी और दीनता। वे-सब उसकी निगरानी में ज़मीन जोतते थे, बीज बोते थे और फ़सल काटते थे। इस जी-तोड़ मेहनत की जो मज़दूरी उन्हें मिलती थी, वह होती थी उपज का एक अति नगण्य भाग। क्या वह उनकी भूख की ज्वाला को शान्त करने के लिए पर्याप्त था? लम्बे जाड़ों की समाप्ति के पूर्व ही उनमें से अधिकांश अपने इस भाग को खत्म कर चुके होते। तब उन्हें एक-एक कर शेख़ के पास जाना पड़ता। वे रो और गिड़गिड़ाकर उससे कुछ उधार देने के लिए प्रार्थना करते। शेख़ अब्बास तुरन्त ही उनकी आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए राजी हो जाता। वह जानता था कि जब फिर फ़सल खड़ी होगी, उसे अपने दिये एक रुपये के एवज में दो रुपये और एक सेर नाज के एवज में दो सेर नाज मिलेगा।

शेख़ अब्बास के कर्ज़ से इस प्रकार दबे और उसके प्रति अपनी आस्था की जंजीरों में इस प्रकार जकड़े और उसके क्रोध से इस प्रकार भयभीत होते और उसकी प्रसन्नता की इस प्रकार इच्छा करते वे सब अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे।

हिमपात और तूफ़ान लिये जाड़ा आया। खेतों और घाटियों पर सफ़ेदी पुतने लगी। सिवा कौवों के काँव-काँव के और कुछ नहीं सुनायी देता था। सिवा नंगे वृक्षों के ठूँठों के और कुछ नहीं दिखायी देता था। ग्रामीण खेतों की उपज से शेख़ अब्बास की खत्तियाँ और अंगूर की शराब से उसके बर्तन भर चुके थे। वे अब अपने-अपने गंदे निवास-स्थानों में भाग रहे थे। उनके पास अब कोई काम न था। उनका समय अलाव के पास बैठकर या तो पुराने ज़माने के किस्से-कहानियाँ कहने में कटता था, या इधर-उधर की अन्य बातों के सुनने-सुनाने में।

दिसम्बर का महीना समाप्ति पर आ गया। बूढ़ा साल भूरे आसमान के नीचे अंतिम साँस लेते हुए दम तोड़ने लगा। रात आयी। अदृश्य हाथों

ने नववर्ष रूपी शिशु की ताज-पोशी की और उसे अस्तित्व के सिंहासन पर आसीन कर दिया।···

मद्धिम प्रकाश और मंद पड़ गया। घाटियों और खेतों पर अँधेरा छा गया। बर्फ तेजी से गिरने लगी। हवा फूत्कार करती हुई पर्वत के ऊँचे शिखरों से निचली गहरी घाटियों की ओर दौड़ने लगी। वृक्ष भय से काँपने लगे। धरती डोलने लगी। खेत, पहाड़ियाँ और रास्ते सफ़ेदी से पुत गये। वे श्वेत पृष्ठ की भाँति हो गये, जिसपर मृत्यु ने दुर्बोध अक्षरों में कुछ लिखकर मिटा दिया हो।

घाटी के छोर पर स्थित गाँवों को कोहरे ने अलग-अलग कर दिया। खिड़कियों और झरोखों से चमकनेवाली मन्द रोशनी पर बर्फ का गिलाफ़ चढ़ गया। किसान भय से सहम गये। जानवर चारों में दुबक गये और कुत्ते कोनों में। सर्वत्र सन्नाटा। बस कन्दराओं और गुफाओं से सुनायी देनेवाला वायु का फूत्कार और गर्जन, जो उत्तरोतर तेज़ होता जा रहा था और निचली घाटियों तक में सुनायी देने लगा था, रह गया था। हवा बहुत तेज़ी से ऊँचे-ऊँचे पर्वतों से होती हुई नीचे दौड़ रही थी। प्रकृति जैसे वृद्ध वर्ष की मृत्यु से क्रुद्ध थी और अभाव और शीत से संघर्ष कर रही झोपड़ों में छुपी ज़िन्दगियों से प्रतिशोध ले रही थी।

इस भयानक रात में, खौफ़नाक आसमान के नीचे, एक २२ वर्षीय युवक किज़हया के विहार (मठ) से शेख़ अब्बास के गाँव को जानेवाले मार्ग पर बढ़ रहा था। सर्दी से उसकी हड्डियाँ ठिठुर गयीं थीं और भूख और भय ने उसकी शक्ति सोख ली थी। उसका काला लबादा, जिसे वह पहने हुए था, बर्फ से इस प्रकार ढँक गया था, मानो मृत्यु से पूर्व ही वह उसके लिए कफ़न बन जाना चाहता हो। वह ज्योंही एक कदम आगे रखता था, क्रुद्ध हवा उसे पीछे ढकेल देती थी, जैसे वह उसे उन झोपड़ों में नहीं देखना चाहती थी, जहाँ ज़िन्दा इन्सान रह रहे थे। एकाएक ऊबड़खाबड़ रास्ते पर उसका पैर लड़खड़ाया और वह गिर पड़ा। उसने सहायता के लिए पुकारा, पर शीघ्र ही गिरती बर्फ के कारण चुप हो

गया। वह उठकर फिर खड़ा हो गया, ख़ामोश और काँपता हुआ। संघर्ष-शील प्रकृति-तत्वों से आक्रान्त वह दुख के साथ-साथ अति निराशा से भर गया। उसकी दशा उस पक्षी-जैसी हो गयी, जिसके पंख टूट चुके हों और नदी की तेज़ धारा में गिरकर वह गहरे समुद्र की ओर बह रहा हो।

वह मौत से एक बार फिर जूझा। वह घसीट-घसीटकर आगे बढ़ा, पर शीघ्र ही बर्फ पर निढाल होकर गिर पड़ा। उसकी शक्ति निःशेष हो चुकी थी और निराशा ने उसे जड़ीभूत कर दिया था। उसकी रगों का ख़ून जम गया था। जीवन के जो-कुछ भी तत्व शेष थे, वह उसके सहारे सहायता के लिए चीखा, एक ख़ौफ़नाक चीख; उस सहमे हुए व्यक्ति की चीख, जो अपनी आँखों के सामने मौत की छाया खड़ी देखता है; उस संघर्षशील, पर निराश व्यक्ति की चीख़, जिसे अन्धकार मुँह फाड़े निगल रहा हो, या जो तेज़ अंधड़ की गिरफ़्त में फँसकर किसी गहरे गर्त की ओर लुढ़क रहा हो; वह चीख़, जो ज़िन्दगी से असफल चेष्टा करती हुई चिपट रही हो।

गाँव के उत्तर की ओर खेतों के बीच में एक छोटा-सा झोपड़ा एकाकी खड़ा था। उसमें रहेल नामक एक औरत अपनी लड़की के साथ निवास करती थी। लड़की का नाम मरियम था। उसकी आयु अट्ठारह वर्ष से कुछ कम थी। रहेल समन अलरामी की विधवा थी। उसका पति पाँच वर्ष पूर्व एक निर्जन-स्थान में कत्ल किया हुआ पाया गया था। कातिल का पता न चला था।

जैसा कि ग़रीब विधवाओं के साथ होता है, रहेल को जीने के लिए मेहनत-मज़दूरी करनी पड़ती थी। उसे सदैव मृत्यु और बरबादी से भय बना रहता था। कटनी के समय वह खेतों में अनाज के गिरे हुए दाने बटोरा करती। पतझड़ में वह बागों में जाकर गिरे हुए फलों के टुकड़े इकट्ठा करती थी, और जाड़ों में या तो वह ऊन काता करती थी, या

चन्द पैसों और सेर-दो-सेर मोटे नाज के एवज में दूसरों के कपड़े सीती थी। यह सब काम वह बहुत ही होशियारी, सफ़ाई और ईमानदारी से करती थी। उसकी लड़की मरियम, जो सुन्दर, मृदुल और गम्भीर स्वभाव की थी, इस मेहनत-मज़दूरी और गृहस्थी के कामों में उसका हाथ बँटाती थी।

उस भयानक रात में, जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है, रहेल अपनी लड़की के साथ अलाव के निकट बैठी थी। शीत के कारण आग की गर्मी मन्द पड़ गयी थी, यद्यपि अलाव में अंगारे लाल-लाल थे। उनके सर के ऊपर एक चिराग़ जल रहा था, जिसकी धूमिल पीली किरणें अन्धकार को इस प्रकार प्रकाश दे रही थीं, जिस प्रकार प्रार्थनाएँ पीड़ित व्यक्तियों के हृदयों को सान्त्वना देती हैं।

अर्द्ध रात्रि झुक आयी। वे दोनों उसी प्रकार बैठी हुई बाहर के तूफ़ान का गर्जन सुनती रहीं। थोड़ी-थोड़ी देर बाद लड़की दीवार में लगी छोटी खिड़की को खोलकर बाहर निबिड़ अन्धकार में झाँक लेती थी, पर शीघ्र ही प्रकृति के क्रोध से डरती-सहमती हुई वापस आकर अपनी जगह पर बैठ जाती थी और काँपने लगती थी।

एकाएक लड़की चौंक उठी, मानो सोते में कोई डरावना सपना देखा हो। उसने सहमती हुई निगाह से माँ की ओर देखा और शीघ्रता से पूछा—माँ! क्या तुम्हें कुछ सुनायी दिया? तुमने किसी को पुकारते हुए तो नहीं सुना?

माँ ने अपना सर कुछ ऊपर उठाया और सुनने का प्रयत्न किया।

—नहीं, कुछ नहीं है। सिर्फ हवा की आवाज़ है। तुझे धोखा हुआ है।

—नहीं, माँ, मैंने साफ़ सुना है,—लड़की अपनी बात पर अड़ी रही —वह आवाज़ हवा की आवाज़ से ज्यादा गहरी थी और तूफ़ान के गर्जन से ज़्यादा तीखी।

यह कहते हुए उसने उठकर खिड़की खोल दी और एक मिनट तक

खामोश खड़ी बाहर कान दिये रही। फिर एकदम से बोल उठी—माँ ! मुझे फिर सुनायी दे रहा है। वैसी ही आवाज़ !

माँ शीघ्रता से खिड़की के निकट आ गयी।

—हाँ, अब मुझे भी सुनायी दे रहा है। चलो, बाहर निकलकर देखें। पर इस खिड़की को बन्द कर दो, नहीं तो हवा यह चिराग़ बुझा देगी।

उसने एक लम्बी चादर अपने चारों ओर लपेट ली और दरवाज़ा खोलकर जमते हुए कदम रखती हुई बाहर आ गयी। मरियम दरवाज़े तक ही बढ़कर रुक गयी। उसने दोनों हाथों से किवाड़ पकड़ लिये और खड़ी हो गयी। हवा उसके बालों को तेजी से उड़ा रही थी।

रहेल ने अपने पैरों पर झुककर जम रही बर्फ को झिटक दिया और चन्द कदम आगे बढ़ी। फिर रुककर पुकारा—कौन है ? अभी मदद के लिए कौन पुकार रहा था ?

पर उत्तर में कोई आवाज़ नहीं आयी। उसने दो या तीन बार इन्हीं शब्दों को दुहराया। पर वैसी ही ख़ामोशी। हाँ, तूफ़ान की भंयकर गर्जना अवश्य सुनायी दे रही थी। वह साहस कर और आगे बढ़ी। हर क़दम पर वह चौकन्नी दृष्टि से चारों ओर देखती जाती थी। तूफ़ान के थपेड़ों से उसे रह-रहकर अपने हाथों में मुँह छुपा लेना पड़ता था। दस-बीस गज़ आगे जाने पर उसे बर्फ पर पैरों के निशान दिखायी पड़े। वे काफ़ी हल्के थे। शायद हवा उन्हें तेज़ी से मिटा रही थी। वह अब उन्हें देख-देखकर आगे बढ़ने लगी, सतर्कतापूर्वक और सहमती हुई। कुछ ही आगे बर्फ पर एक मानव-शरीर पड़ा था, जो ऊनी श्वेत वस्त्र पर एक काले धब्बे की तरह दीख रहा था। उसने शीघ्रता से झुककर उस पर जमी हुई बर्फ को हटाया और उसके सर को अपनी गोद में रख लिया। सीने पर हाथ रखकर देखा, तो हल्की-सी धड़कन शेष थी। वह अपनी झोपड़ी की ओर मुँह करकें ज़ोरों से चिल्लायी—मरियम, यहाँ आओ ! यहाँ एक आदमी बेहोश पड़ा है ! इसे उठवाने में मेरी मदद करो !

मरियम किवाड़ छोड़कर बाहर आ गयी। भय और शीत से काँपती, सहमती हुई वह माँ के पग-चिह्नों पर तेज़ी से चलने लगी। उस स्थान पर पहुँचकर, जहाँ उसकी माँ थी, जब उसने एक युवक को बर्फ पर संज्ञाहीन पाया, तो वह दुख और दर्द से कराह उठी और सिसकियाँ भरने लगी। रहेल ने युवक की बगलों में हाथ डालते हुए समझाया—घबराओ नहीं। अभी यह जिन्दा है। तुम इसके लबादे के इस सिरे को पकड़ लो और फिर हम इसे अपने घर तक उठा ले चलें।

दोनों औरतों ने उसे उठा लिया। क्रुद्ध हवा तेज़ थपेड़े मारती हुई उन्हें पीछे ढकेल रही थी और पृथ्वी पर गिर रही बर्फ उनके पैरों को जकड़ रही थी। पर वे संघर्ष करती हुई अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती गयीं। झोपड़े में पहुँचकर उन्होंने युवक को अलाव के निकट लिटा दिया। रहेल उसके ठिठुरे हुए बाजुओं को रगड़ने लगी और मरियम उसके भीगे बालों और ठंडे हाथों को अपनी ओढ़नी से पोंछकर सुखाने लगी। शीघ्र ही युवक में स्पन्दन हुआ। वह हल्के से हिला, उसकी पलकें झपकीं और उसने एक गहरी साँस भरी। उन दयामयी देवियों के हृदय में आशा का संचार हुआ। मरियम युवक के फटे जूते और उसका भीगा लबादा उतारती हुई बोली—माँ! इन कपड़ों को देखो। यह तो किसी विहार के भिक्षु-जैसे लगते हैं।

रहेल, जो अब अलाव में सूखी चिपड़ियाँ डालती हुई आग तेज कर रही थी, आश्चर्य से उसकी ओर देखती हुई बोली—नहीं, कोई भी भिक्षु ऐसी रात को विहार नहीं छोड़ेगा। पर इस नौजवान ने क्यों अपनी ज़िन्दगी ऐसे ख़तरे में डाली, समझ में नहीं आता।

—माँ!...हाँ, इसके दाढ़ी भी नहीं है। भिक्षुओं के तो घनी दाढ़ी होती है—लड़की ने धीमे से कहा।

माँ युवक की ओर देखने लगी। उसकी आँखों में माँ की स्पष्ट ममता थी। आह भरती हुई बोली—बेटी! अब चाहे यह भिक्षु हो या पाखंडी, हमें अपना धर्म निभाना है। तुम ठीक से इसके पैरों को सुखाओ।

यह कहकर वह स्वयं एक लकड़ी के सन्दूक के निकट गयी और उसे खोलकर एक प्याले में थोड़ी-सी शराब उड़ेल लायी।

—मरियम, इसका सर ज़रा ऊपर उठाना। शराब पिलाऊँगी। इससे इसके जिस्म में गर्मी और ताजगी आ जायगी।

उसने उसके ओठों से प्याला लगाकर शराब की कुछ बूंदें गले के नीचे उतार दीं।

युवक ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें खोल दीं और अपनी जीवनदात्रियों की ओर पहली बार देखा। उसकी दृष्टि में कोमलता और वेदना थी, आँसू से भीगी कृतज्ञता थी, वह उस व्यक्ति की दृष्टि-जैसी थी, जो मौत के चंगुल से छूटकर जीवन का आलिंगन कर रहा हो। उसने अपने सर को किंचित घुमाया और उसके अधरों से यह शब्द फूटे—ईश्वर तुम दोनों का भला करे!

रहेल ने तुरन्त ही उसके कंधे पर हाथ रखकर मना किया—नहीं, मेरे भाई, अभी न बोलो। अभी तुम बहुत ही कमज़ोर हो। थोड़ा आराम करो।

मरियम ने कहा—यहाँ अलाव के क़रीब इस बिछावन पर आ जाओ।

युवक कराहता हुआ बिछावन की ओर खिसक गया। रहेल ने प्याले में थोड़ी-सी शराब फिर उड़ेलकर युवक को पिला दी और लड़की से बोली—इनका लबादा सूखने के लिए आग के पास फैला दो।

मरियम ने वैसा ही किया। वह युवक की ओर कोमल और करुण दृष्टि से देखती रही, मानो वह अपनी इस दृष्टि-द्वारा उसके रुग्ण शरीर में गर्मी और शक्ति भर देना चाहती थी।

रहेल ने युवक के सामने दो रोटियाँ, थोड़ा-सा शहद और एक तश्तरी में सूखी मेवा लाकर रख दी और समीप बैठकर उसे अपने हाथों से निवाला तोड़-तोड़कर यों खिलाने लगी, जैसे वह उसकी अपनी ही सन्तान हो। जब युवक का पेट भर गया और उसने अपने में कुछ शक्ति

अनुभव की, वह बिछावन पर उठकर बैठ गया। अग्नि के धूमिल प्रकाश में उसकी पीली आकृति चमकने लगी और उसकी उदास आँखों में रोशनी आ गयी। उसने अपना सर थोड़ा-सा घुमाया और बोला--दया और क्रूरता का संघर्ष सदैव से इन्सान के दिलों में होता आया है, जैसा कि प्रकृति-तत्वों का यह संघर्ष इस काली रात में हो रहा है। पर दया ने सदैव क्रूरता पर विजय पायी है, क्योंकि वह एक ईश्वरीय गुण है। रात का यह वहशीपन क्या सुबह की लाली फूटते ही नहीं मिट जायगा !

वह क्षण-भर के लिए रुका। फिर धीमी आवाज़ में, जिसका सुनना कठिन था, यों बोला—इन्सान के हाथ वे भी थे, जिन्होंने मुझे मौत की ओर ढकेला और इन्सान के हाथ ये भी हैं, जिन्होंने मुझे जिन्दगी दी। इन्सान की क्रूरता में जितनी शक्ति है, दया में उससे कहीं अधिक है।

रहेल ने उससे पूछा, उस आवाज में, जिसमें माँ के हृदय की मिठास और शीतलता थी—मेरे भाई, तुमने इस ख़ौफ़नाक रात में विहार को छोड़ने की कैसे हिम्मत की ? ऐसी रात से तो दरिन्दे भी खौफ़ खाते हैं और अपनी-अपनी माँदों में दुबक जाते हैं। चील और गिद्ध-जैसे पंछी भी डरकर चट्टानों के पीछे छुपे रहते हैं।

युवक ने अपनी पलकें गिरायीं। आँखों में आ गये आसुओं को जैसे वह अपने अन्तर की गहराई में डुबो देना चाहता था। बोला—जानवरों के रहने के लिए माँदे होती हैं और आसमान के पंछियों के रहने के लिए घोंसले। पर आदम का बेटा नहीं जानता है कि वह अपना सर कहाँ छुपाये।

रहेल बोल उठी—ठीक यही ईशू नासरी ने भी अपने से कहा था, जब एक हादी उनसे बोला था कि वह जहाँ भी जायँगे, वह उनके पीछे-पीछे जायगा।

युवक ने कहा—आज की छल, फरेब और दुराचार की इस दुनिया में जो भी अपनी आत्मा की आवाज़ सुनेगा और सच्चाई पर चलेगा, वह यही कहेगा।

रहेल कुछ क्षणों के लिए खामोश हो गयी। शायद युवक के कहे हुए शब्दों के अर्थ समझने लगी। फिर जिज्ञासा-भरे स्वर में पूछा—विहार में तो बहुत जगह है। वहाँ सोने और चाँदी से भरी तिजोरियाँ हैं। अनाज और शराब से भरे तहखाने हैं। उम्दा नस्ल के बछेड़ों और भेड़ों से भरे बाड़े हैं। वहाँ हर किस्म का आराम है। तुम फिर क्यों ऐसी आरामदेह जगह को छोड़कर इस तूफानी रात में निकल पड़े ?

खलील ने एक गहरी साँस भरी। बोला—मैंने उसे छोड़ा नहीं, ज़बरदस्ती निकाल दिया गया।

—जबरदस्ती ?—रहेल के स्वर में आश्चर्य था—विहार में रहनेवाला भिक्षु तो लड़ाई के मैदान का सिपाही-जैसा होता है। सिपहसलार अगर उसे झिड़कता है, तो वह चुपचाप सह लेता है। उसे जो हुक्म मिलता है, वह तुरन्त ही उसका पालन करता है। मैंने तो यह सुना था कि कोई भी मनुष्य विहार का भिक्षु तब तक नहीं बन सकता, जब तक वह अपने सारे इरादे, हसरतें और अपने से सम्बन्ध रखनेवाले सारे विचार छोड़ न दे। पर, हाँ, यह भी सच है कि एक अच्छा मालिक कभी भी अपने गुलाम से वह काम नहीं लेता, जो उसके बूते के बाहर होता है। तब किज़हया के आचार्य ने तुमसे वह चीज़ क्यों माँगी, जिसके लिए तुम्हें अपनी ज़िन्दगी इस अंधड़ और तूफ़ान के हवाले करनी पड़ी, समझ में नहीं आता।

युवक उत्तर में बोला—आचार्य की दृष्टि में केवल वही मनुष्य भिक्षु हो सकता है, जिसने सोचने-विचारने की अपनी सारी शक्ति खो दी हो और जो आँख और कान बन्द कर यंत्रवत् आज्ञा का पालन करता हो। क्योंकि मैं एक अंधा और बहरा यंत्र न बन सका और सदैव सोचने-समझनेवाला एक इन्सान रहा, इसलिए मुझे विहार से निकाल दिया गया।

रहेल और मरियम उसे इस प्रकार देखने लगीं जैसे उसके चेहरे पर एकाएक कोई गुप्त रहस्य प्रकट हो गया हो, जिसे वह शीघ्र ही छुपा लेगा।

कुछ क्षणों की चुप्पी के वाद रहेल ने धीमी आवाज़ में कहा—क्या वह आदमी जो देखता और सुनता है, आँखों को अंधा और कानों को बहरा वना देनेवाली इस तूफ़ानी रात में कभी बाहर निकलेगा ?

युवक कराहा। उसने अपना सर सीने पर झुका लिया और गहरी आवाज़ में वोला-—मैंने कहा नहीं कि मैं विहार से जबरदस्ती निकाला गया ?

—क्यों ?—रहेल के स्वर में आश्चर्य अब भी था।

मरियम ने भी इसी शब्द को दुहराया, किन्तु कोमल स्वर में।

युवक अपने कथन पर पश्चाताप से भर उठा। उसे भय हुआ कि कहीं इन औरतों की दया घृणा में न बदल जाय और वे उससे दुर्व्यवहार न करने लगें। पर जब उसने सर उठाकर देखा, तो पाया कि उनके नेत्रों में करुणा पूर्ववत् निवास कर रही है और मात्र जिज्ञासावश ही उन्होंने पूछा है। वह रुँधी हुई आवाज़ में कहने लगा—क्योंकि मैं अपने हाथों अपनी कब्र खोद सकता था, क्योंकि मेरे अन्तर ने छल और फरेब से मित्रता नहीं की थी, क्योंकि मेरी आत्मा ने गरीबों और असहायों की उपेक्षा कर सुखपूर्वक रहने से इन्कार कर दिया था और उस आमोद-प्रमोद को ठुकरा दिया था, जो अज्ञान में डूबे हुए ग्रामीणों की आवश्यकताओं से खरीदा गया था। मैं विहार से इसलिए निकाला गया, क्योंकि मेरे शरीर को उन विशाल कमरों में आराम नहीं मिला, जो उन इन्सानों द्वारा बनाये गये थे, जो दूहों में रहते हैं, क्योंकि मेरी अँतड़ियों ने उन रोटियों को पचाने से इन्कार कर दिया था, जो विधवाओं और अनाथों के आँसुओं से भीगी हुई थीं, क्योंकि मेरी ज़बान उन प्रार्थनाओं को गाने के लिए तैयार न थी, जो ईश्वर के नाम पर भोले-भाले निष्ठावान् भक्तों को वेची जाती हैं। मैं वहाँ से एक कोढ़ी की भाँति इसलिए खदेड़ा गया, क्योंकि मैंने वहाँ के भिक्षुओं और पादरियों को धर्मग्रन्थों से पढ़कर वे स्थल सुनाये थे, जिन्हें आधारशिला मानकर वे भिक्षु और पादरी बनते हैं।

यह कहकर वह फिर खामोश हो गया। रहेल और मरियम उसके

कथन पर चकित थीं। वे उसके चेहरे की उदास खूबसूरती पीती हुई, परस्पर दृष्टिपात कर, मौन भाषा में कहने लगीं कि यह कैसी अजीब बातें कह रहा है ! रहेल में अब और भी अधिक जानने की इच्छा बलवती हो उठी। व्यथित दृष्टि से देखते हुए उसने पूछा—तुम्हारे माँ-बाप कहाँ हैं ? क्या वे ज़िन्दा हैं ?

—नहीं,—टूटती-सी आवाज़ में युवक ने उत्तर दिया—न मेरे माँ है, न बाप और न कोई घर ही।

रहेल ने यह सुनकर एक गहरी साँस भरी और मरियम ने अपना चेहरा दीवार की ओर घुमा लिया। उसकी आँखों में गर्म-गर्म आँसू छल-छला आये थे, जिन्हें वह किसी को दिखाना न चाहती थी। युवक उन दोनों औरतों को चुपचाप देखता रहा, उस दृष्टि से, जिस दृष्टि से कोई गुलाम स्वतंत्रता देनेवाले की ओर देखता है। उसकी आत्मा में उनकी स्नेहमयी दया से ताज़गी आ गयी थी, यों, जैसे चट्टानों के बीच खिला कोई पुष्प सुबह की ओस की बूंदों से ताजगी पाता है।

कुछ देर बाद युवक ने अपना सर ऊपर उठाया और धीमे स्वर में फिर कहने लगा—मैं जब सात साल का भी न था, मेरे माँ और बाप मर गये थे। मेरे गाँव के पादरी ने मुझे अनाथ जानकर क़िज़हया के विहार में भरती करा दिया। वहाँ भिक्षु मुझसे प्रसन्न रहने लगे और उन्होंने मुझे एक चरवाहा बना दिया। जब मैं पन्द्रह वर्ष का हुआ, तो उन्होंने मुझे यह भद्दे काले वस्त्र पहना दिये और वेदिका के सामने खड़ा-कर मुझसे ईश्वर और उसके सन्तों के नाम यह शपथ लेते हुए प्रतिज्ञा करने को कहा कि अब से मैं निर्धनता, आज्ञाकारिता और ब्रह्मचर्य को जीवन में स्वीकार करता हूँ। मैंने बिना इन शब्दों के अर्थ समझे हुए या बिना निर्धनता, आज्ञाकारिता और ब्रह्मचर्य के ज्ञान से अभिज्ञ होते हुए या बिना उस संकीर्ण रास्ते को देखे हुए, जिसपर उन्होंने मुझे खड़ा कर दिया था, उन शब्दों को उनके इच्छानुसार दुहरा दिया। यों तो मेरा नाम ख़लील था, पर उस दिन से भिक्षु मुझे मुबारक भाई कहने लगे,

यद्यपि कभी भी उन्होंने मेरे साथ भाई-जैसा व्यवहार न किया। वे जबकि भोजन में स्वादिष्ट चीजें और चटपटा गोश्त उड़ाते थे, मुझे सूखी रोटियाँ और सेम के बीज देते थे। वे स्वयं तो बढ़िया, कीमती शराब पीते थे, पर मुझे आँसू मिला पानी देते थे। ऐसे ही वे स्वयं तो गुलगुले, मखमली बिस्तरों पर सोते थे, पर मेरे लिए एक घुप अँधेरी कोठरी में सूअरों के साथ पत्थर की ठंडी तिपाई पर सोने की व्यवस्था करते थे। मैं जब-तब सोचा करता था कि जब मैं भी उन-जैसा एक भिक्षु हूँ, तो मुझे भी यह सारी सुख-सुविधाएँ मिलनी चाहिए। मेरी अँतड़ियाँ शराब के बिना क्यों कुलबुलायें और मेरा हृदय स्वादिष्ट भोजन की सुगंध से क्यों पागल बने ? मेरी अन्तरात्मा को आचार्य की आवाज़ सुनकर काँपना भी नहीं चाहिए। पर मेरा यह सोचना व्यर्थ था, एक सपने-जैसा। मैं सदैव वहाँ एक चरवाहा ही रहा, और खाली समय में या तो पीठ पर भारी पत्थरों का बोझ ढोता था या अपने बाजुओं से धरती खोदता था। यह सब मैं सिर्फ रोटी के चन्द टुकड़ों और एक कोठरी की ख़ातिर करता था। मुझे इससे पहले ज्ञात न था कि विहार के बाहर भी मुझे कहीं आश्रय मिल सकता है। भिक्षु सदैव मुझे यही समझाते रहे कि मैं उन्हीं के तौर-तरीकों पर आस्था रखूं। उन्होंने मेरी आत्मा को आज्ञाकारिता और निराशा से बराबर विषाक्त किया, यहाँ तक कि मैं इस संसार को दुख-सागर समझने लगा और विहार को उसे पार करने के लिए नौका।

खलील अब उठकर बिछावन पर बैठ गया। उसकी चिन्ताग्रस्त आकृति में कुछ और तनाव आ गया और उसकी दृष्टि स्थिर हो गयी, यों, जैसे उस झोपड़े में उसके सामने सौन्दर्य साकार हो गया है और वह उसे निष्पलक देख रहा है। रहेल और मरियम उसे इस अवस्था में चुपचाप घूरती रहीं। पर कुछ ही देर बाद खलील अपनी पूर्वावस्था में आ गया और उसने अपनी कहानी पुनः प्रारम्भ कर दी—ईश्वर, जिसकी इच्छा से मेरे ऊपर से माँ-बाप का साया उठ गया था और जिसने मुझे एक अनाथ बनाकर विहार में भेजा था, उसकी यह इच्छा कभी न थी

कि मैं बुरे रास्तों पर आँख बन्दकर चलते हुए अपने दिन काटूँ या आजन्म एक आत्मसम्मानहीन गुलाम बना रहूँ । इन विचारों और भावनाओं ने मेरी आँखें और कान खोल दिये और मैंने अपनी अन्तरात्मा को एक भव्य आलोक से अलोकित पाया और सत्य की वाणी का अमृत पान किया ।

रहेल ने आश्चर्य से टोका—क्या इन्सान को सूरज के अलावा भी किसी से रोशनी मिलती है और क्या यह इन्सान के बस की बात है कि वह सत्य को जान सके ?

खलील ने उत्तर दिया—सच्ची रोशनी वह होती है, जो इन्सान के अन्दर से फूटती है । वह आत्मा के सारे रहस्यों को आत्मा पर प्रकट कर देती है और ज़िन्दगी को एक नया उल्लास देती है और परमात्मा के गीत गाती है । सत्य सितारे होते हैं, जिन्हें तुम सिर्फ रात के अँधेरे में ही देख सकते हो । सत्य सृष्टि की उन तमाम खूबसूरत चीजों की तरह है, जो अपनी खूबसूरती सिर्फ़ उन्हीं पर प्रकट करता है, जो बदसूरती के भार को सह चुके हैं । सत्य एक गुप्त भावना है, जो हमें जीवन में आनन्दपूर्वक रहने की शिक्षा देता है और वैसी ही कामना प्रत्येक प्राणी के लिए करता है ।

रहेल बोली—हाँ, बहुत से इन्सान ऐसे भी होते हैं, जो अपने हृदय में उठनेवाले इन विचारों के अनुसार जीते हैं मगर बहुत-से इन्सान ऐसे भी होते हैं, जो केवल उन्हीं नियमों को मानते और उनपर चलते हैं जो ईश्वर ने इन्सान के लिए बनाये हैं । पर यह लोग अपनी ज़िन्दगी में कभी खुशी नहीं ला पाते और मौत तक कष्ट में बने रहते हैं ।

खलील ने उत्तर दिया—वे शिक्षाएँ और नियम बेकार हैं जो इन्सान की ज़िन्दगी को दुख में बदल देते हैं । वे आस्थाएँ झूठी हैं, जो उसे सिर्फ पीड़ा और निराशा के रास्तों पर ले जाती हैं । इन्सान का यह धर्म है कि वह जब तक जिये, आनन्दपूर्वक जिये और सुख के मार्ग को जाने, और जहाँ-कहीं भी रहे, दूसरों को यही शिक्षा दे । जो स्वर्ग के दर्शन इस दुनिया

में नहीं करता, वह यहाँ के बाद कहीं और नहीं करेगा। हम इस दुनिया में बहिष्कृतों के रूप में नहीं आये हैं। हम आये हैं निर्बोध शिशुओं के रूप में, जीवन के सौन्दर्य और उसके रहस्यों से अनन्त और सार्वभौमिक आत्मा का आराधन सीखने के लिए और अन्तर के निगूढ़ रहस्यों को खोलने का ज्ञानार्जन के लिए। यही वह सत्य था, जिसका ज्ञान मुझे ईशू नासरी की शिक्षाओं से हुआ था, और यही वह आलोक था, जो मेरे अन्तर में फूटा था और जिसके प्रकाश में मैंने विहार और उसकी समस्त वस्तुओं को उस अंध गर्त्त के रूप में पाया, जिसकी गहराई से डरावनी आकृतियाँ और छायाएँ निकलकर मुझे निगलना चाहती थीं। ये गुप्त रहस्य जंगली स्थानों के सौन्दर्य ने मुझपर प्रकट किये थे, जब मैं भूख से बेकल रोता हुआ पेड़ की छाया में बैठता था। जिस दिन मेरे अन्तर ने इस स्वर्गिक मद्य का पान किया, उस दिन मैं निडर हो गया और विहार के उद्यान में बैठे उन भिक्षुओं के सामने जाकर यों खड़ा हो गया, मानो वे चारा चर रहीं निरी गौएँ हों। मैंने उनपर अपने विचार प्रकट करने और उनके पाप और उनकी बुराइयाँ उन्हें बताने के लिए धर्मग्रंथों में से कुछ स्थल पढ़कर सुनाने का निश्चय किया। मैंने उन्हें समझाया कि हम अपने दिन क्यों यहाँ एकान्त में गरीबों के दिये हुए दान, उनसे छीनी हुई धरती और उनके पसीने और आँसुओं से गुंधे हुए आटे की बनी रोटियों पर मौज उड़ाते हुए काटें? हम यहाँ क्यों उन लोगों से दूर; जिन्हें ज्ञान की आवश्यकता है, बिना कोई आध्यात्मिक या शारीरिक शक्ति दिये हुए आलस्य और काहिली में पड़े रहें? यीशू नासरी ने हमको भेड़ियों के मध्य भेड़ बनाकर भेजा था। हम किन शिक्षाओं से भेड़ों के मध्य भेड़िए बन गये? हम इन्सानों से अलग क्यों रहें, जब कि ईश्वर ने हमें भी इन्सान बनाया है? हम अगर जिन्दगी के जुलूस में बढ़नेवालों से अधिक अनुभवी और गुणी हैं, तो हमें आगे आकर उन्हें सही मार्ग दिखाना चाहिए। हम ग़रीबी में रहने का तो दम भरते हैं, पर शहज़ादों की तरह रहते हैं। हम आज्ञाकारिता की तो प्रतिज्ञा करते हैं, पर इंजील

का विरोध करते हैं। हम पवित्रता की तो कसम खाते हैं, पर अपने हृदय को पाप से भरते हैं। हम अपने शरीर को कष्ट देने की तो सीख देते हैं, पर सिवा अपनी आत्मा को दूषित करने के और कुछ नहीं करते। हम घोषणा तो यह करते हैं कि हम सारी भौतिक चीजों से परे हैं, पर इन्सानों में सबसे ज्यादा लोभी हैं। हम अपने को प्रदर्शित तो संन्यासी और ब्रह्मचारी के रूप में करते हैं, पर हमारा ध्येय पशुओं की तरह केवल अच्छे-से-अच्छे चारागाह में विचरना होता है। आओ, अब हम-सब विहार के ये विशाल कमरे ज़रूरतमंद ग्रामीणों के लिए छोड़ दें और उन्हें वह सब धन लौटा दें, जो उनसे छीना था। हम पक्षियों की तरह इस पृथ्वी पर फैल चलें और उन असहाय, दुर्बल व्यक्तियों की सहायता करें, जो सदैव से हमारी शक्ति के स्रोत रहे हैं। आओ, हम अपने देश को सब प्रकार से सम्पन्न बनायें, जिसकी उदारता पर हम जीवित हैं। हम इस निराश राष्ट्र को सूर्य की रश्मियों में मुस्कराना और स्वर्ग की देन और जीवन की स्वतंत्रता और श्रेष्ठता में आनन्द से रहना सिखायें। दूसरों के लिए परिश्रम करना आराम और आलस्य में पड़े रहने से कहीं अधिक अच्छा है। पड़ोसी के हृदय में जगी सहानुभूति विहार के किसी कोने में छुपे गुण से कहीं अधिक श्रेष्ठ है और दुर्बलों, अपराधियों और वेश्याओं के हृदय में सान्त्वना देनेवाले शब्द देवालयों की प्रार्थनाओं से सब प्रकार उत्तम हैं।

खलील ने कुछ क्षण रुककर दम लिया और रहेल और मरियम की ओर देखते हुए फिर अपनी कहानी शुरू कर दी—जब मैं इस रूप में भिक्षुओं के सामने यह सब कह रहा था, उनके चेहरों पर विस्मय और क्रोध था। उन्हें यह गँवारा न था कि मुझ-जैसा एक नौजवान उनको सम्बोधित कर निर्भय भाव से ऐसे शब्द कहे। मेरे ख़ामोश होते ही एक भिक्षु मेरी ओर बढ़ा और दाँत पीसता हुआ बोला, बदमाश! तेरी यह हिम्मत कि हम लोगों के सामने इस तरह बोले! दूसरे ने घृणा की हँसी हँसते हुए कहा, क्या तूने यह ज्ञान उन सूअरों और पेड़ों से सीखा है,

जिनके साथ तू अब तक रहा है ? तीसरे ने करीब आकर मुझे धमकाया, देख, इसका मज़ा तू अभी चखेगा ! और इसके बाद वे-सब एक साथ उठकर मेरे पास से यों चले गये, जैसे उन्हें अचानक ज्ञात हो गया हो कि मैं कोढ़ी हूँ और मेरे पास बैठना उचित नहीं। आचार्य के पास जाकर उन्होंने मेरी शिकायत की।

—सन्ध्या को मेरी पेशी हुई। आचार्य ने मुस्कराते भिक्षुओं के सामने मेरा खूब मखौल उड़ाया और फिर मुझे पीटे जाने का हुक्म दिया। जब मैं रस्सी के कोड़ों से पीटा जा चुका, तब मुझे एक महीने तक कैद में रहने की सज़ा दी गयी। इस पर भिक्षु खूब प्रसन्न हुए और उन्होंने मुझे घसीटकर एक सीलनदार अँधेरी कोठरी में डाल दिया। वहाँ एक महीने तक मैंने न कोई रोशनी देखी, न किसी जीवित प्राणी की उपस्थिति का अनुभव किया, सिवा रेंगते कीड़े-मकोड़ों के। मुझे किसी भी वस्तु का स्पर्श न हुआ, सिवा पैरों के नीचे की धरती का। मैंने न रात का खत्म होना जाना, न दिन का शुरू होना। मैंने कोई आवाज़ नहीं सुनी, सिवा उस व्यक्ति के कदमों की, जो मेरे आगे चन्द सूखी रोटियाँ और एक प्याले में गंदा पानी रख जाता था। जब मैं कैद से छूटा और बाहर आया, तो भिक्षुओं ने मेरे सूखे शरीर और पीले चेहरे को देखकर सोचा कि मेरे अन्तर की आकांक्षाएँ मर गयी हैं और भूख, प्यास और उत्पीड़न ने मेरी उन भावनाओं को कुचल दिया है, जो ईश्वर ने मेरे हृदय में जगायी थीं। समय बीतता गया और मैं एकांत में पड़ा-पड़ा सोचता रहा कि किन उपायों से साथी भिक्षु प्रकाश के दर्शन कर सकते हैं और ज़िन्दगी का राग सुन सकते हैं। पर मेरा यह सोचना निरर्थक था, क्योंकि युगों से बुनता चला आ रहा जो मोटा आवरण उनकी आँखों के आगे पड़ा था, वह चंद दिनों में हटाया नहीं जा सकता था, न अज्ञान की उस मिट्टी को ही केवल अँगुलियों के स्पर्श से भेदा जा सकता था, जिसने उनके कान बंद कर रखे थे।

मरियम, जो अभी तक उसासें भरती हुई खामोश थी, अब माँ की

ओर देखने लगी, मानो बोलने की आज्ञा माँगती हो। फिर माँ की ओर से दृष्टि घुमाकर उसने भीगी आँखों से खलील की ओर देखा और बोली —क्या आपने भिक्षुओं से दुबारा यही सब फिर कहा था, जिससे उन्होंने आपको इस तूफ़ानी, गरजती रात में बाहर निकाल दिया ? वे तो हम लोगों को अपने दुश्मनों पर भी दया करने की सीख देते हैं !

युवक उत्तर में बोला—सन्ध्या को जब तूफ़ान तेज़ हो रहा था और प्रकृति-तत्व संघर्ष कर रहे थे, मैं भिक्षुओं से अलग बैठा था। वे उस समय अलाव के चारों ओर बैठे फूहड़ मजाक कर रहे थे और गंदे किस्से-कहानियाँ सुन-सुना रहे थे। मेरे हाथ में इंजील थी और मैं उन शब्दों पर मनन कर रहा था, जिनसे अन्तरात्मा सुख पाती है। मैं प्रकृति और उसके तत्वों के क्रोध और उसकी भयंकरता को भूल चुका था। जब भिक्षुओं ने मुझे एक ओर अलग बैठे हुए देखा, तो इसे उन्होंने मुझे चिढ़ाने और मेरी मजाक बनाने का एक सुनहरा अवसर समझा। कुछ मेरे क़रीब हँसते, चिढ़ाते और पलक झपकाकर इशारेबाजियाँ करते आ गये। मैंने उनकी उपेक्षा की और पुस्तक बंद कर खिड़की के बाहर देखने लगा। वे मेरे इस व्यवहार से क्रोधित हो गये और मेरी ओर शत्रुता से घूरने लगे। मैं जब इस पर भी खामोश रहा, वे और चिढ़ गये। एक ने पूछा, ओ महान सुधारक ! आप क्या पढ़ रहे थे ? मैंने कहनेवाले की ओर बिना देखे इंजील का एक पृष्ठ खोला और ऊँची आवाज़ में यह स्थल पढ़ दिया, ···और उसने बपतिस्मा लेने आये हुए जन-समूह से पूछा, ओ साँप के बच्चो ! तुमको आनेवाले प्रकोप से सजग होने की चेतावनी किसने दी है ? आज के प्रायश्चित को अगर तुम सफल बनाना चाहते हो, तो अपने मन में यह सोचकर गर्व न करो कि तुम महान अब्राहम के वंशज हो। मैं तुमसे कहता हूँ कि ईश्वर में यह शक्ति है कि वह इन नाचीज़ पत्थरों को भी अब्राहम में बदल सकता है। वृक्ष की जड़ पर अब कुल्हाड़ी उठ चुकी है। वह वृक्ष, जो अच्छे फल नहीं देंगे, काटकर आग में जलाये जायँगे। जनसमूह ने इस पर उससे पूछा कि अब वे क्या करें ? उसने उत्तर दिया

कि जिनके पास दो वस्त्र हैं, वे एक उसे दे दें जिनके पास नहीं है, और ऐसे ही जरूरतमंदों को अपना भोजन बाँट दें।···जब मैंने बपतिस्मा देने वाले जान के यह शब्द पढ़े, भिक्षु कुछ क्षणों के लिए खामोशी में डूब गये, मानो किसी अदृश्य हाथ ने उनकी आत्मा को छू लिया हो। पर शीघ्र ही वे हँसने और गुर्राने लगे और एक चिढ़ाता हुआ बोला, हम बहुत बार इन शब्दों को सुन चुके हैं और अब हमें एक चरवाहे के मुँह से इन्हें सुनने की आवश्यकता नहीं है। मैंने उत्तर दिया, अगर सच में तुमने इन शब्दों को सुना और समझा होता, तो आज तुम बर्फ से ढँके हुए गाँवों के ग्रामीणों की उपज पर मौज न उड़ाते होते और उनके बाग़ के अंगूरों की शराब न पीते होते और उनके पशुओं का गोश्त न खाते होते, जबकि वे ठंड से काँप रहे हैं और भूख से चिल्ला रहे हैं। अभी मैं ये शब्द मुश्किल से मुँह से निकाल पाया था कि एक भिक्षु ने मेरे मुँह पर घूंसा जड़ दिया कि मैं यह-सब क्या वाहियात बक रहा हूँ! दूसरे ने मेरे ठोकर मारी और तीसरे ने मेरे हाथ से पुस्तक छीन ली। एक आचार्य के पास भी दौड़ गया, जो वहाँ शीघ्र ही आ गया। जब उसने मेरी कही हुई बातें सुनीं, तो वह तनकर खड़ा हो गया। उसकी भौंहों पर बल पड़ गये और वह क्रोध से काँपता हुआ गरजा-—इस विद्रोही पापी को पकड़कर विहार से बाहर निकाल दो! क्रुद्ध प्रकृति इसे आज्ञा का पालन करना अच्छी तरह सिखा देगी! इसे अँधेरे और बर्फ में ले जाकर छोड़ना, जहाँ प्रकृति ईश्वर की इच्छानुसार इसे भरपूर सज़ा दे सके। फिर अपने हाथों को धो डालना, क्योंकि इसके वस्त्रों में नास्तिकता का विष है। अगर यह वापस आकर पश्चाताप प्रकट करे और क्षमा माँगता हुआ गिड़गिड़ाये, तब भी द्वार न खोलना। पिंजड़े में बन्द दरिन्दा भला क्या एक फाख्ता बन सकता है, या अंगूर के बाग में जमी झाड़ी क्या फल दे सकती है?···भिक्षुओं ने यह सुनते ही मुझे पकड़ लिया और विहार के बाहर खदेड़ दिया। एक को किवाड़ बन्द करते समय मैंने घृणा-भरे स्वर में यह कहते सुना—कल तक तू गायों और सूअरों का बादशाह था, आज हमने तुझे गद्दी से उतार

दिया है ! ओ सुधारक ! तूने अपने पैरों में खुद कुल्हाड़ी मारी है ! अब तू खूँखार भेड़ियों और गोश्तखोर पक्षियों पर बादशाहत कर और उन्हें अपनी-अपनी माँदों और घोंसलों में रहना सिखा !

यह कहते-कहते वह रुक गया और गहरी-गहरी साँस लेने लगा। फिर क्षण-भर के लिए दृष्टि आग की ओर घुमा ली और काँपती लौ देखने लगा। जब दुबारा वह बोला, उसकी आवाज़ में किसी घायल-जैसा दर्द घुला था—बस, इसीलिए मैं विहार से निकाल दिया गया, इसीलिए भिक्षुओं ने मुझे मौत के मुँह में फेंक दिया। मैं उस रास्ते पर चल पड़ा, जो कोहरे से छुपा था। तेज़ हवा मेरे कपड़े फाड़ रही थी और बर्फ मेरे ऊपर गिरकर जम रही थी। शीघ्र ही मेरी शक्ति ने जवाब दे दिया और मैं गिरकर सहायता के लिए पुकारने लगा। मेरी यह पुकार उस व्यक्ति की पुकार-जैसी थी, जो यह जानता है कि उसकी आवाज सिवा खूँखार मौत और गहरी घाटियों के और किसी को सुनायी न देगी और फिर भी पुकारता है। लेकिन इस हवा और इस बर्फ और इस अँधेरे और इन बादलों और इस आकाश और इन सितारों से दूर जो एक शक्ति है, जो सर्वज्ञ और सर्व-मंगला है, उसने मेरी यह पुकार सुन ली थी। उसकी यह इच्छा न थी कि ज़िन्दगी के शेष रहस्यों को जाने बिना मैं मर जाऊँ। उसने इसीलिए तुम दोनों को मुझे काल के मुँह से खींच ले आने को भेजा !

दोनों औरतें उसे आश्चर्य और स्नेह से पूर्ववत् देखती रहीं। उसके हृदय के गुप्त रहस्य उनके अन्तर में प्रकट हो गये थे और उसकी इच्छा, आकांक्षा उनकी इच्छा, आकांक्षा बन गयी थी। रहेल ने अनजाने अपना हाथ बढ़ाकर युवक का हाथ पकड़ लिया। उसकी आँखें डबडबा आयीं। धीमे स्वर में बोली—जिसे ईश्वर ने सत्य की रक्षा करने के लिए भेजा है, उसे कोई भी शक्ति कुचल नहीं सकती, भले ही वह तेज आँधी हो या तूफ़ान या हिमपात।

मरियम फुसफुसायी—तूफ़ान और हिमपात फूलों को तो नष्ट कर सकते हैं, पर उनके बीजों को नहीं !

खलील का चेहरा सहानुभूति के ये शब्द सुनकर सुबह की पहली किरणों से चमकनेवाले क्षितिज की भाँति चमक उठा। वह बोला—यदि तुम मुझे भिक्षुओं की भाँति एक विद्रोही और नास्तिक नहीं समझती हो, तब जो कष्ट मैंने विहार में सहे, वे ज्ञान-प्राप्ति के पूर्व आनेवाली विपत्तियों के सिवा कुछ नहीं है। मुझे मिटाने के लिए रौद्र रूप धारण करनेवाली यह रात स्वतन्त्रता और समानाधिकार मिलने से पूर्व होनेवाले विद्रोह जैसी ही है। नारी के संवेदनशील हृदय से पुरुष जाति का आनन्द फूटता है और उसकी आत्मा के पवित्र भावों से पुरुष जाति की आत्मा के भाव जन्म लेते हैं।

खलील ने यह कहते हुए अपना सर तकिये पर रख लिया और खामोश हो गया। दोनों औरतें भी खामोश बनी रहीं और उन्होंने आगे कुछ न पूछा। उसकी आँखों में घिरती नींद की खुमारी को उन्होंने देख लिया, जो खतरे से भरे हुए सफर के बाद मिले आराम और गरमाहट से पैदा हुई थी। कुछ ही देर में खलील की पलकें झप गयीं और वह माँ की सुरक्षित गोद में सोनेवाले बालक की नींद सो गया। रहेल और मरियम धीरे से उठीं और अपने-अपने बिस्तरों पर चली गयीं। पर वहाँ से भी उनकी दृष्टि उसके चेहरे पर गड़ी रही। उसके कमज़ोर चेहरे पर एक अपूर्व तेज था, जो उनकी आत्माओं को प्रभावित कर अपने निकट खींच रहा था। रहेल धीरे से यों फुसफुसायी, मानो अपने से कह रही हो —इसकी बन्द आँखों में एक अद्‌भुत शक्ति है, जो खामोश रहते हुए भी कुछ कह रही है और इसके अन्तर के ज्ञान को प्रकट कर रही है।

मरियम ने साथ दिया—माँ ! इसके हाथ बिल्कुल वैसे ही हैं, जैसे चर्च में टंगी तस्वीर में यीशू मसीह के हैं।

माँ वैसे ही फुसफुसायी—इसके उदास चेहरे पर एक नारी की सुकुमारता और एक पुरुष का पौरुष झलकता है।

शीघ्र ही वे दोनों भी निद्रा के डैनों पर बैठकर सपनों की दुनिया में विचरने लगीं। अलाव की आग राख होती हुई ठंडी हो गयी। चिराग़ का तेल चुक गया और रोशनी मद्धिम होकर बुझ गयी। बाहर गरजता तूफ़ान बिना अपना गर्जन कम किये पूर्ववत् गरजता रहा। काला आकाश बर्फ़ गिराता रहा और तेज़ हवा अपने थपेड़ों से उसे चारों ओर बिखेरती रही।

दो सप्ताह बीत गये। बादलों से घिरा आकाश यद्यपि साफ़ हो गया था, पर घाटियाँ कोहरे की चादर से वैसी ही ढँकी थीं और पहाड़ियों पर जमी बर्फ़ अभी पिघली न थी। तीन बार ख़लील ने सागर-तट पर निकल जाने का निश्चय किया, पर तीनों ही बार रहेल ने उसे सस्नेह रोक लिया और समझाया—अब दुबारा क्यों क्रुद्ध प्रकृति की दया पर अपनी ज़िन्दगी छोड़ोगे? हमारे साथ यहाँ रहने में क्या हिचक है? जो खाना हम दो खाते हैं, उसमें तीसरा आसानी से शरीक हो सकता है। इस अलाव में आग क्या तुम्हारे जाने के बाद नहीं जलेगी, जैसे तुम्हारे आने से पहले जलती थी? मेरे अज़ीज़! यद्यपि हम ग़रीब हैं, पर इस आसमान के नीचे हम सबकी तरह ही रहते हैं, क्योंकि ईश्वर की दया से हमें खाने को कुछ-न-कुछ रोज़ मिल जाता है।

मरियम ने भी उसे रोका था, पर अपनी तरल दृष्टि और सुकुमार उद्गारों से। जब से वह मौत और ज़िन्दगी से जूझता हुआ यहाँ आया था, तब से वह उसमें किसी दैवी शक्ति का अनुभव कर रही थी, जिसने उसके (मरियम के) अन्तर में नव-स्फूर्ति और आलोक भर दिया था और कुछ ऐसी मधुरिमा बिखेर दी थी, जिसका स्वाद उसने आज तक न चखा था। जीवन में पहली बार उसे उस अपूर्व चैतन्य का ज्ञान हुआ, जो किसी कुमारी के पवित्र हृदय को ओस-कण पीने और मधुर सुगंध बिखेरनेवाले सफ़ेद गुलाब में बदल देता है। प्राणियों में उस भावना से पवित्र और

मधुर शायद ही कोई अन्य भावना हो, जो एक कुमारी के सूने हृदय को मधुर गीतों से गुंजरित कर उसके दिन कवि की कल्पना में और रात देवदूत के स्वप्न में बदल देती है। प्रकृति के रहस्यों में शायद ही कोई रहस्य उससे अधिक सुन्दर और सर्वोपरि हो, जो एक कुमारी के अन्तर की खामोशी को सदैव गतिशील रहनेवाली हलचल का रूप दे देती है और जिससे वह बीते हुए दिनों की स्मृतियाँ भूलकर आनेवाले दिनों की याद में मधुर उसासें भरने लगती है।

लेबनान की औरतें अपने विचारों की सादगी और अपने प्रेम की तीव्रता में अन्य देशों की औरतों से अलग हैं। वे अपने सादे भरण-पोषण और साधारण शिक्षा के कारण, जो उनके मस्तिष्क के विकास और उनकी उन्नति के मार्ग अवरुद्ध कर देती है, अपने अन्तर और हृदय के रहस्यों को जानने के लिए सदैव सचेष्ट रहती हैं। लेबनान की कुमारी का हृदय उस सोते-जैसा होता है, जो अपना पानी किसी सरिता या सागर तक जाने का मार्ग न पाकर किसी निचली भूमि में संग्रहीत कर एक शान्त झील का रूप ले लेता है और जिसकी सतह पर चाँद और सितारों की किरणें झिलमिलाती रहती हैं।

मरियम की भावना-रूपी इन तरंगों को खलील ने अपने हृदय के कगारों से टकराते हुए पाया और यह भी अनुभव किया कि उसके अन्तर में उठ रही पवित्र अग्नि-शिखा मरियम के हृदय का भी स्पर्श कर रही है। उसका हृदय पहली बार उल्लास से भर गया, उस उल्लास से, जो एक खोया हुआ बालक एकाएक अपनी माँ को पाकर पाता है। पर वह अपने हृदय को बराबर इस बेचैनी और उत्कंठा के लिए लताड़ता भी रहा, क्योंकि वह जानता था कि जब वह इस गाँव को छोड़ देगा, यह आन्तरिक लगाव कोहरे की तरह घुल जायगा। वह अपने से कहता, यह कौन-सी रहस्यमयी शक्तियाँ हैं, जो अजाने ही हमसे खिलवाड़ करती हैं? यह कौन-से नियम हैं, जो अभी तो हमें ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर खड़ा कर देते हैं, फिर हमें सूरज के सामने, जहाँ हम खुशी से नाचते हैं, और फिर

हमें किसी पर्वत-शिखर पर, जहाँ हम गर्व और उल्लास से भर उठते हैं, और फिर कुछ ही देर बाद हमें गहरी घाटियों की ओर ढकेल देते हैं, जहाँ हम भय और पीड़ा से चीखनें लगते हैं ? यह जीवन कैसा है, जो आज तो हमारा मित्र की भाँति आलिंगन करता है, पर कल ही शत्रु की भाँति अलग हो जाता है ? क्या कल तक मैं विहार के भिक्षुओं-द्वारा घृणा से नहीं देखा और दुत्कारा गया ? क्या मैंने उस सत्य के लिए, जिसे ईश्वर ने मेरे हृदय में जगाया है, दुख और कष्ट नहीं सहा ? क्या मैंने भिक्षुओं को यह नहीं बताया कि ईश्वर की इच्छा ही मनुष्य के हृदय का आनन्द है ? तब मैं इस कुमारी के नेत्रों में झिलमिलानेवाले प्रकाश से क्यों भय खाकर अपनी आँखें बन्द करना चाहता हूँ ? मैं निष्कासित हूँ और यह निर्धन । पर मनुष्य को जीवित रहने के लिए क्या केवल रोटियों की ही आवश्यकता होती है ? क्या जीवन एक ऋण और पूर्णता नहीं है ? क्या हम अभाव और बहुलता के मध्य इस भाँति नहीं खड़े हैं, जिस भाँति वृक्ष ग्रीष्म और शिशिर ऋतु के मध्य खड़े रहते हैं ? रहेल यह जानकर क्या सोचेगी कि एक निष्कासित युवक और उसकी पुत्री के हृदय मौनता में ही परस्पर परिचित होकर ऊर्ध्व प्रकाश-मंडल की ओर बढ़ रहे हैं; और जिस युवक को उसने मौत के जबड़े से खींचकर बचाया था, वही अब उसकी पुत्री को अपनी पत्नी के रूप में ग्रहण करने की इच्छा कर रहा है ? जब इन भोले-भाले ग्रामीणों को यह खबर होगी कि विहार में पोषित एक युवक वहाँ से निकाल दिया गया है और अब वह उनके गाँव में एक सीधी-सादी औरत के साथ रह रहा है, वे क्या नहीं कहेंगे ? वह मेरे इस कथन पर विश्वास कर लेंगे कि विहार छोड़कर उनके मध्य रहने का मेरा निश्चय उसी पक्षी-जैसा है, जो पिंजड़े के अंधकार से छुटकारा पाकर प्रकाश और स्वतंत्रता चाहता है ? क्या शेख अब्बास, जो इन खेतिहरों के मध्य एक शहज़ादे के रूप में रह रहा है, मेरी यह सफ़ाई मानेगा ? क्या गाँव का पादरी मेरे विहार से निकाले जाने का कारण सुनकर खामोश बैठेगा ?

खलील अपने से सम्भाषण करता, आग की जिह्वाओं को देखता, जो उसके विचारों के अनुरूप थीं, अलाव के पास बैठा रहता। मरियम उसे कनखियों से देखती, उसकी आकृति में उसके सपनों को पढ़ती, उसके हर साँस पर उठने बैठनेवाले सीने में उसके विचारों की गूँज सुनती और उसके आन्तरिक रहस्यों को स्वयं में अनुभव करती।

एक दिन सन्ध्या के झुटपुटे में खलील खिड़की के समीप खड़ा बाहर घाटियों की ओर देख रहा था। बाहर वृक्ष और चट्टानें बर्फ से अभी तक ऐसी ढँकी थीं, मानो वे कफ़न ओढ़े मुर्दे हों। मरियम उसके निकट आकर खड़ी हो गयी और आकाश की ओर देखने लगी। खलील ने जब उसे अपने समीप देखा और जब उसकी निगाह मरियम की निगाह से टकरायी, उसने एक गहरी साँस भरी और सर घुमाकर अपनी आँखें यों बन्द कर लीं, मानो उसकी आत्मा कुछ कहने के लिए शब्द ढूंढ़ने की खोज में उसे त्याग कर शून्य की ओर बढ़ रही है।

कुछ देर बाद साहस कर मरियम ने पूछा—जब बर्फ पिघल जायगी और रास्ते साफ़ हो जायँगे, तब आप कहाँ जायँगे ?

खलील ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें खोलकर दूर क्षितिज की ओर देखा—नहीं मालूम, मेरा रास्ता मुझे कहाँ ले जायगा।

मरियम का हृदय उछलने लगा। बोली—आप इस गाँव में हम लोगों के साथ ही क्यों न रहिए। क्या किसी दूर अज्ञात प्रदेश में रहने की अपेक्षा आप यहाँ अधिक सुविधा और आराम नहीं पायँगे ?

उसके इन प्रेम-सिक्त शब्दों और स्वर-माधुर्य ने खलील के अन्तर में एक हलचल-सी मचा दी। उसने कहा—इस गाँव के ग्रामीण कभी भी विहार से निष्कासित एक व्यक्ति को अपना पड़ोसी बनाना स्वीकार नहीं करेंगे। वे उसे हवा में साँस भी नहीं लेने देंगे, जिसमें वे स्वयं लेते हैं। उनकी समझ में भिक्षुओं का शत्रु ईश्वर और उसके सन्तों का शत्रु है।

मरियम धीरे से कराहकर खामोश हो गयी। कटु सत्य ने ही उसे खामोश किया था। खलील अपना सर हथेली पर टिकाकर कहता

गया—मरियम, इस गाँव के लोगों को भिक्षुओं और पादरियों ने सदैव यही सीख दी है कि जो अपने बारे में स्वयं सोचते हैं, उनसे घृणा करो, और जो अपना रास्ता स्वयं ढूँढ़ते हैं और दूसरों का अनुसरण नहीं करते, उनसे दूर रहो। अगर मैं इस गाँव में रहकर लोगों से यह कहूँ कि भाइयो, आओ, आज से हम ईश्वर की प्रार्थना पादरियों की इच्छानुसार न कर, अपने अन्तर की इच्छानुसार करें, क्योंकि वह परमपिता अपनी पूजा अपने भोले भक्तों से कभी भी दूसरों के विचारों के अनुसार नहीं कराना चाहता है, तो वे यह मानकर कि मैं ईश्वर-द्वारा पादरियों को मिले अधिकारों के विरुद्ध विद्रोह कर रहा हूँ, मुझे एक स्वर से नास्तिक की संज्ञा देंगे। ऐसे ही अगर मैं समझाऊँ कि बन्धुओ, अपने अन्तर की आवाज़ सुनो और अपनी आत्मा की इच्छापूर्ति करो, तो वे यह सोचकर कि ईश्वर ने आकाश और पृथ्वी के बीच जिस व्यक्ति को दूसरों की ओर से प्रार्थना करने के लिए भेजा है, उसके प्रति मैं उन्हें अकृतज्ञ बनाना चाहता हूँ, मुझे धर्म-भ्रष्ट बतायेंगे।

उसने यह कहकर मरियम की आँखों में झाँका। दुबारा जब वह फिर बोला, उसकी आवाज़ में चाँदी के तारों के बजने-जैसी मधुर झंकार थी—लेकिन, मरियम, इस गाँव में कोई ऐसी दैवी शक्ति है, जो मेरी आत्मा का स्पर्श कर रही है और मुझे रोके हुए है। यह शक्ति मुझे भिक्षुओं-द्वारा मिली हुई यातनाओं को भूलने और उनकी निर्दयता को क्षमा करने की प्रेरणा देती है। इस गाँव में मैंने काल का प्रत्यक्ष दर्शन किया है और यहीं ईश्वर की आत्मा ने मेरी आत्मा का आलिंगन किया। इस गाँव में काँटों के बीच एक फूल खिला है, जिसके सौन्दर्य ने मेरी आत्मा को छुआ है और जिसकी सुगंध ने मेरे हृदय को सुवासित किया है। क्या मैं इस फूल को छोड़ दूँ और अपने उन विचारों का प्रचार करता फिरूँ, जिसके लिए मैं विहार से निकाला गया, या मैं इस फूल के निकट ही रहूँ और अपने विचारों और सपनों के लिए उसे घेरे रहनेवाले काँटों के बीच एक कब्र खोदूँ ?

मरियम इन शब्दों को सुनकर यों झूमने लगी, जिस प्रकार प्रातः समोर के स्पर्श से चमेली का फूल झूमता है। उसके अन्तर से प्रकाश फूटकर उसकी आँखों में भरने लगा और लज्जा उसकी जिह्वा पर विजय पाने के लिए संघर्ष करने लगी। वह बोली—हम दोनों किसी अदृश्य शक्ति के हाथ में हैं। पर वह एक न्यायवान् और दयालु शक्ति है। हम अपने को उसकी इच्छा पर छोड़ दें।

प्राचीन काल से आज तक यह परम्परा चली आ रही है कि समाज का अधिकारी वर्ग पादरियों और धर्माचार्यों से गठबंधन कर साधारण वर्ग के विरुद्ध मोर्चा जमाता है। इस रोग का उपचार तभी सम्भव है, जब संसार से अज्ञानता का लोप हो जाये और प्रत्येक पुरुष का हृदय एक प्रभुसत्ता-सम्पन्न सम्राट और प्रत्येक स्त्री का हृदय एक पुजारिन बन जाये।

अधिकारी पुरुष अपना भवन असहायों और निर्धनों की हड्डियों पर खड़ा करता है और धर्माचार्य अपना देवालय भक्तों और श्रद्धालुओं की समाधियों पर। शासक खेतिहरों की कलाई पकड़ता है और पादरी अपना हाथ बढ़ाकर उनकी जेबें खाली कर देता है। शासक धरती के बेटे के बीच भौहें टेढ़ी कर विचरता है और पादरी मुस्कराता हुआ। चीते की गुर्राहट और भेड़िए की मुस्कराहट के बीच सर्वहारा वर्ग यों मिटता है। शासक कानून का आश्रय लेता है, जब कि धर्माचार्य धर्म का और इन दोनों पाटों के बीच भव्य शरीरों का क्षय होता है और आत्माओं की मृत्यु।

लेबनान का वह पर्वती इलाका सूरज की रोशनी में धनवान था, पर ज्ञान के प्रकाश में निर्धन। अधिकारियों और धर्माचार्यों ने मिलकर एक संयुक्त मोर्चा बना लिया था और निर्धन असहाय किसान ज़मीन जोत-जोतकर एक की तलवार और दूसरे के श्राप से अपनी रक्षा करते थे। अधिकारी पुरुष अपने महल में खड़ा होकर रिआया से कहता

था, सुलतान ने मुझे तुम्हारी काया का संरक्षक बनाया है ! (उस समय लेवनान टर्की के सुलतानों के अधीन था।) और धर्माचार्य देवालय के चबूतरे पर से बाँग देता था, और ईश्वर ने मुझे तुम्हारी आत्मा का रक्षक चुना है ! लेबनान-निवासी यह सुनकर खामोश रहते, क्योंकि मिट्टी की तह में दबे हृदय कभी विद्रोह नहीं करते, न मुर्दे कभी रोते हैं।

शेख अब्बास, जो उस गाँव का ज़मीदार, स्वामी और सर्वोच्चाधिकारी था, विहार के भिक्षुओं के प्रति काफ़ी प्रेम रखता था और उनकी शिक्षाओं और सिद्धान्तों का सनिष्ठा पालन करता था। यह शिक्षा और सिद्धान्त ज्ञान की हत्या कर, उसके खेतों और बागों के मजदूरों में आज्ञापालन की भावना कायम रखने में उसकी सहायता करते थे।

उस सन्ध्या को जब खलील और मरियम प्रेम-सिंहासन के सम्मुख खड़े थे और रहेल उनके आन्तरिक रहस्यों को पढ़ने की जिज्ञासा से उन्हें देख रही थी, तब गाँव का पादरी इल्यास शेख अब्बास के पास जाकर उसे बता रहा था कि पवित्र भिक्षुओं द्वारा विहार से निकाला गया एक दुश्चरित्र, विद्रोही और नास्तिक युवक अपने गाँव में दो सप्ताह से समन-अल-रामी की विधवा के साथ रह रहा है। पादरी इल्यास शेख़ को केवल यही सूचना देकर चुप नहीं हो गया, बल्कि उसने यह भी समझाया कि जो राक्षस विहार से निकाला गया है, भला वह क्या गाँव में रहकर देवता हो जायेगा, या, जो घास आग में झोंक देने-योग्य है, वह क्या कभी फल देगी ? यदि हम चाहते हैं कि हमारा गाँव गंदे रोगों के कीटाणुओं का शिकार न होकर साफ़ और स्वस्थ रहे, तो हमको भी देवात्मा भिक्षुओं की भाँति इस दुष्ट युवक को यहाँ के घरों और खेतों से दूर भगा देना चाहिए।

—यह आपने कैसे जाना कि यह नौजवान गाँव में भयंकर बीमारियाँ फैला देगा ?—शेख अब्बास ने पूछा—हम क्यों न इसे चरवाहा या बाग़ का चौकीदार बना लें ? हमें आजकल मजदूरों की बहुत ज़रूरत है। फिर यह जवान ठहरा। हमें उसकी जवानी से फायदा उठाना ही चाहिए।

पादरी धूर्तता-भरी मुस्कराहट मुस्कराया और अपनी अँगुलियों से अपनी घनी दाढ़ी को मसलता हुआ बोला—अगर यह युवक एक अच्छा काम करनेवाला ही होता, तो भिक्षु इसे कभी भी विहार से न निकालते, क्योंकि उनके पास चरवाने के लिए हजारों जानवर और कई बड़े-बड़े चारागाह हैं। विहार का एक चरवाहा अभी उस रात मेरे यहाँ टिका था। उसने मुझे बताया था कि इस युवक ने देवात्मा भिक्षुओं के सामने एक पुस्तक में से धर्म की निन्दा करनेवाले स्थल पढ़े थे और धर्म के विरोध में ऐसे शब्द कहे थे, जो इसकी बदनीयती को साफ़ ज़ाहिर करते हैं। इसने विना किसी भय के कहा था, विहार के सारे खेत, सारे बाग और सारी सम्पत्ति इस गाँव के निर्धनों को बाँट दो। तुम्हारा यह काम ईश्वर के पूजन और प्रार्थना से कहीं अधिक अच्छा होगा। उस चरवाहे ने इस युवक के बारे में ऐसी ही और भी बहुत-सी बातें बतायी थीं। यह युवक विहार में सज़ा और सख्ती मिलने पर भी न सँभला। बल्कि उनसे इसकी नास्तिकता और भी बढ़ गयी थी, जैसे गंदगी पाकर मक्खियाँ बढ़ती हैं।

शेख़ अब्बास यह सुनते ही उठकर खड़ा हो गया। चीता जिस प्रकार झपटने के पूर्व कुछ पीछे दुबकता है, वैसे ही वह दुबका, एक क्षण के लिए ख़ामोश रहा, अपने दाँत पीसे और क्रोध से काँपा और फिर दीवानख़ाने के द्वार पर आकर गला फाड़कर अपने सिपाहियों को पुकारने लगा। तीन सिपाही दौड़ते हुए आकर आदेश की प्रतीक्षा में उसके सामने खड़े हो गये।

—देखो!—वह दहाड़ा—बेवा रहेल के घर में फ़क़ीर के भेष में एक बदमाश रह रहा है। तुम अभी उसे बाँधकर मेरे सामने पेश करो! अगर उस घर की औरतें कोई रुकावट डालें, तो उन्हें भी बालों से पकड़कर बर्फ़ पर खींचते हुए लाकर मेरे सामने पेश करो! जो किसी अपराधी की मदद करता है, वह भी अपराधी है!

सिपाहियों ने अपने मस्तक झुका दिये और अपने स्वामी की आज्ञा

का पालन करने के लिए तुरन्त तैयार हो गये। शेख़ अब्बास और पादरी वहीं रुककर, युवक और विधवा को क्या सजा दी जाये, इसपर विचार करने लगे।

दिन ढल चुका था और रात घिर आयी थी। बर्फ़ के कफ़न से ढँकी झ.पड़ियों में उसकी काली-काली छायाएँ दौड़ रही थीं। ठंडे काले आकाश में सितारे विरह और मृत्यु-जैसी असीम पीड़ा में भी न मरनेवाली आशा की भाँति चमक रहे थे। ग्रामीणों ने अपने दरवाजे और खिड़कियाँ मजबूती से बन्द कर लिये थे और अपने झोपड़ों के गिर्द भागनेवाली रात की छायाओं की चिन्ता न कर, अलाव के पास बैठकर अपने को गरमा रहे थे।

रात की उस बेला में जब रहेल, मरियम और खलील भोजन करने के लिए लकड़ी की मेज़ पर बैठे थे, दरवाज़े पर ज़ोर का एक धक्का लगा और शेख अब्बास के तीन सिपाही अन्दर घुस आये। रहेल ने उन्हें डरी हुई निगाह से देखा और मरियम चीख पड़ी। पर खलील खामोश और निशंक रहा। उसकी महान आत्मा को मानो इसकी चेतावनी पहले से ही मिल गयी थी और उसके आने से पूर्व ही उसको उनका आना ज्ञात हो गया था। एक सिपाही आगे बढ़ा और उसने ख़लील के पुट्ठे पर मज़बूती से अपना हाथ रखते हुए पूछा—क्या तुम ही वह आदमी हो, जिसे विहार से निकाला गया है ?

खलील ने आहिस्ते से उत्तर निया—हाँ, मैं ही हूँ। कहो, तुम लोग क्या चाहते हो ?

सिपाही बोला—हमें तुमको बाँधकर शेख़ अब्बास के सामने ले जाना है। याद रखो, अगर तुमने कोई भी रुकावट डाली, तो हम तुमको बर्फ़ पर खींचते हुए यों ले चलेंगे, जैसे एक बकरी जिबहखाने की ओर ले जायी जाती है।

रहेल ख़ामोश थी, पर उसके चेहरे पर सफेदी दौड़ रही थी और झुर्रियाँ पड़ रही थीं। वह काँपती आवाज़ में बोली—यह किस जुर्म के लिए शेख़ अब्बास के सामने बाँधकर ले जाया जा रहा है ?

मरियम भी अब चुप न रही—तुम तीन हो और यह बेचारा अकेला। इन्हें इस प्रकार से बाँधना और घसीटना क्या तुम्हारी बुजदिली नहीं है ?

सिपाही गुस्से से लाल हो गया और चीखा—क्या इस गाँव में कोई ऐसी भी औरत है, जो शेख अब्बास के हुक्म की खिलाफ़त करे ?

उसने यह कहकर अपनी कमर में से एक रस्सी खोली और उससे खलील के हाथ बाँधने लगा। खलील ने कुछ न कहा। उसकी आकृति में किसी भी प्रकार का परिवर्तन न हुआ। उसका सर वैसे ही तना रहा, जैसे समुद्र में तूफ़ान के बीच द्वीप-स्तम्भ तना रहता है। उसके अधरों पर व्यथा से भीगी मुस्कराहट थी।

वह बोला—बन्धुओं ! मुझे तुम पर रहम आता है। तुम एक अन्धी शक्ति के यंत्र हो। तुम्हारी शक्ति से वह कमज़ोरों को पीसता है और स्वयं तुमको भी कुचलता है। तुम अज्ञान के गुलाम हो, जो नीग्रो की ख़ाल से भी ज़्यादा काला होता है, और अत्याचार और निर्लज्जता के आगे पूर्णतया झुक जाता है। कल तक मैं भी ऐसा ही था, जैसे तुम आज हो, और कल तुम ऐसे ही हो जाओगे, जैसा मैं अब हूँ। आज मेरे और तुम्हारे बीच अन्धकार की एक गहरी खायी है, जो मेरी आवाज़ को सोख रही है और सत्य को छुपा रही है। तुम न कुछ सुन सकते हो, न देख सकते हो। आओ, आगे बढ़ो। लो यह मेरे हाथ बाँध लो और जो चाहो सो करो।

सिपाही आश्चर्य-जड़ित हो उसे घूरने लगा। युवक ने एक मिनट के लिए जैसे उनकी शक्ति चुरा ली थी, या जैसे अपनी वाणी की मधुरता से कुछ क्षणों के लिए उनकी क्रियाशीलता को रोककर उनके अन्तस्तल में सोयी हुई पवित्र इच्छाओं को झिंझोड़ दिया था। पर वे शीघ्र ही अपनी पूर्वावस्था में आ गये। शेख़ अब्बास के आदेश की गूंज ने, जो

उनके कानों में अभी शेष थी, उन्हें उस काम की याद दिला दी, जो उन्हें सौंपा गया था। उन्होंने युवक के हाथ बाँध दिये और उसे ले चले, चुपचाप। वे अपने अन्तर में एक अजीब-सा दर्द महसूस कर रहे थे। रहेल और मरियम उसके पीछे-पीछे चलीं, यों, जैसे जेरूसलम की स्त्रियाँ यीशू के पीछे-पीछे कलवरी पर्वत पर गयी थीं। (कलवरी पर्वत पर यीशू को सूली पर चढ़ाया गया था।) खलील को अपने पीछे-पीछे उनके आने का ज्ञान था।

छोटे-छोटे गाँवों में ख़बरें, भले ही वह अमहत्वपूर्ण क्यों न हों, ग्रामीणों में बड़ी तेज़ी से फैल जाती हैं। वे समाज की हलचल से दूर रहते हैं, इसलिए अपनी छोटी-सी, सीमित परिधि में घटनेवाली घटनाओं की ओर उनका ध्यान बरबस आकृष्ट हो जाता है। सर्दी के मौसम में जब खेत और बाग बर्फ़ की परतों से ढँके होते हैं और जब जीवन की सारी क्रियाशीलता सहमकर अलावों के गिर्द सिमट जाती है, तब ग्रामीण किसी चटपटी ख़बर के लिए बेचैन रहते हैं। वैसी ख़बरें उनके खाली दिनों और लम्बी सर्द रातों को चर्चा का विषय बनकर आसानी से काट देती हैं।

उस रात शेख अब्बास के सिपाही खलील को कठिनता से बाँध पाये होंगे कि उसकी खबर गाँव के निवासियों में किसी छूत की बीमारी की तरह फैल गयी। वे अपनी जिज्ञासा की शान्ति के लिए अपने-अपने झोपड़ों से निकलकर यों उमड़ पड़े, जैसे बिगुल बजने पर सैनिक मैदान में एकत्रित होने के लिए उमड़ पड़ते हैं। खलील के पीछे-पीछे वे-सब भी शेख अब्बास के महल में पहुँच गये और देखते-देखते वहाँ का विशाल दीवानख़ाना आबालवृद्ध नर-नारियों से भर गया। वे-सब विहार से निष्कासित नास्तिक और उसे गाँव में आश्रय देकर दैवी प्रकोपों को निमंत्रण देनेवाली दुरात्माओं रहेल और मरियम को देखने के लिए बेचैन थे।

शेख़ अब्बास एक ऊँचे आसन पर बैठा था और उसकी बगल में ही पादरी इल्यास था। सामने खड़े ग्रामीण और सैनिक बँधे हुए युवक को घूर रहे थे, जिसका मस्तक मैदान के बीच स्थित किसी पर्वत शिखर की भाँति ऊँचा उठा था। उसके पीछे भय से आतंकित और जनसमूह की कठोर दृष्टि से दुखित रहेल और मरियम खड़ी थीं। पर यह भय उस स्त्री को अधिक समय तक क्या डरा सकता है, जिसने सत्य के दर्शन कर लिये हों और उसकी सेविका हो गयी हो, या कठोर दृष्टि उस कुमारी के हृदय का क्या कुछ बिगाड़ सकती है, जिसने प्रेम की आवाज़ सुन ली हो और जाग गयी हो?

शेख़ अब्बास ने सामने खड़े युवक की ओर घूरा और गरजती हुई आवाज़ में पूछा—तुम्हारा नाम क्या है?

—खलील।

—तुम्हारे कौन-कौन संबंधी हैं और तुम्हारा जन्म-स्थान कहाँ है?

खलील ने अपना चेहरा उन ग्रामीणों की ओर घुमा लिया, जिनकी आँखों में उसके लिए घृणा और भर्त्सना थी, और बोला—यह निर्धन, असहाय और सताये हुए इन्सान ही मेरे सम्बन्धी हैं और यह विस्तृत धरती ही मेरा जन्म-स्थान है।

शेख चिढ़ाते हुए मुस्कराया—जिन्हें तुम अपने सम्बन्धी बता रहे हो, वही तुम्हारी सज़ा चाहते हैं और जिस धरती को तुम अपना जन्म-स्थान मानते हो, वही तुम्हें अपना बेटा मानने से इन्कार करती है।

खलील अपने हृदय में अशान्ति-सी अनुभव करता हुआ बोला—राष्ट्र अपनी अज्ञानता में अपने पवित्रतम पुत्रों को पकड़कर नृशंस अत्याचारी शासकों के सुपुर्द कर देता है और उन लोगों को चिढ़ाता है, अपमानित करता है और यातना देता है, जो इन पुत्रों पर सहानुभूति दिखलाते हैं। पर क्या एक सपूत अपनी माँ को बीमारी के समय त्याग देता है या एक सहृदय भाई विपत्ति में पड़े हुए अपने भाई को छोड़ देता है? ये निर्धन, असहाय लोग, जिन्होंने मुझे बाँधकर आज तुम्हारे हवाले किया है, वही

हैं, जिन्होंने कल अपनी गर्दनें तुम्हें सौंप दी थीं। ये जो मुझे बेइज़्ज़त करके तुम्हारे सामने लाये हैं, वही हैं, जिन्होंने अपने हृदय के बीजों को तुम्हारे खेतों में बोया है और अपनी ज़िन्दगी का खून तुम्हारे पैरों के नीचे बहाया है। यह धरती, जो मुझे दुत्कारती है, उसी देश की है, जो अन्यायी और लोभियों को निगलने के लिए अपना मुँह नहीं खोलती है।

शेख़ अब्बास ने जोरों का एक ठहाका लगाया। मानो वह अपने इस कुरूप ठहाके से युवक की आवाज़ को दबा लेगा और उसे भोले श्रोताओं के हृदय में उतरने न देगा।

वह बोला—युवक ! क्या तुम वही नहीं हो, जो विहार में एक चरवाहा था ? तुमने अपना काम क्यों छोड़ा और क्यों निकाले गये ? बताओ ! शायद ये सुननेवाले एक पागल और नास्तिकपर भिक्षुओं की अपेक्षा अधिक दया दिखायें !

खलील ने उत्तर दिया—मैं एक चरवाहा था, पर एक बधिक नहीं। मैंने अपने जानवरों को सदा हरे-भरे चारागाहों में ही चराया, न कि पथरीली ऊसर भूमि में। मैंने सदा उन्हें मीठे पानी के सोतों की ओर ही हाँका, न कि दलदल या कीचड़ की ओर। मैंने शाम को सदा उन्हें बाड़े में ही छोड़ा, न कि भेड़ियों और दरिन्दों की ख़ूराक बनने के लिए अन्धी घाटियों में। मैंने तो अपने जानवरों के साथ सदा ऐसा ही सलूक किया। पर यदि तुमने चारों ओर खड़े हुए इन इन्सानों के साथ यह सलूक किया होता, तो तुम आज इस महल में न रह रहे होते, जब कि ये भूख और झोपड़ों की गंदी, घुटी हवा से मिट रहे हैं। यदि तुमने ईश्वर के इन बेटों पर ऐसी ही दया की होती, जैसी मैंने विहार के पशुओं पर की, तो तुम आज इस मखमली आसन पर न बैठे होते, जब कि यह तुम्हारे सामने पेड़ की नंगी शाखों की तरह खड़े हैं।

शेख़ अब्बास बेचैनी से अपने आसन पर उचका। उसके माथे पर पसीने की बूंदें झलक आयीं और उसका विनोद क्रोध में बदल गया। पर

उसने अपनी इस बेचैनी को सामने खड़ी रिआया पर प्रकट होने से पहले ही दाब लिया।

वह हाथ हिलाता हुआ बोला—युवक ! तुम हमारे सामने बंदी बनाकर इसलिए नहीं लाये गये हो कि तुम बदतमीज़ी की यह-सब बातें करो ! तुम हमारे सामने एक अपराधी की हैसियत से लाये गये हो, ताकि तुम्हारा फैसला हो। तुमको मालूम होना चाहिए कि तुम इस गाँव के जमींदार और अमीर अमीन-अल-शहेबी के प्रतिनिधि के सामने खड़े हो, ईश्वर जिसे चिरायु रखे ! तुम गाँव के पादरी इल्यास के सामने खड़े हो, जो चर्च का प्रधान है, जिसकी तुमने निन्दा की है। अपनी सफ़ाई में अगर तुम्हें कुछ कहना है, तो कहो, नहीं तो पश्चाताप प्रकट करते हुए इस हँस रहे जनसमूह के आगे घुटने टेककर अपने अपराध के लिए तोबा करो ! यकीन रखो, हम तुम्हें माफ कर देंगे और पहले की ही तरह फिर चरवाहा बना देंगे।

शान्त वाणी में युवक ने उत्तर दिया—अपराधी का फैसला कभी अपराधी नहीं करता, न कोई पापी अपने पाप की सफ़ाई पापी के सम्मुख देता है।

वह यह कहता हुआ फिर दीवानखाने में उपस्थित जनसमूह की ओर घूम गया। उसकी आवाज़ में एक झंकार थी, जो चाँदी की घंटियों के स्वर की भाँति साफ थी। वह कहता गया—भाइयो ! जिस आदमी को तुम्हारी सेवा और आज्ञाकारिता ने तुम्हारे खेतों का मालिक बनाया है, उसके आदेश से मैं तुम्हारे पितामहों और पूर्वजों की हड्डियों पर बने इस महल में बाँधकर लाया गया हूँ। जिस आदमी को तुम्हारी आस्था ने तुम्हारे चर्च का पादरी चुना है, वह मुझे दंड देने और अपमानित करने में सहायक होने के लिए आया है। और तुम लोग ? तुम आये हो चारों ओर से भागते हुए इसलिए, ताकि मुझे दर्द से कराहते और सफ़ाई में गिड़गिड़ाते हुए देखो। तुम आये हो अपने गर्म अलावों को छोड़कर इसलिए ताकि अपने एक भाई और बेटे को बाँधे जाते हुए देखो। तुमको यह देखने की तीव्र उत्कंठा है कि एक खूंखार दरिन्दे के जबड़े में एक

मासूम शिकार कैसे तड़पता है। तुम यह देखने के लिए विशेष उत्सुक हो कि एक अधिकारी के सामने एक अपराधी और ईश्वर-निन्दक से कैसी बदसलूकी की जाती है !

—मैं ही अपराधी हूँ। मैं ही वह नास्तिक हूँ, जो विहार से निकाला गया था और जो तुम्हारे गाँव में आकर रहने लगा था। मैंने ही अपराध किया है। मैं तुम्हें अपना अपराध सुनाता हूँ। मैं तुमसे अपने ऊपर दया करने को नहीं कहता, पर न्याय करने को कहता हूँ। दया तो उस व्यक्ति पर की जाती है, जिसने अपराध किया हो। निरापराधी तो केवल न्याय चाहता है। मैं तुम सबको अपना पंच चुनता हूँ। जनता की इच्छा ही ईश्वर की इच्छा होती है !

—अब अपने हृदय के कपाट खोल लो और ठीक से सुनो, और फिर तुम्हारी अन्तरात्मा जो कहे, उसके अनुसार ही निर्णय दो। मेरे विरुद्ध यह कहा जाता है कि मैं एक दुश्चरित्र हूँ और ईश्वर पर विश्वास नहीं करता। पर तुम मेरे सच्चे अपराध से परिचित नहीं हो। तुम सब मुझे एक चोर और खूनी की तरह बँधे हुए देख रहे हो, पर मेरे असली पाप को नहीं जानते। इस प्रदेश में अपराध और पाप तो अँधेरे में छुपे रहते हैं, पर उनके लिए जो दंड दिया जाता है, वह इस सब पर इस तरह प्रकट हो जाता है, जैसे बिजली की कौंध अँधेरी रात में।

—भाइयो ! मेरा अपराध बस यही है कि मुझे तुम्हारी असहायता का ज्ञान है और मैं तुम्हारी बेड़ियों के भार से परिचित हूँ। बहनो ! मेरा पाप बस यही है कि मुझे तुम और तुम्हारे उन बच्चों से हमदर्दी है, जो तुम्हारे सीने से जिन्दगी को मौत के डंक की पीड़ा के साथ चूसते हैं ?

—मैं भी तुम्हारा एक बान्धव हूँ, क्योंकि मेरे पूर्वज इन्हीं घाटियों में रहते थे, जो आज तुम्हारी शक्ति को चूस रही है, और इसी जुए की मार से मरे थे, जो आज तुम्हारी गर्दनों के ऊपर रखा हुआ है। मैं उस ईश्वर पर विश्वास करता हूँ, जो तुम्हारी पीड़ित आत्मा के क्रन्दन को सुनता है और तुम्हारे भग्न हृदय को देखता है। मैं उस ग्रन्थ पर विश्वास करता

हूँ, जो इस आसमान के नीचे हम-सबको बिना किसी भेद-भाव के एक समान रखता है। मैं उस शिक्षा पर विश्वास करता हूँ, जो तुम्हें और मुझे बंधनों से मुक्त करती है और उस धरती पर अबाध विचरने देती है, जहाँ ईश्वर बिचरा करता है। मैं विहार में यद्यपि एक चरवाहा था, पर गूंगे पशुओं के साथ रहकर भी अन्धा और बहरा न हुआ था कि तुम्हारे उस दुखान्त नाटक को, जो तुम अपनी इच्छा के विरुद्ध खेतों में खेलते हो, न देख सकता और तुम्हारे झोंपड़ों से उठनेवाली निराशा से डूबी चीत्कारों को न सुन सकता। मैं विहार में और तुम यहाँ खेतों में उन भेड़ों के रूप में रखे गये थे, जो एक भेड़िये के पीछे-पीछे स्वयं उसकी माँद में जाती हैं। पर मैं मार्ग में ही सहायता के लिए पुकार उठा था और इस पर उस भेड़िए ने मुझपर टूटकर मुझे झुंड के बाहर इसलिए निकाल दिया, ताकि मेरी आवाज़ झुंड की सब भेड़ों को बरगला न दे और वे विद्रोह कर सब दिशाओं में तितर-बितर न हो जायें और उसे इस अँधेरी रात में भूला और अकेला छोड़ दें।

—मैंने उस सत्य के लिए, जो लहू से तुम्हारे चेहरों पर लिखा है, आवाज़ उठायी, जो विहार को एक सिरे से दूसरे सिरे तक भरनेवाली तुम्हारी कराह के खिलाफ़ थी। मैंने दुत्कार, यातना, भूख, प्यास और कैद को सहा। पर मैं डरा नहीं, न मेरा हृदय घबराया ही, क्योंकि तुम्हारे क्रन्दन और तुम्हारी पीड़ा ने मुझे सहने की शक्ति दी और दुत्कार, यातना और मौत मुझे प्यारी हो गयीं। तुम शायद पूछोगे कि कब तुमने सहायता के लिए किसी को पुकारा और कब किसी ने साहस कर अपना मुँह खोला? मैं कहता हूँ कि हर एक दिन तुम्हारी आत्मा विलाप करती है और हर रात तुम्हारा हृदय पीड़ा में सहायता के लिए पुकारता है। पर तुम अपनी आत्मा और अपने हृदय की आवाज़ को सुन नहीं पाते। भला किसी मरते हुए आदमी ने अपने अन्दर मौत की आवाज़ सुनी है? पर, हाँ, उसकी खाट के निकट रहनेवाले सुनते हैं। हलाल किया हुआ पक्षी बिना किसी इच्छा और ज्ञान के उपहासजनक नाच नाचता है, पर दर्शकों

के लिए वह एक सरस नृत्य होता है। बोलो, दिन के किस समय तुम्हारा हृदय दर्द से नहीं कराहता है? क्या सुबह झुटपुटे में नहीं, जब जीवन का मोह तुम्हें आवाज़ देकर नींद से जगाता है और गुलामों की तरह खेतों पर भेजता है? क्या दोपहर में नहीं, जब आग बरसाते सूरज से बचने के लिए तुम किसी पेड़ को छाया में आराम करना चाहते हो, पर कर नहीं पाते? क्या सन्ध्या को नहीं, जब तुम भूखे-थके अपने झोंपड़ों में लौटते हो और सिवा सूखी रोटियों और गँदले पानी के और कुछ नहीं पाते हो? या क्या रात को नहीं, जब थकावट तुम्हें पत्थर के विस्तरों पर सोने को मजबूर करती है और तुम गहरी नींद सो नहीं पाते हों, क्योंकि शेख़ की डरावनी आवाज़ की गूँज, जो तुम्हारे कानों में सदैव रहती है, तुम्हें जगाती रहती है? किस मौसम में तुम्हारा हृदय दर्द से नहीं रोता है? क्या बहार में नहीं, जब प्रकृति अपना नया लिबास पहनती है और तुम फटे चिथड़ों से उसका स्वागत करते हो? क्या गर्मी में नहीं, जब तुम फसल को खेतों से काटकर अपने जमींदारों की खत्तियों और खलिहानों में भरते हो और मजदूरी में केवल भूसा और फूस पाते हो? क्या पतझड़ में नहीं, जब तुम फलों को इकट्ठा करते और अंगूरों को पेरते हो, पर बदले में सिवा खोजड़ और छाछ के कुछ नहीं पाते हो? या क्या जाड़ों में नहीं, जब प्रकृति तुम्हें सताती है और बर्फीली हवा तुम्हें झोंपड़ों में घुसे रहने के लिए मजबूर करती है, और तुम तूफान से डरे और सहमे हुए अलाव के पास बैठे रहते हो?

—मेरे गरीब भाइयों! यही तुम्हारी ज़िन्दगी है। इसी भाँति रात तुम्हारी अभागी आत्माओं के ऊपर घिरती है। यही तुम्हारी निर्धनता और परवशता की छायाएँ हैं। यही तुम्हारी दर्द-भरी पुकार है, जिसे मैंने तुम्हारे अन्तर से फूटते हुए सुनी थी, और जिससे मैं जागकर भिक्षुओं और उनके जीने के तरीके से विद्रोह कर उठा था, और तुम्हारे नाम से तुम्हारे दुखों और पीड़ाओं की शिकायतें अकेले खड़े करता रहा और न्याय माँगता रहा। पर उन्होंने मुझे नास्तिक करार देकर विहार से निकाल दिया।

यहाँ मैं तुम्हारे दुखो में सम्मिलित होने के लिए आया था, और तुम्हारे साथ रहते हुए अपना लहू तुम्हारे लहू में मिलाना चाहता था, पर तुमने मुझे बाँधकर अपने शक्तिशाली शत्रु के हाथों में सौंप दिया है, उस शत्रु के हाथों में, जो तुम्हारी उपज को लूटता है, जो तुम्हारी दौलत पर गुलछर्रे उड़ाता है और जो तुम्हारी मेहनत का फल अपनी भारी तोंद में भरता है। क्या तुम लोगों में कोई ऐसा बुजुर्ग नहीं है, जो यह जानता हो कि जो ज़मीन तुम आज जोतते हो, पर जिसकी फसल से तुम वंचित कर दिये जाते हो, यह तुम्हारी ही है और उसे शेख अब्बास के पिता ने तुम्हारे पिताओं से ज़बरदस्ती छीन ली थी, जब कानून तलवार की धार पर लिखा होता था? क्या तुमने नहीं सुना है कि भिक्षुओं ने तुम्हारे पितामहों को उनके बागों और ज़मीन से बेकाबिज कर दिया था, जब पवित्र मंत्र पादरियों के अधरों पर लिखे होते थे? क्या तुम नहीं जानते कि यह अधिकारी और धर्माचार्य परस्पर षड्यन्त्र कर तुम्हारी आज्ञा-कारिता और सिधाई का लाभ उठा रहे और तुम्हारे हृदय का रक्त चूस रहे हैं? क्या तुम लोगों में कोई भी ऐसा आदमी है, जिससे पादरी ने जमींदार के सामने शीश झुकाने को न कहा हो या कोई ऐसी भी औरत है, जिसे ज़मींदार ने पादरी की इच्छापूर्ति के लिए धमकाया न हो?

—तुम लोगों ने सुना होगा कि ईश्वर ने आदम से कहा था कि तू अपना भोजन अपने मस्तक के पसीने से पायेगा। तब यह शेख अब्बास क्यों अपना भोजन तुम्हारे मस्तक के पसीने से पाता है और तुम्हारे आँसुओं से खींची हुई अंगूर की शराब पीता है? क्या ईश्वर ने इसे इसकी माँ के गर्भ में ही हमारा शासक नियुक्त कर दिया था? क्या उसने इस ज़िन्दगी में तुम्हें गुलाम बनाकर ही भेजा है? क्या वह कहता है कि तुम धरती से फल तो उगाओ, पर स्वयं सिवा छाल और जड़ों के कुछ नहीं खाओ? या ऊँचे-ऊँचे महल तो बनाओ, पर स्वयं दूहों और झोपड़ों में रहो? नसारत के यीशू ने अपने शिष्यों से कहा था कि जिस सहजता से तुम पाते हो, उसी सहजता से दो और अपनी थैलियों में सोना, चाँदी या किसी अन्य

वस्तु का संग्रह न करो। तब यह भिक्षु और पादरी किस शिक्षा के आधार पर अपनी प्रार्थनाएँ चाँदी और सोने से बेचते हैं ? तुम रात की ख़ामोशी में यह कहते हुए प्रार्थना करते हो कि हे ईश्वर, मुझे आज का भोजन दो ! उसने इसीलिए तुम सबको यह ज़मीन दी है कि तुम इसमें से अपना खाना स्वयं उगाओ और संतुष्ट रहो। तब विहार के धर्माचार्यों ने यह अधिकार कहाँ से पाया है कि वे तुम्हारे इसी खाने को छीन लें ?

—तुम यहूदा स्क्रूती (यीशू के १२ शिष्यों में से एक, जिसने उन्हें पकड़वाया था) को इसलिए बुरा करते हो, कि उसने अपने स्वामी यीशू को चंद टुकड़ों की ख़ातिर बेचा था। तब तुम उनके गुण क्यों गाते हो, जो अपने जीवन में ईश्वर को प्रति दिन बेचते हैं ? यहूदा ने अपने इस पाप का प्रायश्चित किया था और ग्लानि से फाँसी दे ली थी। पर ये पापी पाप करके भी क़ीमती वस्त्रों और आभूषणों से सजकर और सुनहली अँगूठियाँ पहनकर तुम्हारे सामने सिर उठाकर चलते हैं। तुमने अपने बच्चों को मसीह से प्रेम करना सिखाया है। तब तुम क्यों उन्हें उन लोगों का अभिवादन करने को कहते हो, जो उससे घृणा करते हैं और उसकी शिक्षाओं और सिद्धांतों की उपेक्षा करते हैं ? तुम जानते हो कि मसीह के अनुयायी पत्थर खा-खाकर इसलिए मरे थे, ताकि उनकी पवित्र आत्मा तुम्हारे हृदयों में निवास कर सके। पर यह पादरी और भिक्षु तुम्हारी आत्माओं की हत्या इसलिए कर रहे हैं, ताकि तुम्हारी उदारता पर गुल-छर्रे उड़ायें। तुम किस लालच में आकर, निम्न बन और आत्मसम्मान खो, एक डरावनी मूर्ति के सामने लेटकर प्रणाम करते हो, जिसका निर्माण असत्य ने तुम्हारे पिताओं की क़ब्रों पर किया है ? तुम किस अमूल्य कोष की रक्षा अपनी सन्तान के लिए अपने पीछे छोड़ जाने के निमित्त अपनी आज्ञाकारिता से कर रहे हो ?

—तुम्हारी आत्माएँ पादरी की मुट्ठी में हैं जब कि तुम्हारे शरीर शासक की गिरफ्त में और तुम्हारे हृदय दुख और निराशा के अन्धकार में। तुम अपने जीवन की किस वस्तु की ओर इशारा कर कह सकते हो

कि यह हमारी है ? ओ बुज़दिल गुलामो ! जानते हो, यह पादरी कौन है, जिससे तुम डरते हो और जिसे अपने अन्तर के पवित्रतम रहस्यों का अभिभावक समझते हो ? मैं सब स्पष्ट वही कहूँगा, जिसे तुम कहना चाहते हो, पर भय से कह नहीं पाते। यह एक विश्वासघातक है, जिसे मसीह के अनुयायियों ने पवित्र पुस्तक दी थी, पर इसने उसे जो-कुछ तुम्हारे पास है, उसे पकड़ने के लिए एक जाल में बदल दिया है। यह एक पाखंडी है, जिसे मसीह पर विश्वास करनेवालों ने क्रास में जड़ा हुआ उसका एक चित्र दिया था, पर इसने उसे तुम्हारे सर पर एक तलवार के रूप में उठा लिया है। यह एक हत्यारा है, जिसे कमज़ोरों ने अपनी-अपनी गर्दनें सौंप दी हैं और इसने उन्हें एक रस्सी से बाँधकर अपने फौलादी हाथों से पकड़ लिया है, और तब तक न छोड़ेगा, जब तक मिट्टी के बर्तनों की भाँति वे फूटकर चूर-चूर न हो जायँगी। यह एक भूखा भेड़िया है, जो बाड़े में घुस आया है और जिसे भेड़ें अपनी-जैसी ही एक भेड़ समझकर शांतिपूर्वक सोती रहती हैं, पर अँधेरा घिरते ही यह उन पर टूटकर एक-एक को चटकर जाता है। यह एक पेटू है, जो वेदिका की अपेक्षा खाद्य पदार्थों से सज्जित मेज़ का अधिक आदर करता है। यह एक लोभी है, जो एक दमड़ी की खातिर मौत के मुँह तक में जा सकता है। यह अपने भक्तों का रक्त वैसे ही चूसता है, जैसे रेगिस्तान की रेत वर्षा की बूंदों को चूसती है। यह एक धनलोलुप है जो केवल अपनी आवश्यकताओं पर ही ध्यान देता है, और धन का संग्रह करता रहता है। यह एक ठग है, जो दीवाल की दरारों में घुसकर बैठ जाता है और उसी समय बाहर निकलता है, जब घर ढह जाता है। यह एक निर्दयी चोर है, जो एक विधवा का सूखा भोजन और एक अनाथ का फटा वस्त्र तक चुरा लेता है। यह एक अद्‌भुत जानवर है, जिसकी गीध-जैसी चोंच है, चीते-जैसे पंजे हैं, लकड़बग्घे-जैसे दाँत हैं और साँप-जैसा दंशन है।

—तुम पहले इसकी पुस्तक छीन लो, इसके कपड़े उतार लो, इसकी दाढ़ी नोच डालो और जैसी भी बदसलूकी चाहो, वैसा करो। फिर इसकी

हथेली पर चुपके से एक सिक्का रख दो। यह तुम्हें माफ़ कर देगा और प्यार-भरी दृष्टि से मुस्कराता हुआ देखने लगेगा। तुम पहले इसके गाल पर थप्पड़ जड़ो, इसके मुँह पर थूको, पैर से ठोकर मारो और फिर इसे अपने खाने की मेज़ पर बैठाल दो। यह सब भूल जायेगा और सहर्ष अपनी पेटी ढीली कर तुम्हारे खाने और शराब से अपना पेट ठूँस-ठूँसकर भरने लगेगा। तुम पहले इसके देवता की निन्दा करो, इसके धर्म का अपमान करो, इसके विश्वासों का मज़ाक उड़ाओ और फिर इसके पास एक बोतल शराब या एक टोकरी भर फल भेज दो। यह तुमको क्षमा कर देगा और सबके सामने तुम्हारे व्यवहार को उचित ठहरायगा। यह एक औरत को देखकर अपना चेहरा घुमा लेगा और चिल्लाकर कहेगा, माया की इस पुत्री को मेरे सामने से दूर रखो! पर यह मन-ही-मन उसकी प्राप्ति की इच्छा करेगा। यह अविवाहित युवक और युवतियों के प्रेम प्रदर्शित कर रहे जोड़ों को देखकर नाक-भौं सिकोड़ेगा और कहेगा, यह सब दुराचार है! पर एकान्त में आह भरते हुए इच्छा करेगा कि काश, उसे हर्ष और उल्लास से अलग रखनेवाली ये रीतियाँ और रस्में टूट जातीं! यह दूसरों को सीख देगा कि जो तुमसे घृणा करें, उनसे भी तुम प्रेम करो, पर स्वयं यह ऐसा नहीं करेगा। यह उन लोगों से असीम घृणा करता है, जो इसका मखौल उड़ाते हैं, और उनकी आत्माओं को नरक में जाने का श्राप देता है। यह अपनी आँखें यद्यपि आकाश की ओर उठाये रहता है, पर इसका ध्यान साँप की तरह तुम्हारी जेबों के गिर्द कुंडली बनाता होता है। यह यद्यपि तुम्हें 'मेरे बेटे' कहकर सम्बोधित करता है, पर तुमसे पिता-जैसा प्रेम नहीं करता, न इसके होंठों पर दूध-पीते शिशु को देखकर मुस्कान फूटती है, न यह एक बालक को उठाकर अपने कंधे पर बैठाल लेता है। यह गम्भीर मुद्रा में तुमसे कहता है कि हमको इन सांसारिक तुच्छ वस्तुओं से ऊपर उठ जाना चाहिए, क्योंकि ये कोहरे की छाया की तरह नाशवान हैं। पर यदि तुम ठीक से देखो, तो पाओगे कि यह स्वयं अस्तित्व की दुम को और ज़िन्दगी के वस्त्र को

मजबूती से पकड़े हुए है और बीते हुए कल के लिए कुनमुनाता है, आज के दिन के शीघ्र ही बीत जाने के लिए भयभीत है और आनेवाले कल की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा है।

—यह तुमसे दान माँगता है, यद्यपि यह तुमसे अधिक धनवान् है। यदि तुम इसे कुछ देते हो, तो यह सबके सामने तुम्हारी प्रशंसा करता है, और यदि इनकार करते हो, तो यह एकान्त में तुम्हें श्राप देता है। देवालय में यह तुमसे ग़रीब और असहायों की सहायता करने के लिए कहता है, पर जब इसके घर के सामने भूखे और नंगे चिल्लाते हैं और जब एक जमूरतमंद इसके आगे अपना हाथ पसारता है, तब यह न कुछ सुनता है, न देखता है। यह अपनी प्रार्थनाएँ पैसे लेकर बेचता है, और जो उसे नहीं ख़रीदता, वह इसकी समझ में ईश्वर और उसके सन्तों का शत्रु है और स्वर्गिक दया से वंचित रहेगा। मसीह का यह अनुयायी वास्तव में एक खूँखार दरिन्दा है, जो तुम्हें डराता है। ऐसा ही यह देवात्मा भिक्षु है, जो तुम्हारा ख़ून चूसता है। ऐसा ही यह पवित्र पादरी है, जो सीधे हाथ के क्रास का चिह्न बनाता है, पर उलटे हाथ से तुम्हारा हृदय नोचता है। ऐसा ही यह चर्च का प्रतिनिधि है, जिसे तुमने सेवक बनाया था, पर जो स्वामी बन गया, जिसे तुमने एक संत के रूप में रखा था, पर जो एक राक्षस में बदल गया, जिसे तुमने सहायता के लिए चुना था, पर जो भार हो गया।

—यह वही कलुष छाया है, जो तुम्हारी आत्माओं का उस समय से पीछा कर रही है, ज़ब से तुम इस दुनिया में आये हो और तब तक करती रहेगी, जब तक तुम यहाँ रहोगे। यह वही आदमी है, जो इस रात को मेरे अपराधों का फ़ैसला करने आया है और जो मुझे इसलिए दुत्कार रहा है, क्योंकि मेरी आत्मा ने मसीह के शत्रुओं के विरुद्ध विद्रोह किया है, जो तुम्हें प्यार करता है और जो तुम्हें भाई और बहनों के रूप में मानता है और जो तुम्हारी खातिर सूली पर चढ़ा !

खलील का चेहरा दमकने लगा। उसने अपने श्रोताओं की आत्माओं

को नींद से अंगड़ाई भरते हुए पाया और उनके चेहरों पर अपने शब्दों का प्रभाव देखा। अपनी आवाज़ को बुलन्द कर वह फिर कहने लगा--भाइयों और बहनो ! तुमने सुना होगा कि अमीर अमीन-अल-शहेवी ने शेख़ अब्बास को इस गाँव का ज़मींदार बनाया है और सुल्तान ने अमीर को इस प्रदेश का सूबेदार। पर क्या तुमने उस शक्ति को देखा है, जिसने सुल्तान को इस देश का शासक बनाया है ? तुम उस शक्ति के दर्शन न तो साकार रूप में करते हो, न उसकी वाणी को सुनते हो। पर तुम उसकी उपस्थिति का आभास अपने हृदय की अतल गहराइयों में करते हो, और उसकी प्रार्थना में झुककर कहते हो कि हमारा पिता स्वर्ग में निवास करता है। हाँ, तुम्हारा पिता स्वर्ग में रहता है और वही सूबेदारों और सम्राटों को नियुक्त करता है, क्योंकि उसमें ऐसी योग्यता है। पर क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारा पिता, जो तुम्हें प्यार करता है और जिसने सत्य के मार्ग पैगम्बरों-द्वारा तुम्हें दिखाये, वह यह चाहेगा कि तुम्हारे साथ बदसलूकी हो और तुम कुचले जाओ ? क्या तुम विश्वास करते हो कि वह ईश्वर, जो पानी बरसाता है और बीजों को फ़सल बनने की शक्ति देता है और फूलों को खिलाता है, यह चाहेगा कि तुम सब तो भूखे और प्यासे रहो और दूसरा मौज उड़ाये और अपनी तोंद बढ़ाये ? क्या तुम विश्वास करोगे कि वह दैवी शक्ति, जो तुम्हारे हृदयों में पत्नी के लिए प्यार जगाती है, बच्चों के लिए वात्सल्य और बान्धवों के लिए स्नेह, तुम्हारे ऊपर एक निर्दयी स्वामी नियुक्त करेगी कि तुम पर सख्ती हो और तुम अपने दिन गुलामों की तरह काटो ? वह दैवी नियम, जो तुम्हें अस्तित्व के प्रकाश से प्यार करना सिखाता है, क्या तुम्हारे ऊपर उस व्यक्ति को भेजेगा, जो तुम्हें मौत के अंधकार से प्यार करना बताये ? क्या तुम विश्वास करते हो कि प्रकृति ने तुम्हें शक्तिशाली शरीर इसलिए दिया है कि तुम एक कमज़ोर के सामने झुक जाओ ? अगर तुम मेरी इन बातों पर विश्वास नहीं करते हो, जैसा कि कर रहे हो, तो वास्तव में तुम ईश्वर के न्याय को ठुकरा रहे हो और सबके ऊपर एक समान

चमकनेवाले सत्य के प्रकाश की उपेक्षा कर रहे हो ! तुम किस भावनावश उन लोगों की सहायता करते हो, जिनसे तुम्हारी आत्मा घृणा करती है ? ईश्वर की इच्छा से तुम क्यों डरते हो, जिसने हमें मुक्त रूप में भेजा है, पर हम उन्हीं के गुलाम हो गये हैं, जो उसके नियमों का विरोध करते हैं ? तुम अपना सर आकाश की ओर उठाकर उस सर्वशक्तिमान को अपना पिता क्यों कहते हो, जब कि तुम एक कमज़ोर आदमी के आगे अपना शीश नवाकर उसे अपना स्वामी बताते हो ? ईश्वर के बेटे इन्सान के गुलाम कैसे हो गये ? मसीह ने क्या तुम्हें 'भाइयो और बहनो' नहीं कहा था ? पर यह शेख़ अब्बास तुम्हें अपना नौकर कहता है। मसीह ने क्या तुम्हारा सर आकाश की ओर ऊँचा नहीं उठाया था ? पर तुम उसी को जमीन की ओर नीचा कर रहे हो। क्या उसने तुम्हारे हृदयों को प्रकाशित नहीं किया था ? पर अब तुम उसी को अँधेरे में डुबो रहे हो। ईश्वर ने तुम्हारी आत्मा को इस संसार में एक प्रकाश-पुंज बनाकर भेजा है, जो दिन और रात के रहस्यों की खोज में ज्ञान और सौन्दर्य के रूप में बढ़ती जाती है। पर तुम उसे राख से दबाकर बुझा रहे हो। ईश्वर ने तुम्हारी आत्मा को प्रेम और स्वतन्त्रता के साम्राज्य में मुक्त विचरने के लिए डैने दिये हैं। तुम क्यों उन्हें अपने ही हाथों से काटकर ज़मीन पर कीड़ों की तरह रेंग रहे हो ? ईश्वर ने तुम्हारे हृदय में आनन्द के बीज बोये हैं। तुम क्यों उन्हें निकाल-निकालकर चिड़ियों के चुगने और हवा में बिखरने के लिए तट पर फेंक रहे हो ? ईश्वर ने तुम्हें बेटे और बेटियाँ उन्हें सत्य के मार्ग से परिचित कराने और उनके हृदयों को ज़िन्दगी के गीतों से भरने और विरासत में उनके लिए अमूल्य खुशी छोड़ जाने के लिए दिये हैं। पर तुम सोते रहते हो और उन्हें या तो भाग्य, या दुराचारी अधिकारियों और निराशा के पुतलों के हाथों में मरने के लिए छोड़ जाते हो। क्या वह पिता, जो अपने आज़ाद बेटे को गुलाम बनाता है, रोटी माँगने पर उसे आजाद होने के लिए पत्थर नहीं देता है। क्या तुमने खेतों पर उन पक्षियों को नहीं देखा है, जो अपने बच्चों को उडना

सिखाते हैं ? तब तुम क्यों अपने बच्चों को बेड़ियों और जंजीरों का भार ढोना सिखाते हो ? क्या तुमने घाटियों में उन फूलों को नहीं देखा है, जो अपने बीजों को धूप से गरम धरती की कोख में सुरक्षित रखते हैं ? तब तुम क्यों अपने बच्चों को अन्धकार और शीत के सुपुर्द करते हो ?

खलील खामोश हो गया, मानो उसके विचारों और भावनाओं ने फैलकर विशाल आकार ग्रहण कर लिया था और उसके शब्दों को अब किसी पोशाक की आवश्यकता न रही थी। उसने धीमी आवाज़ में फिर कहा—यह शब्द, जो तुम इस रात को सुन रहे हो, वही हैं, जिनके लिए मैं विहार से निकाला गया था। यह आत्मा, जिसका कम्पन तुम अपने हृदय में अनुभव कर रहे हो, वही है, जिसके लिए मैं तुम्हारे सामने बाँधकर लाया गया हूँ। पर अब अगर मुझे तुम्हारे खेतों का मालिक और तुम्हारे चर्च का धर्मोपदेशक कत्ल कर देता है, तो मैं सहर्ष मरूँगा, क्योंकि मैंने उस सत्य को तुम लोगों पर प्रकट कर दिया है, जिसे ये पातकी पाप की संज्ञा देते हैं। इस प्रकार मैंने अपने सर्जक की इच्छापूर्ति कर दी है !

खलील के स्पष्ट स्वर में कुछ ऐसा जादू था कि श्रोता पुरुषों के हृदय में हिलोरें उठने लगीं और वह यों आश्चर्यचकित हो गये, मानो अंधे होकर भी एकाएक देखने लगे हों। स्त्रियों के हृदय उसके स्वर-माधुर्य से पिघल गये और उनकी आँखें आँसुओं से भर गयीं। पर शेख अब्बास और पादरी इल्यास क्रोध से काँपने लगे। उन्होंने युवक को यह सब बोलने से बार-बार रोकना चाहा था, पर सफल न हुए थे। वह उस जन-समूह को किसी दैवी शक्ति के सहारे सम्बोधित कर रहा था, जिसमें अंधड़ की शक्ति और वायु की सुकुमारता थी।

खलील खामोश होकर कुछ पीछे हट आया और रहेल और मरियम की बग़ल में खड़ा हो गया। वहाँ एक गहरी खामोशी छा गयी। मानो खलील की उस कक्ष में मँडराती आत्मा ने उन ग्रामीणों की दृष्टि किसी सुन्दर स्थान की ओर मोड़ दी हो और शेख अब्बास और पादरी से

सोचने-विचारने की शक्ति छीनकर उन्हें अपनी अशांत आत्मा के सम्मुख भयभीत छोड़ दिया हो।

शेख अब्बास उठकर खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर तनाव और पीलापन था। वह अपने चारों ओर खड़े लोगों को डाँटता हुआ खुरदरी आवाज़ में चिंघाड़ा—ओ कुत्तो! तुम्हें क्या हो गया है? क्या तुमको कोई साँप सूँघ गया है या तुम मुर्दा हो गये हो, जो इस बदमाश नास्तिक का मुँह नोचने का तुम में दम नहीं रहा है? क्या इस दुष्ट की आत्मा ने तुम्हारी आत्माओं को जकड़ लिया है और इसकी जादूगरी ने तुम्हारे हाथों में हथकड़ियाँ जड़ दी हैं, जो तुम इसे सजा नहीं दे सकते?

यह कहते हुए उसने अपनी कमर में लटकती तलवार खींच ली और उस नास्तिक युवक की ओर लपका। पर तभी भीड़ में एक मजबूत काठी का पुरुष निकलकर सामने आ गया और आहिस्ते से बोला—मालिक! इस तलवार को म्यान में रखना ही अच्छा होगा! कहीं ऐसा न हो कि यह उठानेवाले पर ही वार करे!

—क्या? एक गुलाम नौकर अपने स्वामी और शुभचिंतक का विरोध करेगा?—शेख अब्बास चीख उठा। उसकी तलवार यद्यपि नीचे झुक गयी थी, पर वह काँप रहा था।

वह पुरुष बोला—एक सच्चा सेवक बुरे कामों में कभी अपने स्वामी की सहायता नहीं करता। इस युवक ने हम लोगों के सामने केवल सच्चाई ही कही है!

एक दूसरा भीड़ में से बाहर निकलकर बोला—इस नौजवान ने ऐसा कुछ नहीं कहा है, जिससे इसे कोई सजा या कोई और दंड मिले!

एक स्त्री बुलन्द आवाज़ में बोली—इसने अपनी बात को सच साबित करने के लिए झूठी कसमें नहीं खायी हैं, न इसने खुदा की शान में कोई बुरी बात ही कही है!

रहेल भी हिम्मत कर सामने निकल आयी और बोली—सच तो यह है कि इस नौजवान ने वही सब कहा है, जो हम कहना चाहते थे, और

इसकी सारी शिकायतें हमारी ही शिकायतें हैं ! वह हमारा दुश्मन है, जो इस नौजवान का बुरा चाहता है !

शेख अब्बास ने अपने दाँत पीसे और ग़र्जा—ओ बदचलन औरत ! क्या तू भी इन लोगों का साथ दे रही है ? क्या तू भूल गयी कि पाँच साल पहले तेरे पति ने मेरा विरोध किया था और उसे क्या सजा मिली थी ?

रहेल यह शब्द सुनते ही दर्द से कराह उठी। वह यों काँपने लगी, मानो कोई भयानक रहस्योद्घाटन हो गया। फिर वह जन-समूह के सामने घूमकर खड़ी हो गयी और बुलन्द आवाज़ में बोली—सुनते हो, अब यह हत्यारा अपने जुर्म का इकबाल कर रहा है ! तुम्हें क्या याद नहीं कि मेरा पति एक खेत में कत्ल किया हुआ पाया गया था और तुमने उसके कातिल की खोज की थी, पर वह नहीं मिला था ? मिलता कैसे ? वह तो इन दीवारों के पीछे छुपा था। मेरा पति एक वीर पुरुष था। तुमने सुना होगा कि उसने शेख के बुरे तौर-तरीकों और उसकी बदकारियों की भर्त्सना की थी और उसके अत्याचारों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठायी थी। अब ईश्वर ने यह प्रकट कर दिया है कि तुम्हारे पड़ोसी और तुम्हारे भाई का हत्यारा कौन है और उसे तुम्हारे सामने लाकर खड़ा कर दिया है ! देखो, ठीक से देखो ! इसके पीले चेहरे पर इसका पाप साफ़ झलक रहा है ! देखो, यह घबरा रहा है और बेचैन है ! देखो, यह तुम्हारी निगाहों से बचने के लिए अपने चेहरे को हाथों से ढँक रहा है ! देखो, यह शक्तिशाली स्वामी एक अविश्वासी सहायक की तरह काँप रहा है ! देखो, यह अधिकारसम्पन्न मालिक एक ग़लती करनेवाले गुलाम की तरह घबरा रहा है ! ईश्वर ने इस हत्यारे को, जिससे तुम डरते हो, नंगा कर दिया है, और इसकी उस कलुषित आतमा को उघाड़ दिया है, जिसने तुम्हारी पत्नियों के बीच मुझे एक विधवा और तुम्हारे बच्चों के बीच मेरी लड़की को एक अनाथ बना दिया है !

रहेल के ये शब्द शेख़ अब्बास के सर पर बिजलियों की तरह टूटे

और पुरुषों की चीखें और स्त्रियों की सिसकियाँ गर्म सलाखों की तरह उसके शरीर को चारों ओर से दागने लगीं। पादरी ने हाथ पकड़कर उसे अपने आसन पर बैठा दिया और स्वयं खड़ा होकर काँपती आवाज़ में सिपाहियों को हुक्म देने लगा—इस औरत को पकड़ लो, जो तुम्हारे मालिक को नाहक बदनाम कर रही है और इसे इस नास्तिक के साथ घसीटकर अँधेरी कोठरी में डाल दो! जो कोई भी रुकावट डालेगा या जो कोई इन अपराधियों की सहायता करेगा, कान खोलकर सुन लो, वह पवित्र चर्च से निष्कासित कर दिया जायगा!

पर सिपाही अपने स्थानों से नहीं हिले, न उन्होंने पादरी की इस आज्ञा पर कोई ध्यान ही दिया। वे ख़ामोश खड़े, बँधे खलील, और रहेल और उसकी बेटी मरियम को देखते रहे। रहेल खलील के एक ओर खड़ी थी और मरियम दूसरी ओर। दोनों उसके डैने-जैसी दीखती थीं और यों लगता था कि खलील अभी हवा को चीरता हुआ ऊपर उड़ चलेगा।

पादरी की दाढ़ी क्रोध में काँपी और वह गर्जा—क्या तुम अपने मालिक की नमकहरामी इस नास्तिक युवक और इस बदचलन औरत की खातिर करोगे? डूब मरने की बात है।

एक वृद्ध सिपाही ने उत्तर दिया—हमने शेख़ अब्बास की नौकरी भोजन और आश्रय के लिए की थी, पर हम उसके गुलाम नहीं हैं!—यह कहते हुए उसने अपना कोट और सर पर की पगड़ी उतारकर शेख़ के कदमों पर फेंक दी और कहा—मुझे अब इस पोशाक की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि क़त्लेआम की इस जगह पर मैं अपनी आत्मा को गिरवीं रखकर अधिक समय तक दुखी नहीं बनना चाहता हूँ!

दूसरे सिपाहियों ने भी इस सिपाही का अनुसरण किया और उनके चेहरों पर स्वतंत्रता और मुक्ति की चमक चमकने लगी।

पादरी इल्यास कुछ समय तक खड़ा सोचता रहा। जब उसे निश्चय हो गया कि अब उसका यहाँ कोई अधिकार नहीं चलेगा, वह खलील के गाँव में आने के कुसमय की भर्त्सना करता हुआ वहाँ से चला गया।

शीघ्र ही एक मनुष्य भीड़ में से आगे निकल आया और उसने खलील के बंधन खोल दिये। उसने शेख़ अब्बास की ओर देखा, जो अब एक मुर्दे की तरह अपने आसन पर लुढ़का पड़ा था, और कठोर और बुलन्द आवाज़ में वह उसे सम्बोधित कर बोला—इस युवक ने, जिसे तुम बाँधकर दंड देने के लिए हमारे सामने लाये थे, हमारे अँधेरे हृदयों को प्रकाशित कर दिया है, और हमारी आँखों को ज्ञान और सत्य के मार्ग की ओर मोड़ दिया है। इस अभागी विधवा ने, जिसे तुम बदचलन कहते हो, हम-सबके आगे उस भयानक रहस्य को प्रकट कर दिया है, जो छह साल से छुपा था। हम यहाँ शीघ्रता में एक निरपराधी का अभियोग सुनने और एक सत्यशील को दंड मिलते देखने के लिए भागकर आये थे। पर अब हमारी आँखें खुल गयी हैं और ईश्वर ने तुम्हारे अन्याय और पाप को नंगा कर दिया है। हम तुम्हें अब एकान्त में छोड़कर चले जायँगे और कोई भी तुम्हारे पास नहीं फ़टकेगा। ईश्वर जो दंड तुम्हें देना चाहेगा, स्वयं देगा।

उस विशाल दीवानख़ाने में फिर चारों ओर से आदमी और औरतों की आवाजें सुनायी पड़ने लगीं। एक बोला—आओ, हम-सब पाप और अन्याय की इस जगह को शीघ्र छोड़ दें!

दूसरा बोला—हम-सब रहेल के मकान पर चलें और इस नौजवान की ज्ञान-भरी बातें सुनें!

तीसरा चिल्लाया—इस-सबका फैसला हमको खलील पर छोड़ देना चाहिए। हमारे लिए क्या ठीक होगा, वह इसे हमसे ज्यादा जानता है!

चौथा बोला—अगर हम न्याय चाहते हैं, तो सुबह हम अमीर अमीन के पास चलें और शेख अब्बास के पापों से उसे परिचित करायें और सज़ा देने को कहें!

पाँचवाँ बोला—हम अमीर से चलकर यह सिफ़ारिश भी करें कि वह खलील को इस गाँव का मुखिया बना दे।

छठा बोला—बड़े पादरी के पास चलकर हम यह शिकायत क्यों न

करें कि इन सारे गुनाहों में पादरी इल्यास भी शरीक था ?

जब चारों ओर से ऐसी आवाजें उठने लगीं, जो शेख़ अब्बास के बेचैन सीने में नुकीले तीरों की तरह चुभ रही थीं, खलील हाथ उठाकर उस अशांत जन-समूह को शांत करने लगा और समझाता हुआ बोला—मेरे भाइयो और बहनो ! जल्दबाजी करना ठीक नहीं। सोचो और समझो ! मैं तुमसे तुम्हारे प्रति अपने प्रेम के नाम पर यह भीख माँगता हूँ कि तुम अमीर के पास न जाओ। वह शेख़ के खिलाफ़ कोई फ़ैसला नहीं करेगा, क्योंकि जङ्गली जानवर कभी अपने साथी पर झपटता नहीं है। बड़ा पादरी भी इस पादरी के खिलाफ़ कोई शिकायत नहीं सुनेगा, क्योंकि वह जानता है कि हिस्से-बाँट होनेवाला घर बहुत जल्द बरबाद हो जाता है। अमीर से मुझे इस गाँव का मुखिया बनाने के लिए भी न कहना, क्योंकि कभी भी एक नेक नौकर एक दुश्चरित्र मालिक की सहायता नहीं करना चाहता। अगर तुम मुझे अपने प्रेम और अपनी सहानुभूति का योग्य पात्र समझते हो, तो मुझे बस अपने बीच रहने दो और अपने सुख-दुख का साथी बनाओ। मैं तुम्हारे साथ खेतों में काम करूँगा और तुम्हारे साथ ही मकानों में आराम करूँगा। अगर मैं तुम्हारे-जैसा ही जीवन नहीं बिताऊँगा, तो मुझमें और उस व्यक्ति में क्या अन्तर होगा, जो अच्छाइयों का उपदेश देता है, पर बुराइयाँ करता है। हम जड़ के ऊपर कुठाराघात कर चुके हैं। अब हमें शेख़ अब्बास को अपने अन्तःकरण के न्यायालय में ईश्वर के सिंहासन के सम्मुख छोड़ देना चाहिए, जहाँ वह अपना दंड पा लेगा।

यह कहकर खलील ने वह कक्ष छोड़ दिया और बाहर निकल आया। जन-समूह उसके पीछे-पीछे चलने लगा। मानो उसमें कोई अलौकिक शक्ति थी, जो उन्हें परिचालित कर रही थी।

शेख़ अपने कक्ष में अकेला पड़ा रहा। उसकी दशा उस मीनार जैसी थी, जो खंडहर के बीच एकाकी खड़ी हो, या उस सिपहसलार की भाँति, जिसने युद्ध में पराजय पायी हो। जब जन-समूह चर्च के सहन में पहुँचा,

उस समय आकाश में चाँद उगा था और उसकी रुपहली चाँदनी चारों ओर फैली थी। खलील जन-समूह के सामने खड़ा हो गया। स्त्री और पुरुषों की निगाहें उसपर यों जम गयीं, मानो भेड़ें अपने चरवाहे को घूर रही हों। उसकी अन्तरात्मा दुख से भर उठी। उसे वे निर्धन ग्रामीण सताये हुए लोगों के प्रतीक लगे और बर्फ से ढँके झोपड़े अभाव और अज्ञान में डूबी धरती के रूप में। वह उस पैग़म्बर की भाँति शान्त खड़ा था, जो युगों का चीत्कार सुनता है। एकाएक उसकी भाव-भंगिमा बदल गयी और आँखें फैलकर बड़ी हो गयीं, मानो अपनी आत्मा के सहारे उसने पूर्व के उन तमाम लोगों को देख लिया था, जो अपनी गुलामी की जंज़ीरों और बेड़ियों को घसीटते हुए घाटियों से गुजर रहे थे। उसने अपना एक हाथ आकाश की ओर उठा लिया और उस आवाज में बोला, जिसमें सागर के लहरों की गर्जन थी—इन घाटियों की गहराइयों की अतल गहराई से, ऐ स्वतन्त्रते, हम तुझे पुकारते हैं! हमारी पुकार सुन! इस गहन अँधेरे में हम तेरे लिए हाथ उठाते हैं। हमारी ओर देख! इस बर्फीली जमीन पर लेटकर हम तुझे साष्टांग प्रणाम करते हैं। हम पर दया कर! हम तेरे विशाल सिंहासन के आगे खड़े हैं। हमारे शरीर पर हमारे पूर्वजों के ख़ून से रंगे हुए वस्त्र हैं। हमारे सर पर उन कब्रों की धूल है, जहाँ वे दफनाये गये थे। हमारे हाथों में वे तलवारें हैं, जो उनके कलेजों में घुसेड़ी गयी थीं। हम उन भालों को पकड़े हुए हैं, जिनसे उनके सीने छेदे गये थे। हम उन ज़ंजीरों को खींच रहे हैं, जिनसे उनके पैरों की गति शिथिल हो गयी थी। हम वह चीख चिल्ला रहे हैं, जो उनके घायल कंठों से निकली थी। हम वह सिसकारियाँ भर रहे हैं, जिनसे उनकी अँधेरी कोठरियाँ भरी थीं। हम वह प्रार्थना कर रहे हैं, जो उनके हृदय से यातनाओं के बीच फूटी थीं। ओ स्वतंत्रते! हमारी ओर देख और सुन! नील नदी के उद्गम-स्थान से फरात के मुहाने तक आत्माएँ एक स्वर से विलाप कर रही हैं। अरब के सुदूर किनारों से लेबनान के इन पहाड़ों तक मौत की पीड़ा से काँपते हुए हाथ तेरी ओर बढ़ रहे हैं।

खाड़ी के तटों से रेगिस्तान के छोरों तक हृदय के आँसुओं से डबडबायी आँखें तेरी ओर उठ रही हैं। ऐ स्वतंत्रते! हमारी ओर ध्यान दे और देख!

—निर्धनता और अपमान की छाया में खड़े अपने झोपड़ों में से यह-सब तेरे सामने अपने सीने नंगे कर रहे हैं। अज्ञान के अंधकार में डूबे हुए घरों की शून्यता में से यह-सब अपने हृदय तेरे सामने खोल रहे हैं। झूठ और अत्याचार के कोहरे से घिरे निवास-स्थानों के कोने में से इन-सबकी आत्माएँ तेरी ओर बढ़ रही हैं। ऐ स्वतंत्रते! हमारी ओर देख और हमपर दया कर! स्कूल और शिक्षालयों के निराश विद्यार्थी तुझे निहार रहे हैं, और चर्च और मस्जिदों में ठुकरायी हुई पुस्तकें तेरी ओर मुड़ रही हैं। न्यायालय में युगों से उपेक्षित कानून तुझे पुकार रहा है। ऐ स्वतंत्रते! हम पर करुणा कर और हमारी पुकार सुन! हमारी उजाड़ बाजारों में दूकानदार अपने दिन बदलकर काट रहे हैं और उनकी कमाई पश्चिम के चोर हड़प रहे हैं और कोई भी उन्हें सही राय नहीं देता। हमारे ऊसर खेतों में किसान अपने नाखूनों से धरती खोद रहे हैं और अपने हृदय के बीज बोकर उन्हें अपने आँसुओं से सींच रहे हैं, पर सिवा काँटों के अपनी उगायी हुई फसल नहीं काट पाते और कोई भी उन्हें सीख नहीं देता। हमारे सूखे मैदान में हमारे खानाबदोश भाई भूखे और नंगे घूम रहे हैं और कोई भी उनपर दया नहीं करता। ऐ स्वतंत्रते! हम से कुछ कह और हमें शिक्षा दे!

—हमारी बकरियाँ चारा और घास की जगह छालें और काँटे चर रही हैं। हमारे बछड़े भूसे की जगह वृक्ष की जड़ें और दाने की जगह सूखे पौधे चबा रहे हैं। ऐ स्वतंत्रते! आ और हमारी रक्षा कर! आदि काल से रात्रि की कालिमा हमारी आत्माओं पर छायी है। सुबह कब होगी? हम एक क़ैदखाने को छोड़कर दूसरा क़ैदखाना बदल रहे हैं और ज़माना गुज़रता हुआ हमें चिढ़ा रहा है। ज़माने की यह मखौल कब बन्द होगी? हम एक जुए को छोड़कर दूसरे भारी जुए के नीचे अपनी गर्दन बढ़ा रहे हैं।

दुनिया के लोग दूर खड़े हम पर हँसते हैं। हम कब तक इन लोगों की यह हँसी सहन करेंगे ? हमारे पैर एक बेड़ी को छोड़कर दूसरी बेड़ी घसीट रहे हैं। न यह हमारी बेड़ियाँ खत्म होती हैं, न हम। कब तक यों गुलामों की तरह हम ज़िन्दा रहेंगे ?

—मिस्र की परतंत्रता से बाबुल के पतन तक, फारस के अत्याचार से यूनान की गुलामी तक, रोम और मंगोलों की निर्दयता से योरुप की लोलुपता तक, हम कहाँ जायें ? इस पथरीले मार्ग का अन्त हम कब पायँगे ? फिरऔन (मिस्र के सुल्तान) के शिकंजे और नेबकदनज़र (दमिश्क का बादशाह) के जबड़े, सिकन्दर की गिरफ़्त और हिरौदीस (यूहदिया का बादशाह) की तलवार, नीरू (रोम का सम्राट) के पंजे और दैत्य के दाँत···हम किसका शिकार बनें ? कब मौत हमें छुटकारा देगी ताकि हम इस ध्वंस में विश्राम कर सकें ?

—हमारे बाज़ुओं की शक्ति से उनके देवताओं के सम्मान में मस्जिदों और देवालयों का निर्माण हुआ। हमने अपनी पीठ पर पत्थरों और शिलाओं का बोझ ढोया और उनकी सुरक्षा के लिए दीवारें और बुर्ज खड़े किये। हमारे शारीरिक बल से पैरामिड बने, जिनसे उनका नाम अमर है। हम कब तक दूसरों के लिए महल और कोठियाँ बनायँगे और स्वयं ढूहों और झोपड़ों में रहेंगे ? हम कब तक अनाज से दूसरों की खत्तियाँ और खलिहान भरेंगे और स्वयं घास-पात खायेंगे ? हम कब तक दूसरों के लिए सिल्क और ऊनी कपड़ा बुनेंगे और स्वयं गूदड़ और चिथड़े पहनेंगे ? उन्होंने अपनी धूर्तता और कुटिलता से एक परिवार के ख़िलाफ़ दूसरा परिवार, एक वंश के ख़िलाफ़ दूसरा वंश और एक जाति के ख़िलाफ़ दूसरी जाति खड़ी की है। हम कब तक इस क्रूर आँधी में धूल के समान बिखरते रहेंगे और कब तक इस सड़ी लाश के चारों ओर भूखे-सिंह शावकों की भाँति लड़ते रहेंगे ? अपने राज्य को सुरक्षित रखने और अपने मस्तिष्क की शांति को भंग न होने देने के लिए उन्होंने अरबों के ख़िलाफ़ दूसों (अरब की एक जाति) को हथियारबंद किया, सुन्नियों के

खिलाफ़ शियों को भड़काया, बद्धुओं के खिलाफ़ कुर्दों (परस्पर विरोधी सम्प्रदाय) को उत्तेजित किया और ईसाइयों के खिलाफ़ मुसलमानों को बरगलाया। कब तक एक भाई दूसरे भाई का कत्ल अपनी माँ के सीने पर करता रहेगा? कब तक क्रास (ईसाइयों का धार्मिक चिह्न) और हिलाल (मुसलमानों का धार्मिक चिह्न, चाँद) एक-दूसरे से अलग देव-स्थानों में होते रहेंगे?

—ऐ स्वतंत्रते! हमारी ओर ध्यान दे! ओ जगजननी! हमारी पुकार सुन! बोल! एक आदमी की ही ज़बान पर चढ़कर बोल! एक चिंगारी सूखे हुए फूस को जलाने के लिए बहुत है। अपने डैनों की फड़फड़ाहट से एक ही व्यक्ति की आत्मा को जगा! बिजली छुपानेवाला एक ही बादल तमाम घाटियों और कन्दराओं को प्रकाशित कर देता है। अपनी शक्ति से इन काले बादलों को छिन्न-भिन्न कर दे और तूफान की भाँति नीचे उतर और वज्र की चोट से उन सिंहासनों को लौट दे, जो हड्डियों और बोटियों पर बने हैं और दान और रिश्वत के सोने से मढ़े हैं और खून और आँसुओं से तर है! ऐ स्वतंत्रते! हमारी पुकार सुन! ऐ सरस्वती की पुत्री! हम पर करुणा कर! ऐ मूसा की संगिनि! हमें बंधन-मुक्त कर! ओ मसीह की दुलहन! हमें शिक्षा दे!···तू हमारे हृदय में या तो शक्ति भर दे, ताकि हम जीवित रह सकें या हमारे शत्रुओं कों और ताकत दे, ताकि हम मरकर न टूटनेवाली निद्रा में विश्राम करें!

खलील जब आकाश को यों सम्बोधित कर रहा था, तब ग्रामीणों की निगाहें उसपर एकटक जमी थीं। उनका प्यार उसकी आवाज़ की मधुरता में घुल रहा था। उनकी आत्मा उसकी आत्मा के साथ विलाप कर रही थी और उनके सीनें उसके सीने के साथ धड़क रहे थे। वे-सब उस समय उसके साथ यों थे, जैसे आत्मा के साथ शरीर होता है। जब वह यह कह चुका, उसने जन-समूह की ओर अपना चेहरा कर लिया और शांत स्वर में बोला—रात ने शेख अब्बास के महल में हमको इसलिए जमा किया था

दुनिया के लोग दूर खड़े हम पर हँसते हैं। हम कब तक इन लोगों की यह हँसी सहन करेंगे ? हमारे पैर एक बेड़ी को छोड़कर दूसरी बेड़ी घसीट रहे हैं। न यह हमारी बेड़ियाँ खत्म होती हैं, न हम। कब तक यों गुलामों की तरह हम ज़िन्दा रहेंगे ?

—मिस्र की परतंत्रता से बाबुल के पतन तक, फारस के अत्याचार से यूनान की गुलामी तक, रोम और मंगोलों की निर्दयता से योरुप की लोलुपता तक, हम कहाँ जायें ? इस पथरीले मार्ग का अन्त हम कब पायँगे ? फिरऔन (मिस्र के सुल्तान) के शिकंजे और नेबकदनज़र (दमिश्क का बादशाह) के जबड़े, सिकन्दर की गिरफ़्त और हिरौदीस (यूहदिया का बादशाह) की तलवार, नीरू (रोम का सम्राट) के पंजे और दैत्य के दाँत···हम किसका शिकार बनें ? कब मौत हमें छुटकारा देगी ताकि हम इस ध्वंस में विश्राम कर सकें ?

—हमारे बाजुओं की शक्ति से उनके देवताओं के सम्मान में मस्जिदों और देवालयों का निर्माण हुआ। हमने अपनी पीठ पर पत्थरों और शिलाओं का बोझ ढोया और उनकी सुरक्षा के लिए दीवारें और बुर्ज खड़े किये। हमारे शारीरिक बल से पैरामिड बने, जिनसे उनका नाम अमर है। हम कब तक दूसरों के लिए महल और कोठियाँ बनायँगे और स्वयं ढूहों और झोपड़ों में रहेंगे ? हम कब तक अनाज से दूसरों की खत्तियाँ और खलिहान भरेंगे और स्वयं घास-पात खायेंगे ? हम कब तक दूसरों के लिए सिल्क और ऊनी कपड़ा बुनेंगे और स्वयं गूदड़ और चिथड़े पहनेंगे ? उन्होंने अपनी धूर्तता और कुटिलता से एक परिवार के ख़िलाफ़ दूसरा परिवार, एक वंश के ख़िलाफ़ दूसरा वंश और एक जाति के ख़िलाफ़ दूसरी जाति खड़ी की है। हम कब तक इस क्रूर आँधी में धूल के समान बिखरते रहेंगे और कब तक इस सड़ी लाश के चारों ओर भूखे-सिंह शावकों की भाँति लड़ते रहेंगे ? अपने राज्य को सुरक्षित रखने और अपने मस्तिष्क की शांति को भंग न होने देने के लिए उन्होंने अरबों के ख़िलाफ़ दूसों (अरब की एक जाति) को हथियारबंद किया, सुन्नियों के

ख़िलाफ़ शियों को भड़काया, बह्रुओं के ख़िलाफ़ कुर्दों (परस्पर विरोधी सम्प्रदाय) को उत्तेजित किया और ईसाइयों के ख़िलाफ़ मुसलमानों को बरगलाया। कब तक एक भाई दूसरे भाई का कत्ल अपनी माँ के सीने पर करता रहेगा? कब तक क्रास (ईसाइयों का धार्मिक चिह्न) और हिलाल (मुसलमानों का धार्मिक चिह्न, चाँद) एक-दूसरे से अलग देव-स्थानों में होते रहेंगे?

—ऐ स्वतंत्रते! हमारी ओर ध्यान दे! ओ जगजननी! हमारी पुकार सुन! बोल! एक आदमी की ही ज़बान पर चढ़कर बोल! एक चिंगारी सूखे हुए फूस को जलाने के लिए बहुत है। अपने डैनों की फड़फड़ाहट से एक ही व्यक्ति की आत्मा को जगा! बिजली छुपानेवाला एक ही बादल तमाम घाटियों और कन्दराओं को प्रकाशित कर देता है। अपनी शक्ति से इन काले बादलों को छिन्न-भिन्न कर दे और तूफान की भाँति नीचे उतर और वज्र की चोट से उन सिंहासनों को लौट दे, जो हड्डियों और बोटियों पर बने हैं और दाँन और रिश्वत के सोने से मढ़े हैं और खून और आँसुओं से तर है! ऐ स्वतंत्रते! हमारी पुकार सुन! ऐ सरस्वती की पुत्री! हम पर करुणा कर! ऐ मूसा की संगिनि! हमें बंधन-मुक्त कर! ओ मसीह की दुलहन! हमें शिक्षा दे!···तू हमारे हृदय में या तो शक्ति भर दे, ताकि हम जीवित रह सकें या हमारे शत्रुओं कों और ताकत दे, ताकि हम मरकर न टूटनेवाली निद्रा में विश्राम करें!

खलील जब आकाश को यों सम्बोधित कर रहा था, तब ग्रामीणों की निगाहें उसपर एकटक जमी थीं। उनका प्यार उसकी आवाज़ की मधुरता में घुल रहा था। उनकी आत्मा उसकी आत्मा के साथ विलाप कर रही थी और उनके सीनें उसके सीने के साथ धड़क रहे थे। वे-सब उस समय उसके साथ यों थे, जैसे आत्मा के साथ शरीर होता है। जब वह यह कह चुका, उसने जन-समूह की ओर अपना चेहरा कर लिया और शांत स्वर में बोला—रात ने शेख़ अब्बास के महल में हमको इसलिए जमा किया था

कि हम दिन का उजाला देख सकें। और अत्याचार इस भीषण सर्दी में हमको इसलिए लाया है कि हम एक-दूसरे को समझ सकें और अनन्त आत्मा के डैनों के नीचे अबोध बालकों के रूप में इकट्ठा हो सकें।

यह कहते हुए उसने वह स्थान छोड़ दिया और रहेल और मरियम के साथ उनके झोपड़े की ओर चल दिया। जन-समूह बिखर गया और ग्रामीण अपने-अपने रास्तों पर हो लिये। जो-कुछ उन्होंने सुना और देखा था, वे-सब उसपर विचार करने लगे और अपनी सुन्दर, नयी जिन्दगी का राग सुनने लगे।

एक घंटा भी न बीता होगा कि झोंपड़ों की रोशनियाँ गुल हो गयीं। खमोशी का चिलमन गाँव पर खिच गया और स्वप्नों के पंखों पर ग्रामीणों की आतमाएँ विचरने लगीं। केवल शेख़ अब्बास की आत्मा ही रात के अँधेरे में जागती रही। वह अपने पापों के लिए काँप रही थी अपने ही विचारों से अशांत थी।

दो महीने बीत गये। खलील अपनी आत्मा का रहस्य ग्रामीणों के हृदय में उँडेलता रहा, उन्हें प्रत्येक दिन बताता रहा कि उनके क्या-क्या अधिकार हैं और वह कैसे छीन लिये गये हैं और दुराचारी भिक्षु कैसे अपना जीवन यापन करते हैं। उसने उनको उनके निर्दयी स्वामियों की निर्दयता की कहानियाँ सुनायीं और इस प्रकार ग्रामीणों और उसके बीच एक मजबूत कड़ी जुड़ती गयी, जो उस दैवी नियम के समान थी, जो अनेक जीवात्माओं को एक साथ बाँधती है। वे सहर्ष उसकी बातें सुनते थे। मानो सूखी धरती वर्षा की बूंदों का सोल्लास स्वागत कर रही हो। वे एकान्त में उसके शब्दों को दुहराते और उनके अर्थों की आत्माओं का प्रेम के शरीर के साथ गठबंधन करते। वे अब पादरी इल्यास की बातों पर ध्यान नहीं देते, जो शेख़ अब्बास के पापोद्घाटन के दिन से उनकी

चाटुकारिता करने लगा था और उनसे बहुत ही नरमी से बातचीत करता था, जब कि वह पहले बहुत कठोर था।

और वह शेख अब्बास ? उसे कोई प्रेतात्मा सताने लगी थी और वह पागल-जैसा हो गया। वह एक बंदी चीते की तरह अपने महल की दीवारों के अन्दर टहला करता था। वह अपने नौकरों को बुलन्द आवाज़ में पुकारता था, और आवाज़ दीवारों से टकराकर लौट आती थी। वह सहायता के लिए अपने आदमियों को आवाज़ देता था, पर कोई नहीं आता था, सिवा उस दुखिया पत्नी के, जिसने उसकी सख्ती यों सही थी, जैसे किसानों ने उसका अत्याचार सहा था। जब चालीसवाँ (ईसाइयों के चालीस रोजे) आया और उसी के साथ प्रकृति ने बहार के आने की सूचना दी, शेख अब्बास की ज़िन्दगी के दिन चुक गये। जाड़ा बीतते-बीतते वह भय और पीड़ा से मर गया और उसकी आत्मा अपने कुकृत्यों का लेखा-जोखा लेकर उस सिंहासन के सामने नंगी खड़ी होने के लिए चली गयी, जिसके अस्तित्व का हम अनुभव तो करते हैं, पर जिसे देख नहीं पाते।

उसकी मृत्यु के बारे में ग्रामीणों में भाँति-भाँति की धारणाएँ थीं। कुछ का कहना था कि उसके होश-हवास गुम हो गये थे और वह पागलों की अवस्था में मरा। कुछ का कहना था कि अधिकारों के छिन जाने से निराशा ने उसकी जिन्दगी को डँसा था और उसने आत्महत्या कर ली। पर उसकी पत्नी को सान्त्वना देने जानेवाली औरतों ने लौटकर अपने पतियों को यह बताया था कि वह भय और आतंक से मरा, क्योंकि समन-अल-रामी की रूह खून से लिथड़े वस्त्रों में उसके सामने आती थी और आधी रात के समय ज़बरदस्ती उसे उस स्थान पर ले जाती थी, जहाँ वह पाँच साल पहले मरा हुआ पाया गया था।

जब बहार का महीना आया, तो उसने ग्रामीणों पर खलील और रहेल की लड़की मरियम के गुप्त प्रेम को प्रकट किया। उनके चेहरे खुशी से दमक उठे और उनके हृदय उल्लास से नाचने लगे। अब उनकी यह

आशंका भी जाती रही थी कि जिस युवक ने उनकी अन्तरात्मा को एक भव्य लोक के दर्शन कराये थे, वह किसी दिन उनको छोड़कर कहीं और चला जायगा। वे एक-दूसरे का हाथ पकड़कर खुशी मनाते हुए घूम-घूमकर चारों ओर यह कहने लगे कि वह अब हमको छोड़कर कहीं नहीं जायेगा और हमारा प्यारा पड़ोसी बना रहेगा।

कटनी के दिनों में सब किसान अपने-अपने खेतों पर गये और उन्होंने अपनी-अपनी फ़सलें काटकर खलिहानों में जमा कीं। अब शेख़ अब्बास वहाँ नहीं था, जो उनकी फ़सल पर कब्ज़ा कर अपनी खत्तियों और कोठों में ले जाता। हर किसान ने जो बोया था, उसे काटा और उनके झोपड़े अनाज के दानों और शराब और तेल से भर गये। खलील उनकी मेहनत और खुशी का साथी रहा। फ़सल इकट्ठा करने, अंगूर पेरने और फल तोड़ने में वह उनको सहायता देता। वह उनसे न उनके प्यार में अलग था, न उनके परिश्रम में। उस समय से आज तक उस गाँव के किसान जो आँसुओं से बोते हैं, उसे खुशी से काटते हैं और धूप और पसीने से जो पौधे लगाते हैं उल्लास से उनके फल तोड़ते हैं। वह ज़मीन उनकी ज़मीन है, जिसे वे जोतते हैं और वह बाग़ उनका बाग़ है, जहाँ वे पौधे रोपते हैं।

इस घटना को घटे आधी शताब्दी हो गयी है। लेबनान की जनता में जागरण आ गया है। जब कोई मुसाफिर उधर से गुज़रता है, वह रुककर उस गाँव का रूप निहारता है, जो घाटी की बगल में किसी दुलहन की तरह स्थित है। वह उन झोपड़ों की ओर आश्चर्य से देखता है, जो उतने ही सुन्दर हैं, जितने नगरों और उद्यानों में बने उल्लास-गृह होते हैं। अगर वह मुसाफ़िर किसी ग्रामीण से शेख़ अब्बास के बारे में पूछता है, तो वह उसे पत्थरों के ढेर और टूटी हुई दीवारों की ओर इशारा कर बताता है, यह उसकी जगह है। यह उसकी ज़िन्दगी का इतिहास भी है। और अगर वह खलील के बारे में पूछता है, तो वह आकाश की ओर हाथ उठाकर कहता है—देखो ? हमारा खलील वहाँ

रहता है ! उसकी ज़िन्दगी का इतिहास हमारे पितामहों ने हमारे हृत्पृष्ठों पर सुनहरे अक्षरों में लिखा है और अब काल भी अपने कठोर हाथों से उन्हें मिटा नहीं पायेगा ।

□

विद्रोही आत्मायें

अमीर न्याय-आसन पर पैर-पर-पैर रखे बैठा था। उसके दोनों ओर राज्य के विचारक बैठे थे, जिनके झुर्रीदार चेहरे पर धर्म-ग्रन्थों और शास्त्रों के पृष्ठ बोलते थे। उनके निकट ही तलवार पकड़े और बर्छियाँ उठाये सैनिक खड़े थे। सम्मुख जनता थी। कुछ व्यक्ति तमाशा देखने आये थे। और कुछ अपने आत्मीयों का भाग्य-निर्णय सुनने। वे सब दुख-भरी साँसें छोड़ते और नेत्रों से दीनता टपकाते हुए सर झुकाये खड़े थे, मानो अमीर से दृष्टि मिलते ही उनके हृदय भय और आतंक से थर्रा उठेंगे!

परिषद के बैठ जाने के पश्चात जब न्याय का समय निकट आया, अमीर ने हाथ उठाकर चीखती-जैसी आवाज़ में कहा—अपराधियों को एक-एक कर पेश करो और उनके कुकृत्यों और अपराधों से मुझे अवगत कराओ!

कारागार का द्वार खोल दिया गया। उसकी काली दीवारें जबड़ा फाड़कर जम्हाई लेते हुए जंगली जानवर के खुले मुँह के समान चमक उठीं। हर कोने से हथकड़ियों और बेड़ियों की झनझनाहट के साथ बन्दियों की आहों और कराहों की आवाज़ें आने लगीं। कुछ क्षण बाद दो सैनिक एक युवक को लिये हुए कारागार से बाहर निकले। उसके हाथ काँटेदार हथकड़ी से जकड़े थे। उसकी कठोर और गम्भीर आकृति उसकी सशक्त आत्मा और वीर हृदय की परिचायक थी। उन्होंने उसे परिषद के सम्मुख खड़ा कर दिया।

अमीर ने उसे एक मिनट तक घूरा और बोला—इस आदमी का अपराध क्या है ? यह मेरे सामने सर उठाये ऐसे खड़ा है, जैसे कानून की गिरफ्त में न होकर यह किसी सम्मान के स्थान पर खड़ा हो।

एक सदस्य ने उत्तर दिया—श्रीमान, यह क़ातिल है। इसने कल हुज़ूर के एक दरबारी पर आक्रमण किया और उसकी हत्या कर दी। वह दौरे पर सरकारी काम से गाँव जा रहा था। गिरफ्तारी के समय भी इसके हाथ में ख़ून से सनी तलवार थी।

अमीर क्रोध से अपने आसन पर उचका। उसकी आँखें जल उठीं। वह ऊँची, कर्कश आवाज़ में दाहाड़ा—वापस ले जाओ इसे वहीं अँधेरे में ! इसके शरीर को जंजीरों से ढँक दो ! कल सूरज निकलने से पहले ही इसी की तलवार से इसका सर काट देना और लाश को जंगल में फेंक देना ताकि गीध और जंगली जानवर इसका सफाया कर दें और हवा लाश की सड़ाँध को इसके संबंधियों के नथुनों तक पहुँचा दे !

युवक कारागार में वापस ले जाया गया। जन-समूह की करुणार्द्र दृष्टि और गहरी आहें उसके पीछे-पीछे गयीं, क्योंकि वह युवा था, अपने जीवन के वसंत में था और था सुन्दर और मज़बूत काठी का।

सैनिक दूसरी बार उपस्थित हुए। इस बार वे कारागार से एक दुबली पर अत्यंत सुन्दर लड़की को लाये। उसका चेहरा व्यथा और वेदना के कफ़न से ढँका था, आँखें आँसुओं से तर थीं और सिर खेद और पश्चाताप से झुका था। अमीर ने उसकी ओर देखकर पूछा—इस बीमार लड़की ने क्या किया था ? यह मेरे सामने ऐसी खड़ी है, जैसे सत्य की बगल में छाया खड़ी होती है।

एक सैनिक ने उत्तर दिया—श्रीमान ! यह बदचलन है। इसका पति एक रात को जब घर वापस आया, तो उसने इसको इसके प्रेमी की बाँहों में पाया। उसने इसी कारण इसको पुलीस में दे दिया। इसका प्रेमी फरार है।

अमीर उसकी ओर इस बुरी तरह घूरने लगा कि वह लजाकर पृथ्वी

की ओर देखने लगी। एकाएक वह मोटी आवाज़ में बोला—इसे भी उसी अँधेरे में वापस ले जाओ और काँटों की सेज पर सुलाना, ताकि इसे उस सेज की याद आये, जो इसने अपनी निर्लज्जता से नापाक कर दी है! इसे मिर्च-मिली शराब पिलाना, ताकि फिर से यह उस चुम्बन का स्वाद चख सके जो वर्जित था! सुबह होते ही इसे नंगी हालत में घसीटकर शहर के बाहर ले जाना और पत्थरों से मारना और इसकी लाश को वहीं छोड़ देना, ताकि भेड़िए इसके गोश्त का स्वाद लें और कीड़े-मकोड़े इसकी हड्डियाँ कुतरें।

लड़की बंदीगृह के उसी अन्धकार में ठूंस दी गयी। जन-समूह ने अमीर के निर्णय से काँपकर और युवती की अभागी सुन्दरता से दुखी होकर उसे चिन्तापूर्ण दृष्टि से जाते हुए देखा।

तीसरी बार सैनिक एक अधेड़ और कमज़ोर पुरुष को लेकर उपस्थित हुए, जो अपनी काँपती टाँगों को इस प्रकार घसीट रहा था, जैसे वे टाँगें न होकर उसके फटे-पुराने वस्त्रों से लटकते हुए चिथड़े हों। वह भय से इधर-उधर देख रहा था और उसकी सहमी हुई दृष्टि में निराशा, पीड़ा और अभाव की छायाएँ झाँक रही थीं। अमीर ने उसकी ओर घूरकर तेज़ आवाज़ में पूछा—इस बेवकूफ़ जानवर ने कौन-सा अपराध किया है, जो ज़िन्दों के बीच मुर्दों-जैसा आकर खड़ा हो गया है?

एक सैनिक ने उत्तर दिया—श्रीमान! यह चोर है। एक रात यह मठ में घुसा था। वहाँ इसे महन्तों ने पकड़ लिया। तलाशी लेने पर इसके वस्त्र की तहों से देव-स्थान का एक पवित्र स्वर्ण-पात्र निकला था।

अमीर ने उसको इस दृष्टि से देखा, जैसे एक भूखा गीध एक घायल गौरैया को देखता है, और चिघाड़ा—इसे भी उसी अँधेरे में फेंक दो और जंजीरों से जकड़ दो! सुबह होते ही इसे बाहर ले जाकर एक ऊँचे पेड़ से रस्सी के सहारे लटका देना और लाश को आसमान और ज़मीन के बीच झूलने देना उस वक्त तक, जब तक कि इसकी चोरी करनेवाली अँगुलियाँ

पत्तों की तरह झड़कर गिर न जायँ और हवा इसके अंगों को धूल की तरह बिखेर न दे।

और तब वह चोर भी उस कारागार में वापस ले जाया गया। इस बार दर्शकों ने बड़बड़ाकर एक दूसरे से कहा—न जाने कैसे इस कमज़ोर आदमी को मठ का पवित्र स्वर्ण-पात्र चुराने का साहस हुआ ?

अमीर न्याय आसन से नीचे उतर आया। विचारक और विधायकों ने अनुसरण किया। सैनिक आगे और पीछे चलने लगे। जन-समूह बिखर गया और शीघ्र ही वह स्थान खाली हो गया। बंदियों की दर्दनाक आहों, कराहों और सुबकियों के सिवा, जो दीवारों पर काली छायाओं की तरह घूमने लगी थीं, वहाँ अन्य कोई आवाज शेष न रही।

इस समूची कार्यवाही के समय मैं वहाँ उपस्थित था। मैं उन जंगम छायाओं के सम्मुख एक दर्पण की भाँति खड़ा था और विचार कर रहा था उस कानून पर, जो मनुष्य ने अपने साथियों के लिए बनाया है; मनन कर रहा था जनता पर किये जानेवाले उस तथाकथित न्याय पर और डूब-उतरा रहा था जीवन के रहस्य और अस्तित्व के अर्थ को लेकर। मैं इस मनःस्थिति में तब तक रहा, जब तक मेरे विचार संध्याकालीन आकाश में कोहरे से ढँके प्रकाश की भाँति अस्पष्ट और धुंधले नहीं हो गये। उस स्थान को त्यागते हुए मैं स्वयं से बोला, पौधे पृथ्वी से जीवन-तत्व ग्रहण करते हैं। भेड़ें उन पौधों को चरती हैं, और भेड़िये उन भेड़ों का शिकार करते हैं। भालू भेड़ियों का संहार करते हैं और सिंह भालुओं का। मृत्यु अपनी बारी पर सिंह को समाप्त कर देती हैं। मृत्यु से भी शक्तिशाली क्या कोई शक्ति है, जो अपराधों की इस शृङ्खला को स्थायी रूप से मिटा दे ? ऐसी कोई शक्ति है, जो इन घृण्य बुराइयों को अच्छाइयों में परिवर्तित कर दे ? ऐसी कोई शक्ति है, जो जीवन के समस्त तत्वों को संग्रहीत कर उन्हें हँसते हुए आत्मसात कर ले, वैसे ही, जैसे समुद्र धाराओं को अपनी तह में संग्रहीत कर लेता है। ऐसी कोई शक्ति है, जो हत्या किये जाने-

वाले हत्यारे को, दुश्चरित्रा और प्रेमी को एवं साहूकार और चोर को उस न्यायालय में उपस्थित करे, जो अमीर के न्यायालय से महान हो?

दूसरे दिन मैं खेतों के बीच से होता हुआ नगर के बाहर गया। घाटी के छोर पर पहुँचने पर मैंने गीध और चील के झुंडों को आकाश से पृथ्वी की ओर झपटते देखा। उनकी चीख, चिल्लाहट और पंखों की फड़फड़ाहट से वहाँ का वातावरण काँप रहा था। कारण की खोज में मैं आगे बढ़ा। मैंने देखा कि एक मनुष्य का शव एक ऊँचे वृक्ष से लटक रहा है, एक स्त्री का नग्न चुटैला शव पत्थरों के बीच पड़ा है और एक युवक का शीश-रहित शरीर रक्त-रंजित पृथ्वी पर सोया हुआ है। दृश्य की वीभत्सता से मेरे रोंगटे खड़े हो गये और नेत्रों के सम्मुख अन्धकार का एक मोटा आवरण खिच आया। मैंने देखने का प्रयत्न किया, पर कुछ न देख सका सिवा मृत्यु की उन डरावनी आकृतियों के, जो रक्तरंजित शवों के ऊपर नाच रही थीं। मैंने सुनने का प्रयत्न किया, पर कुछ सुन न सका सिवा नाश के उस क्रन्दन के, जो अमीरी कानून के शिकारों के आस-पास मँडराने और चक्कर काटनेवाले कौओं की काँव-काँव में खोया जा रहा था।

तीन मानव! कल वे जीवन का आलिंगन कर रहे थे और आज मृत्यु की गोद में थे। तीन प्राणियों ने अमीरी कानून की दृष्टि में अपराध किया और कानून ने अपनी अंधता में हाथ फैलाकर उनको मिटा दिया। तीन प्राणी दम्भ-द्वारा पापी ठहरा दिये गये, क्योंकि वे निर्बल थे। उन्हें कानून ने मिटा दिया, क्योंकि वह सशक्त था।

जब एक व्यक्ति एक इन्सान को मिटा देता है, समाज कहता है, यह हत्यारा है। पर जब वह एक अधिकार-सम्पन्न व्यक्ति-द्वारा मिटा दिया जाता है, तब कहा जाता है, यह न्यायवान है। जब एक व्यक्ति मठ की चोरी करता है, उसे चोर कहकर पुकारा जाता है। पर जब एक अमीर जीवन की चोरी करता है, तब उसे एक गुणवान शासक बताया जाता

है। जब एक स्त्री अपने पति के प्रति विश्वासघात करती है, जनता उसे दुश्चरित्रा की संज्ञा देती है। किन्तु जब अमीर उसे नग्नावस्था में बाहर खदेड़वाता है और पत्थरों द्वारा मारे जाने का आदेश देता है, तब वे उसे महान अमीर कहकर पुकारते हैं।

रक्तपात वर्जित है। शासक को तब उसकी अनुमति क्यों दी गयी ? सम्पत्ति का अपहरण अपराध है। प्राणों के अपहरण को तब उचित क्यों कहा गया ? नारी की कृतघ्नता अशोभनीय है। पर क्या नग्न शरीर पर पत्थरों से प्रहार करना शोभनीय है ?

क्या हम बुराई का दमन उससे बड़ी बुराई-द्वारा कर उसे कानून कह सकते हैं ? या भ्रष्टाचार का सामना उससे बड़े भ्रष्टाचार से कर उसे नैतिकता की संज्ञा दे सकते हैं ? या एक अपराध पर उससे अधिक भयंकर अपराध-द्वारा विजय पाकर उसे न्याय का नाम दिला सकते हैं ? क्या अमीर ने अपने जीवन में कभी शत्रु का संहार न किया होगा, या कभी किसी निर्बल की भूमि और सम्पत्ति का अपहरण न किया होगा, या कभी किसी सुन्दरी को धोखा न दिया होगा ? क्या वह समस्त पापों से अछूता है, जिसके आधार पर उसे हत्यारे का सिर काटने, चोर को फाँसी पर लटकाने और दुश्चरित्रा पर पत्थरों से प्रहार करने का आदेश देने का अधिकार मिला है ?

जिन्होंने चोर को वृक्ष से लटकाया है, वे कौन हैं ? क्या वे आकाश से उतरनेवाले देवदूत हैं, या साधारण मानव ही, जो अवसर मिलने पर अपहरण और बलात्कार करने से चूकते नहीं हैं ? इस व्यक्ति का सिर किसने काटा है ? क्या वे ऊपर से आनेवाले पैगम्बर हैं या साधारण सिपाही ही, जो इच्छानुसार हत्या और रक्तपात करते रहते हैं ? इस दुश्चरित्रा पर पत्थरों से प्रहार किसके द्वारा हुआ है ? क्या वे अपने आश्रम त्यागकर आनेवाली पवित्र और महान आत्मायें हैं या इन्सान के रूप में दरिन्दे, जो रात्रि के अन्धकार में अपराध और पाप की कोटि में आनेवाले कुकृत्य करते रहते हैं। और यह कानून ! कानून क्या है ? इन्हें

स्वर्ग से सूर्य-रश्मियों के साथ उतरते किसने देखा है ? किस युग में देव-दूतों ने मनुष्य के साथ गमन करते हुए कहा है—निर्बलों को जीने के अधिकार से वंचित रखो और असहायों को तलवार के घाट उतार दो और पापियों को लौह पदों से कुचल दो ?

ये विचार जब मेरे मस्तिष्क और हृदय को मथ रहे थे, मैंने निकट ही पदचापों की आवाज़ सुनी। एक लड़की वृक्षों के मध्य से प्रकट होकर शवों की ओर बढ़ रही थी। वह चौकन्नी दृष्टि से चारों ओर देखती जाती थी, जैसे डरी हुई हो। जैसे ही उसकी दृष्टि शीश-विहीन युवक के धड़ पर पड़ी, उसके मुख से भय की एक चीख निकली और वह काँपते हाथों से युवक का आलिगन करती हुई उसके चरणों पर झुक गयी। आँखें आँसुओं से डबडबा आयीं और अँगुलियाँ युवक के घुँघराले बालों से उलझ गयीं। फिर वह धीमी आवाज़ से सुबकने लगी, जो उसके अन्तस्थल की गहराई से फूट रही थी। एकाएक वह अपने हाथों से तेज़ी से भूमि खोदने लगी और खोदती रही, जब तक वहाँ एक चौड़ी-गहरी कब्र न बन गयी। तब उसने मृत युवक की बाहों के मध्य उसके रक्त-रंजित सिर को रखकर उसे हौले से उठाकर कब्र में लिटा दिया। मिट्टी से उसे ढँक देने के उपरांत उसने उस तलवार को, जिससे युवक का सिर काटा गया था, वहीं कब्र पर गाड़ दिया। जब वह जाने को हुई, मैं उसके सामने आ गया। वह सहम गयी और भय से काँपने-सी लगी। उसकी दृष्टि पृथ्वी पर झुक गयी और गर्म-गर्म आँसू आँखों से निकलकर वर्षा के समान बरसने लगे। एक गहरी साँस छोडते हुए कुछ देर बाद वह बोली—यदि आप चाहें तो अमीर को इस बात की सूचना दे सकते हैं। जिसने मेरी पवित्रता की रक्षा की है, उस युवक के शव को गीध और जंगली पशुओं से नुचवाने के लिए छोड़ जाने की अपेक्षा मैं इसके मार्ग पर चलते हुए उसके समीप पहुँच जाना कहीं अच्छा समझूंगी !

—डरिए मत,—मैं बोला—इस युवक के दुर्भाग्य पर मैं भी दुखी हूँ। पर मुझे यह बताइए, इसने आपकी पवित्रता की रक्षा कैसे की ?

वह कहने लगी—अमीर का एक दरबारी मेरे खेत पर टैक्स लगाने और लगान वसूल करने आया था। मुझे वहाँ पाकर वह ललचायी दृष्टि से मुझे घूरने लगा, जिससे मैं बेहद डर गयी थी। उसने मेरे पिता पर टैक्स के रूप में एक भारी रकम बाँध दी, जो इतनी भारी थी कि एक धनिक की सामर्थ्य से भी अधिक थी। रकम जब वसूल न हुई, तो उसने मुझे पकड़ लिया और पैसे के बदले में मुझे ही अमीर के महल की ओर बलपूर्वक ले जाने लगा। मैंने उससे रोकर दया की भीख माँगी, पर उसने कोई ध्यान न दिया। मैंने उसे पिता-तुल्य कहा और गिड़गिड़ायी, पर वह न पसीजा। तब मैंने चिल्लाकर गाँववालों को सहायता के लिये पुकारा और उस समय इस युवक ने, जिससे मेरी मंगनी हो चुकी थी, आकर मेरी रक्षा की। इस पर उस दरबारी ने क्रुद्ध होकर वार करना चाहा, पर वह इसके लिए पहले से तैयार था और अपने साथ में घर से पुरानी तलवार लेकर आया था। उसने उसी से दरबारी को समाप्त कर दिया। यह युवक मेरी पवित्रता और अपने जीवन की रक्षा करने के अपराध में मारा गया है। अपनी आत्मा की विशालता के कारण ही यह एक साधारण हत्यारे की भाँति वहाँ से भागा नहीं, बल्कि दरबारी के शव के पास तब तक खड़ा रहा, जब तक सिपाहियों ने उसे पकड़ नहीं लिया और बेडियों से जकड़कर जेल में घसीट नहीं ले गये।

यह कहकर लड़की ने मेरी ओर हृदयविदारक दृष्टि से देखा और मुड़कर अन्तर्द्धान हो गयी। व्यथा से डूबा उसका स्वर वहाँ की वायु की सतह को तरंगित और विकम्पित करने लगा।

कुछ क्षण अनन्तर वहाँ एक युवक आया। उसका मुँह अंशतः उसके लम्बे कोट से छिपा था। उसने उस दुश्चरित्रा के शव के निकट जाकर उसकी नग्नता को ढँकने के लिए उस पर अपना कोट उतारकर डाल दिया। फिर वह एक छुरे से वहाँ की भूमि खोदने लगा। कब्र बन जाने पर उसने उसके शव को हल्के से उठाकर उसमें लिटा दिया और उसे मिट्टी से पाटने लगा। मिट्टी का प्रत्येक कण उसके आँसू से भीग रहा था।

कार्य की समाप्ति पर उसने वहाँ लगे कुछ पुष्प तोड़े और उन्हें क़ब्र पर बिखेर दिये।

जब वह जाने लगा, मैंने उसे रोककर पूछा—इस मृत स्त्री से आपका क्या नाता है, जिसके लिए आपने अमीर की आज्ञा का विरोध करने का साहस किया और जानवरों से इसके शव की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों को संकट में डाला !

उसने मुझे उन आँखों से देखा, जो जगने और रोने से लाल हो गयी थीं और उसकी असीम वेदना और व्यथा को प्रकट कर रही थीं। सुबकियों से टूटते स्वर में वह कहने लगा—मैं ही वह अभागा पुरुष हूँ, जिसकी खातिर यह स्त्री पत्थरों से मारी गयी है। हम दोनों बचपन में साथ-साथ खेले थे और एक-दूसरे से प्रेम करते थे। ज्यों-ज्यों हम बढ़ते गये, त्यों-त्यों हमारा यह प्रेम बढ़ता गया और एक दिन यह इतना बढ़ गया कि इसने एक शक्तिशाली सम्राट का रूप ग्रहण कर लिया, जिसकी हम दोनों को अपने हृदयों से सेवा करनी पड़ी। हमारी आत्माएँ इस प्रेम के सम्मुख खड़ी होने से भय खाती थीं, पर वह हमको बराबर अपने पास खींचता रहा। एक दिन जब मैं कस्बे से बाहर था, मेरी प्रेयसी बलपूर्वक एक अन्य पुरुष को, जिससे वह घृणा करती थी, सौंप दी गयी। वापसी पर जब मैंने यह सुना, तो मेरे दिन और रातें और ज़िन्दगी एक लम्बी और कड़वी मौत बन गयी। मैंने अपने प्रेम से संघर्ष किया और अपने हृदय की आकांक्षाओं से जूझा और तब तक जूझता रहा, जब तक उन्होंने मुझे पस्त कर अंधा न बना दिया। एक दिन मैं छिपकर अपनी प्रेयसी के यहाँ गया। मेरी इच्छा उसकी आँखों की चमक देखने और उसकी सुरीली आवाज़ को सुनने से अधिक कुछ न थी। मैंने उसे एकांत में अपने भाग्य पर आँसू बिसूरते और अपने पहाड़-जैसे दिनों को बेचैनी से काटते पाया। हम दोनों आस-पास बैठ गये। हमारी खामोशी ही हमारी बात-चीत थी और हमारी पवित्रता ही हमारा साथी। अभी एक घंटा भी न बीता होगा कि उसका पति आ गया। जब उसने मुझे वहाँ देखा, तो

उसकी पशुता भड़क उठी। उसने मेरी प्रेयसी की कोमल गर्दन अपने खुरदरे हाथों से पकड़ ली और ऊँची आवाज़ में चिल्लाने लगा, तुम-सब आकर देखो! यह छिनाल अपने आशिक के साथ यहाँ बैठी है। इसपर उसके पड़ोसी दौड़े आये और उनके पीछे ही पूछ-ताछ करते हुए सिपाही आ गये। उसके पति ने उसे उनके हाथों सौंप दिया और वे उसे खुले वालों और फटे वस्त्रों से घसीटते हुए ले गये। मुझसे किसी ने भी कुछ न कहा, क्योंकि हमारा अंधा कानून और भ्रष्ट परम्परायें दुश्चरित्रता के अपराध में केवल स्त्रियों को ही दंडित करती हैं और पुरुषों को ओट दे जाती हैं।

यह कहकर वह युवक नगर को वापस मुड़ गया। उसकी आकृति एक बार फिर उसके लम्बे कोट में छिप गयी। मैं वहाँ सोचता-विचारता वेदना में डूबा खड़ा रहा। चोर का लटकता हुआ शव वृक्ष की शाखाओं के बीच से आते हुए वायु के थपेड़े से हिल रहा था। इस तरह मानो वह वायु की शक्ति को फुसला रहा था कि वह रस्सी को तोड़कर उसे पृथ्वी पर सुला दे, जहाँ वीरता और प्रेम के दो शहीद सोये हुए हैं।

एक घण्टा बीता होगा कि वहाँ चिथड़ों में लिपटी बीमार-सी एक स्त्री आयी। वह रोती और छाती पीटती हुई उस हिलते हुए शव के नीचे खड़ी हो गयी। फिर वह वृक्ष पर चढ़ गयी और अपने दाँतों से उस समय तक रस्सो कुतरती रही, जब तक शव भीगे हुए कपड़े के गट्ठर के गिरने जैसी आवाज करता हुआ पृथ्वी पर न गिर पड़ा। तब नीचे उतरकर उसने उन दो कब्रों के निकट एक अन्य कब्र खोदी और शव को उसमें दफना दिया। मिट्टी से उसे पाट देने के बाद उसने वहाँ से लकड़ी के दो टुकड़े उठाये और उन्हें क्रास का आकार देकर कब्र पर गाड़ दिया। तब वह जिस ओर से आयी थी, उधर ज[illegible] लगी। मैंने उसे रोककर पूछा—एक चोर को दफ़नाने के लिए आप यह[illegible] क्यों आयीं?

उसने मुझे दुख और कष्ट के कारण धुंधले हुए नेत्रों से घूरा और बोली—यह मेरा नेक पति, दुख का साथी और मेरे बच्चों का पिता

था। मेरे भूख से चिल्लानेवाले पाँच बच्चे हैं। सबसे बड़ा आठ साल का है और सबसे छोटा अभी मेरी छाती का दूध पीता है। मेरा पति चोर नहीं था। वह किसान था और मठ की ज़मीन जोतता था। पर मठाधीशों से उसे इसके बदले में एक रोटी को छोड़कर और कुछ न मिलता था। रोटी के हम अपने-अपने भाग के टुकड़े करते और रात को खा लेते थे। सुबह के लिए कुछ न बचता था। जवानी के दिनों में उसने अपनी देह के पसीने से खेत सींचे थे और अपनी बाँहों की शक्ति से वहाँ की धरती गुलजार की थी। जब वर्षों के इस कठोर परिश्रम से वह लस्त हो गया और उसकी शक्ति चुक गयी, वह बीमार हो गया। तब महन्तों न उसे यह कहकर निकाल दिया कि अब उन्हें उसकी जरूरत नहीं। मैं और मेरा पति बहुत रोये और उसने मसीह के नाम पर दया की भीख माँगी और नबी और पैगम्बरों के नाम पर गिड़गिड़ाकर मिन्नतें कीं, पर उन्होंने न तो हमारे भूखे और नंगे बच्चों के लिए कोई प्रबन्ध किया, न हमारी दशा पर पसीजे ही। तब मेरा पति काम की तलाश में शहर गया, पर केवल खाली हाथ वापस आने के लिए, क्योंकि ऊँची-ऊँची कोठियों में रहनेवाले जवान और मजबूत आदमियों को छोड़कर और किसी को नौकर नहीं रखते हैं। अन्त में वह एक रास्ते पर बैठकर भीख माँगने लगा, पर किसी से उसे भीख भी न मिली। राहगीर उसके आगे से निकालते हुए उसे दुत्कार देते, दान सुस्ती और काहिली फैलानेवालों के लिए नहीं है! एक रात को भूख ने हमें इतना तंग किया कि हमारे बच्चे बेसुध होकर पड़ रहे और हमारा गोदी का बच्चा मेरी सूखी छाती चिचोड़ने लगा। पर वहाँ दूध कहाँ? मेरे पति में एक परिवर्तन हुआ। वह रात के अँधेरे में छिपकर घर से बाहर निकल गया और मठ की एक खत्ती में घुस गया, जहाँ महन्त खेतों की उपज जमा करते हैं। जब वह वहाँ से एक टोकरी में आटा भरकर निकल रहा था, महन्त जाग गये और उन्होंने उसे पकड़कर खूब पीटा और गालियाँ दीं और सुबह उसे सिपाहियों को यह कहकर दे दिया कि वह मठ का स्वर्ण-पात्र चुराने

आया था। तब वह जेल ले जाया गया और वहाँ से गीधों का पेट भरने के लिए इस स्थान पर डाल दिया गया। मेरे पति का अपराध केवल इतना था कि उसने उन दानों से, जिन्हें उसने मठ की सेवा करते हुए अपने पसीने से उपजाया था, अपने बच्चों का पेट भरना चाहा था।

वह अभागी स्त्री भी यह कहकर वहाँ से चली गयी। उसके टूटे हुए स्वर से निकली हुई दुख की काली छायाएँ वायु में भटकनेवाले धुएँ के समान भटकने लगीं।

मैं उन तीनों क़ब्रों के मध्य उस व्यक्ति की भाँति खड़ा था, जिसकी आँखें और ज़बान शोक से चौंधिया और बंद हो गयी हों और केवल आँसू ही उसकी आन्तरिक पीड़ा को कहते हों। मैंने सोचना-विचारना चाहा, पर मेरी आत्मा ने विद्रोह किया, क्योंकि आत्मा एक पुष्प है, जो अपनी पंखुरियों को अन्धकार से बचाने के लिए पकड़े रहती है और रात की छायाओं को सुगन्ध नहीं देती।

मैं वहाँ उस समय तक खड़ा था, जब तक कि अत्याचार के विरोध में क़ब्रों को ढँकनेवाली मिट्टी का प्रत्येक कण खाली घाटी से उठनेवाले कोहरे के समान उठकर अन्तर को स्वर देने के लिए लहरों की भाँति मेरे कान से टकराने न लगा।

मैं खड़ा था और आहें भर रहा था। काश, मेरी आहों की लपटें उस मैदान के वृक्षों को स्पर्श कर उत्तेजित कर सकतीं और वे अपना स्थान छोड़कर टुकड़ियों में कूच करते हुए अपनी शाखाओं द्वारा अमीर और उसके सैनिकों के विरुद्ध युद्ध छेड़ देते और अपने तनों से मठों की दीवारें ढहाकर उनके अन्दर रहनेवालों को कुचल देते!

मैं खड़ा था और देख रहा था और मेरी आँखों से करुणा की मधुरता और व्यथा की कड़वाहट फूटकर उन नयी क़ब्रों पर बह रही थी। एक युवक की क़ब्र! एक लड़की की पवित्रता की रक्षा जिसने अपने प्राणों से की और उसे एक भेड़िए के जबड़े से निकाल लाया और इस साहसिकता के लिए जिसे सिर कटाने का पुरस्कार मिला। उस लड़की ने आकर

उसी तलवार को, जिससे युवक का सिर काटा गया था, अज्ञानता और अनाचार के साम्राज्य में अमीर-द्वारा किये गये अत्याचार के चिह्न और प्रतीक के रूप में सूर्य के सम्मुख वहीं भूमि में गाड़ा था। दूसरी कब्र! उस लड़की की है, जिसके शरीर का स्पर्श प्रेम ने नष्ट होने से पहले कर लिया था। उन्होंने उसे इसलिए पत्थरों से मारा, क्योंकि उसका हृदय मृत्यु-पर्यन्त अपने प्रेमी के प्रति निष्ठावान रहा था। उसके प्रेमी ने उसके मौन शरीर पर पुष्पों की एक माला चढ़ायी, जो मुरझा और सूखकर उन आत्माओं के दुर्भाग्य के बारे में बतायेगी, जो प्रेम से पवित्र थीं, पर जो ऐसे प्राणियों के मध्य निवास करती थीं, जो मद से अंधे और शक्ति से पागल थे। तीसरी कब्र! उस अभागे की है, जिसकी भुजाओं की शक्ति मठ के खेतों के परिश्रम से शिथिल हो गयी थी और जिसके स्थान पर दूसरे रख लिये गये थे। उसने नौकरी-द्वारा अपने बच्चों के लिए रोटियाँ प्राप्त करनी चाहीं, पर नहीं मिलीं। उसने भीख पानी चाही, पर नहीं मिली। जब निराशा ने उसे अपने स्वेद और परिश्रम का प्रतिदान माँगने के लिए विवश कर दिया, उन्होंने उसे बन्दी बनाकर मिटा दिया। उसकी विधवा ने उसकी कब्र पर एक क्रास गाड़कर रात के नीरव आकाश में झिलमिलाने-वाले सितारों को उस अत्याचार के विरुद्ध गवाह बनाया था, जो मसीह के उपदेशों को निर्बल और असहायों को संहार करनेवाली तेज तलवार में बदल देते हैं।

शीघ्र ही सूरज झुककर आकाश के धुँधलके में डूब गया, जैसे अमीर के इन कुकृत्यों को देखकर उसने घृणा से मुँह छिपा लिया हो। संध्या भी प्रकृति का शरीर छिपाने के लिए अंधकार और नीरवता के धागों से एक आवरण बुनने लगी।

मैंने अपनी आँखें ऊपर उठायीं और कब्रों की ओर उनके चिह्न और प्रतीकों के अनुरूप हाथ फैलाते हुए कहा—हे वीरता! तेरी यह तलवार है, जो पृथ्वी में गाड़ दी गयी है! हे प्रेम! तेरे यह पुष्प हैं, जो गर्मी से झुलस रहे हैं? हे मसीह! तेरा यह क्रास है, जिसे रात का अंधकार लीले जा रहा है!

□

सुहाग-सेज

वर और वधू चर्च से बाहर निकल आये। उनके आगे-आगे लैम्पों और टार्चों का प्रकाश था और पीछे-पीछे हर्ष से भरे हुए अतिथि। उन्हें चारों ओर से अविवाहित युवक और युवतियाँ घेरे हुए थीं, जो हर्ष और प्रीत के गीत गा रही थीं।

विवाह-जुलूस वर के निवास-स्थान पर आकर रुक गया। निवास-स्थान बहुमूल्य क़ालीनों, द्युतिमान पात्रों और हिने की भीनी-भीनी सुगन्ध से सजा था। वर और वधू एक मंच पर आसीन हो गये और अतिथिजन रेशमी जाज़िमों और मखमली कुर्सियों पर बैठ गये। शीघ्र ही वह विशाल कक्ष स्त्री और पुरुषों से भर गया। दास-दासियाँ दौड़-दौड़कर मदिरा उड़ेलने लगीं और चषकों के परस्पर टकराने की ध्वनि हर्ष और उल्लास की ध्वनि से मिलकर एक स्वर हो गयी। वादकों ने अपना स्थान ग्रहण कर वह राग छेड़ा कि श्रोता मदहोश हो गये।

कुमारियाँ उठकर नाचने लगीं। संगीत के तालों पर आगे-पीछे, इधर-उधर वे हौले-हौले यों थिरकने लगीं, मानो कोमल टहनियाँ पवन के मन्द झकोरों में झूम रही हों! उनके रुपहले वस्त्रों की चुन्नटें लहरियाँ खा-खाकर यों चमक उठती थीं, मानो फ़ाख्तई बादलों पर चन्द्र-किरणें अठखेलियाँ करती हुई मुस्करा रही हों। सबके नेत्र एकाग्र होकर उन्हें अपलक निहार रहे थे। सिर झूम रहे थे, युवकों की आत्माएँ उनका आलिंगन कर रही थीं और वृद्धों की आत्माएँ उनके सौन्दर्य के सम्मुख दोलायमान थीं। सब पीने में मस्त थे और अपनी आकांक्षाओं को मदिरा

में तिरोहित कर रहे थे। चेष्टाएँ जीवित हो गयीं, गुल-गपाड़ा मचने लगा और उच्छृंखलता शासन करने लगी। संयम पलायन कर गया, मस्तिष्क अव्यवस्थित हो गये, आत्माएँ प्रज्ज्वलित और हृदय उत्तेजित···यहाँ तक कि वह कक्ष और उसके अन्दर के समस्त प्राणी किसी प्रेतिनी के हाथों में थमी टूटे तारों की वीन वन गये, जिसे वह लापरवाही से बजाती हुई वेसुरी तानें निकाल रही थी।

एक ओर एक युवक एक लड़की पर अपना गुप्त प्रेम प्रकट कर रहा था जिसके सौन्दर्य ने उसमें सम्मोहन और उन्माद भर दिया था। दूसरी ओर एक युवा एक सुन्दरी से वार्तालाप करने की इच्छा से मधुर शब्दों और सुन्दर वाक्यों की खोज में निमग्न था। सम्मुख एक अधेड़ प्याले-पर-प्याला ढाल रहा था और वादकों से उसका अनुरोध था कि वे ऐसी तान छेड़ें, जिससे उसका विगत यौवन लौट आये। एक कोने में एक स्त्री एक पुरुष पर दृष्टि जमाये थी, जो प्रेम-भरी चितवन से किसी और को निहार रहा था। दूसरे कोने में आयु से श्वेत एक वृद्धा कुमारियों को देखती हुई मुस्करा रही थी और अपने एक मात्र पुत्र की वधू बनाने के लिए उनमें से एक का चुनाव कर रही थी। खिड़की के निकट बैठी एक पत्नी को उसके पति के नशे ने अपने प्रेमी के निकट बैठने का अवसर दे दिया था। वे-सब इस प्रकार मदिरा और प्रेमालाप में डूबे हुए थे कि भूत और भविष्य को भूल गये थे और वर्तमान के इन सुखदायी क्षणों का उपभोग करते हुए हास-विलास की तीव्र धारा में बह रहे थे।

वधू इस दृश्य को दुखी नेत्रों से इस प्रकार देख रही थी, जिस प्रकार एक बन्दी निराशावश अपने कारागार की अन्धकारमयी दीवारों को देखता है। जब-तब उसके नेत्र एक कोने की ओर उठ जाते थे, जहाँ अपने गोल से अलग हुए एक घायल पक्षी की भाँति एक बीस वर्षीय युवक रंगरेलियों से परे बैठा था। उसके हाथ वक्ष को बाँधे हुए थे, मानो उन्हें हृदय के पलायन कर जाने का भय था। उसके नेत्र शून्य पर टिके थे, मानो उसकी आत्मा ने उसके भौतिक शरीर को त्याग दिया था और आश्रय की खोज

में वहाँ की वायु का मंथन कर रही थी।

अर्द्धरात्रि बीत गयी। प्रतिक्षण अपना वेष बदलनेवाली रंगरेलियों ने अब एक उपद्रव का रूप ग्रहण कर लिया। उन-सबकी संज्ञा मदिरा की झाग में डूब गयी थी और वे हकलाने और लड़खड़ाने लगे थे। शीघ्र ही वर अपने स्थान से उठा, जो अधेड़ और कुरूप था। नशे ने उसके भी चैतन्य पर अपना अधिकार कर लिया था। अतिथियों के निकट जा-जाकर वह अपनी उदारता प्रदर्शित करने के लिए उनसे ठिठोलियाँ करने लगा।

वधू ने अचानक वहाँ बैठी हुई एक लड़की को निकट आने के लिए कहा। लड़की आकर उसके निकट बैठ गयी। उसने उसे अधीरता और उत्सुकता-भरी दृष्टि से देखा, मानो वह उस पर एक अति गोपनीय रहस्य को प्रकट करने जा रही हो। उसकी ओर झुकती हुई काँपती आवाज़ में वह फुसफुसाने लगी—मेरी प्यारी सखी, मैं तुझसे उस स्नेह के लिए, जिसने बचपन से हम दोनों को एक साथ बाँधे रखा है, उस-सब के लिए जो जीवन में तुझे प्यारा है और जो तेरे हृदय में सोया पड़ा है, याचना करती हूँ! मैं तुझसे उस प्रेम के लिए, जो हमारी आत्माओं का आलिंगन कर उन्हें प्रकाशमान बनाता है, तुम्हारे हृदय के हर्ष और अपनी पीड़ा के लिए भीख माँगती हूँ! तुम अभी सलीम के निकट जाकर कहो कि वह चुपचाप उठकर बाग में निकल जाये और सरपत के झुरमुटों के नीचे मेरी प्रतीक्षा करे। मेरे लिए तुम उससे ऐसा कहना। मेरी प्यारी सुसन! मेरी खातिर उसे ऐसा समझाना और तब तक समझाते रहना, जब तक वह सहमत न हो जाये। उसे बीते हुए दिनों की याद दिलाना। उससे प्रेम के नाम पर याचना करना। उससे कहना कि उसकी प्रेयसी विपत्ति की मारी एक सीधी-सादी औरत है। उसे बताना कि अब वह मृत्यु के मुख में है, मिट रही है और नैराश्य ने उसे अपने में डुबो लिया है। पर वह अन्धकार में खोने से पूर्व उसके समक्ष अपने हृदय को वाणी देना चाहती है, और नरक की अग्नि में भस्मीभूत होने से पूर्व उसके नेत्रों की

चमक देखने को लालायित है। उससे कहना कि उसने अपराध किया है, जिसे वह स्वीकार करती है और क्षमा की प्रार्थिनी है। सुसन ! मेरी प्यारी सुसन ! मेरी ख़ातिर उससे यह सब कहना ! शीघ्रता करो ! इन दरिन्दों की दृष्टि से डरो मत ! इनके कान शराब से बहरे हैं और आँखें शराब से अन्धी हो चुकी हैं।

सुसन अपने स्थान से उठकर सलीम के निकट बैठ गयी, जो अपने दुख में डूबा एक ओर चुपचाप बैठा था। उसने अपनी सखी के शब्द उसके कानों में डाल दिये और दया की प्रार्थना की। प्रेम और निष्ठा की आभा उसके चेहरे पर प्रकाश बन चमक रही थी। युवक सिर डाले हुए चुपचाप सुनता रहा और जब वह अपना संदेशा कह चुकी, तो उसने उसे उस दृष्टि से देखा, जैसे एक प्यासा ऊँचाई पर स्थित जल-कलश को देखता है, और बोला—मैं बाग़ में सरपत-झुंडों के नीचे प्रतीक्षा करूँगा। उसकी आवाज़ इतनी धीमी थी, मानो वह पृथ्वी के तल से फूट रही हो। वह अपने स्थान से उठा और बाग़ में चला गया।

कुछ समय अनन्तर वधू भी उठी और उसी प्रकार चुपचाप बाहर निकल गयी। उसने अपना मार्ग उन पुरुषों के बीच से बनाया था, जो मदिरा की पुत्री के साथ पाप में तल्लीन थे, और उन स्त्रियों के बीच से जो युवकों से प्रेमालाप में निमग्न थीं। अन्धकार से आच्छादित उद्यान में आते ही उसके कदमों की गति तेज़ हो गयी। वह उस डरे हुए मृग-छौने की भाँति सुरक्षित स्थान के लिए भागी, जिसका पीछा खूँखार भेड़िए कर रहे हों। और सरपत के झुरमुटों के नीचे आकर ही उसने साँस ली, जहाँ उसका युवा प्रेमी उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने उसकी गर्दन के गिर्द अपनी बाँहें डाल दीं और नेत्रों में नेत्र डालती हुई बोली। अधरों से बाहर आने वाले शब्द नेत्रों से गिरनेवाले आँसुओं से भीग रहे थे।

—प्रियतम ! मुझे अपनी मूर्खता और उतावली के लिए पश्चात्ताप है !···मेरे सलीम ! मैं इस पश्चाताप की अग्नि में तब तक जली, जब

तक उसने मेरे हृदय को राख न कर दिया ! मैं केवल तुम्हीं को प्यार करती हूँ और अन्तिम वेला तक तुम्हें ही प्यार करूँगी। उन्होंने मुझे बहकाया था कि तुमने मुझे बिसार दिया है और किसी अन्य से प्रेम करने लगे हो। उन्होंने अपनी ज़बानों से मेरे हृदय को विषाक्त किया था और अपने पंजों से उसे विदीर्ण कर, असत्य को उसमें ठूँसा था। नजीबी ने मुझसे कहा था कि तुम अपने ध्यान से मुझे निकाल चुके हो और मुझसे घृणा करते हो। मैं उसकी बातों में आ गयी थी। वह दुष्टा मुझे सताकर मेरी भावनाओं से खेली थी और अपने बान्धव को मुझसे पति के रूप में स्वीकार करा लिया। पर, सलीम ! क्या तुम्हें छोड़कर मेरा और कोई भी वर हो सकता है ? मेरे नेत्रों के सामने से अब पर्दा हट गया है और मैं तुम्हारे समीप आयी हूँ। मैंने उस घर को सदैव के लिए छोड़ दिया है और अब उसमें कभी भी वापस न जाऊँगी। मैं तुम्हें अपनी बाँहों में बाँधने को आयी हूँ। संसार की कोई भी शक्ति अब मुझे उस व्यक्ति के निकट नहीं भेज सकती, जिसे मैंने विवशतावश वरा था। धोखे और कपट द्वारा वरण कराये गये उस व्यक्ति को अब मैंने सदैव के लिए त्याग दिया है, और उस पिता को भी, जिसे भाग्य ने मेरा संरक्षक बनाया है। मैं उन फूलों को लात मार आयी हूँ, जिन्हें पादरी ने वधू के मुकुट के लिए गूँथा था, और उन रीतियों और परम्पराओं को भी, जो हथकड़ियों से कम न थीं। इस समय उस घर में सब पाप और मदिरा में डूबे हुए हैं। मैं तुम्हारे साथ दूरतम प्रदेश, धरा के अन्तिम छोर, प्रेतों के वास-स्थान, नहीं उससे भी आगे, मृत्यु के मुख में चलने को तैयार हूँ। आओ, हम अँधियारे की इस चादर के नीचे भाग चलें। सागर-तट पर पहुँचकर हम एक नाव पकड़ लेंगे और किसी अज्ञात दूरस्थ प्रदेश की ओर बह निकलेंगे। सलीम ! शीघ्रता करो ! कहीं ऐसा न हो कि हमारे यहाँ से निकलने से पूर्व ही सुबह का प्रकाश फैल जाये और हम पकड़े जायँ। इन स्वर्ण आभूषणों, इन बहुमूल्य अँगूठियों, इन हारों और इन रत्नों को देखो ! ये भविष्य में हमारी संरक्षा करेंगे और राजपुरुषों के रूप में जीवन-यापन करने में

हमारे सहायक होंगे।···सलीम, बोलो ! तुम बोलते क्यों नहीं हो ? तुम मेरा चुम्बन क्यों नहीं लेते ? तुम मेरे हृदय का चीत्कार और मेरी आत्मा का क्रन्दन क्यों नहीं सुनते ? क्या तुम्हें अब भी विश्वास नहीं कि मैं अपने पति, पिता और माता को छोड़कर इन विवाह-वस्त्रों में केवल तुम्हारे साथ भागने के लिए आयी हूँ ? सलीम, कुछ तो बोलो ! यह विलम्ब उचित नहीं ! ये क्षण हीरे और मोतियों से बेशक़ीमत हैं और इनका मूल्य सम्राटों के ताजों से भी बहुत अधिक है !

वह यह कहकर चुप हो गयी। उसकी आवाज़ में एक राग था, जो जीवन के हास से अधिक सुरीला और मरण के रोदन से अधिक कटु था, जो पक्षी के पंखों की फड़फड़ाहट से अधिक मन्द और सागर-तरंगों की फूत्कारों से अधिक प्रखर था। उसमें एक संगीत था, जिसका स्वर-माधुर्य आशा और निराशा, हर्ष और विषाद, उल्लास और अवसाद के मध्य चक्कर काटता है। उसमें एक नारी के अन्तर की समस्त इच्छाएँ और आकांक्षाएँ निहित थीं।

युवक चुपचाप सुनता रहा। उसके अन्तर में प्रेम और मर्यादा के बीच प्रभुत्व के लिए संघर्ष था। प्रेम वह, जो वन्य प्रदेशों को भी सपाट मैदानों और अन्धकार को प्रकाश में परिवर्तित कर देता है। मर्यादा वह, जो इच्छाओं और आकांक्षाओं से आत्मा को परे रखती है। प्रेम वह, जिसके द्वारा अन्तर में ईश्वर अवतरित होता है; और मर्यादा वह, जिसके द्वारा परम्पराएँ मनुष्य के मस्तिष्क को जकड़ लेती हैं।

एक युग-जैसी लम्बी चुप्पी के अनन्तर, जो अंधकार और अज्ञान के युग-जैसी भयानक और विनाशक थी, युवक ने अपना सिर उठाया। मर्यादा ने प्रेम पर विजय पा ली थी। उसने सहमी आँखों से अपने को घूरनेवाली लड़की की ओर से नेत्र घुमा लिये और शान्त स्वर में बोला—अब सब समाप्त हो चुका है। जागरण ने स्वप्निल कल्पनाओं को मिटा दिया है। तुम अब अपने पति के पास लौट जाओ और उसी समारोह में शीघ्रता से मिल जाओ। कहीं ऐसा न हो कि मेरी आँखें तुम्हें देख लें·

और कहें कि तुमने विवाह की रात ही अपने पति के साथ विश्वासघात किया, वैसे ही, जैसे अतीत में अपने प्रेमी के साथ किया था।

वधू इन शब्दों से सहम गयी और काँपने-सी लगी। मानो एक म्लान पुष्प वायु के पथ पर आ गया था। पीड़ा से वह कराह उठी—नहीं-नहीं ! अब मैं वहाँ वापस नहीं जाऊँगी, उस समय भी नहीं जब मैं अपनी अन्तिम साँसें गिन रही हूँगी ! मैंने उसे सदैव के लिए त्याग दिया है, और यों त्याग दिया है, जैसे एक निष्कासित बंदी रिहाई के समय अपने मातृ-प्रदेश को त्यागता है। तुम अब अपने को मुझसे दूर नहीं रख सकते, न तुम मुझे विश्वासघातिनी ही कह सकते हो ! हम दोनों की आत्माओं को एकाकार करनेवाले प्रेम के हाथ पादरी के उन हाथों से कहीं अधिक पुष्ट हैं, जिन्होंने मेरे शरीर को वर की इच्छा की भेंट चढ़ाया था। मेरी यह बाँहें अपनी गर्दन में यों ही पड़ी रहने दो। अब कोई भी शक्ति उन्हें यहाँ से हटा नहीं सकती ! मेरी आत्मा तुम्हारी आत्मा से मिलकर एकाकार हो गयी है और मृत्यु भी अब उन्हें पृथक कर न सकेगी !

युवक ने अपने को स्वतन्त्र करने के लिए उसके हाथों को झटका दिया। घृणा और तिरस्कार उसके मुख पर झलक आया था।

—मैं कहता हूँ, तुम मेरे पास से चली आओ।—वह कहने लगा—अब मैं तुम्हें भूल चुका हूँ और किसी अन्य को प्यार करता हूँ। लोगों ने जो-कुछ कहा था, वह सच है। जो मैं कह रहा हूँ, क्या सुन नहीं रही हो ? मेरे मस्तिष्क और हृदय से तुम जा चुकी हो और मेरी घृणा तुम्हें अपनी दृष्टि से दूर रखना चाहती है। जाओ ! मेरा पिंड छोड़ दो और मुझे अपनी राह जाने दो। अब अपने पति के प्रति वफ़ादार रहने में ही तुम्हारी भलाई है।

वधू ने एक सिसकारी भरी—नहीं-नहीं, मुझे इन शब्दों पर विश्वास नहीं ! तुम मुझसे अब भी प्रेम करते हो। प्रेम के शब्द तुम्हारे नेत्रों में मैं अब भी पढ़ रही हूँ, और तुम्हारे संस्पर्श में उसी की अनुभूति अब भी पा रही हूँ। मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम मेरे प्रेम से कहीं अधिक प्राणवान् है।

मैं इस स्थान को तब तक न छोड़ूँगी, जब तक तुम मेरे साथ न चलोगे, न मैं उस घर में तब तक वापस जाऊँगी, जब तक मेरे अन्तर की सारी शक्ति निःशेष न हो जायगी ! जहाँ तुम जाओगे, वहाँ मैं भी जाऊँगी। इस धरा के अन्तिम छोर तक मैं तुम्हारा पीछा करूँगी। तुम यहाँ से अकेले केवल मुझे मारकर ही जा सकते हो !

उत्तर में युवक का स्वर पुनः गूँजा—ओ लड़की ! मुझे चुपचाप छोड़ दे, नहीं, मैं चिल्लाकर यहाँ सब अतिथियों को एकत्रित कर लूँगा। क्यों अपनी निर्लज्जता उनके सामने प्रकट करायेगी और उनके मुख के लिए तीखा स्वाद और उनकी ज़बानों के लिए ज़हरीला निवाला बनेगी। इससे पूर्व कि मैं नजीबी को बुलाऊँ और वह तुझपर ताना मारती हुई अपनी विजय के लिए हँसे और तेरी पराजय के लिए तुझे चिढ़ाये, तू मुझे छोड़कर चली जा !

युवक ने यह कहकर गर्दन में पड़े हुए उसके हाथों को पुनः झटका दिया। इस बार लड़की की मुद्रा बदल गयी। उसकी आँखें चमकने लगीं। उसका व्यवहार निवेदन करने से बदल गया, और पीड़ा ने क्रोध और निष्ठुरता का रूप ले लिया। वह उस सिंहनी की भाँति बन गयी, जिसके शावक उससे छीन लिये गये हों, और उस सागर की भाँति, जिसकी गहराई अशांत हो गयी हो और जिसे तूफ़ान ने क्रोधित बना दिया हो।

वह चीख़ उठी— वह कौन है, जो मेरे बाद तुम्हारे प्रेम में उल्लास भरेगा ? वह किसका हृदय है, जो मेरे हृदय की उपेक्षा कर तुम्हारी ज़िन्दगी के चुम्बनों का पान करने के लिए प्याला बनेगा ?

यह कहकर उसने अपने वस्त्रों की तहों से एक कटार निकाली और बिजली की तेज़ी से उसे युवक के हृदय में घुसेड़ दी। युवक काँपा और अंधड़ से टूटी हुई शाख की भाँति धरती पर गिर पड़ा। तब वह उसके चरणों के समीप बैठकर उसके ऊपर झुक गयी। हाथ में थमी कटार से रक्त की बूंदें अब भी टपक रही थीं। युवक ने अपने नेत्र खोले, जिन पर

मृत्यु की कालिमा दौड़ने लगी थी। उसके अधर हिले और डूबती साँसों से यह शब्द फूटे—प्रियतमे ! मेरे निकट आओ ! और निकट आओ ! मेरी लैला ! अब मुझे छोड़ना नहीं ! मृत्यु जीवन से अधिक शक्तिशाली है, किन्तु प्रेम मृत्यु से भी अधिक शक्तिवान है ! विवाह-समारोह के अतिथियों की इन रंगरेलियों और उल्लास की इन आवाज़ो कों सुनो ! प्याले से प्याला टकराकर कैसे वज रहे हैं ! पर तुमने इस वातावरण में अपनी साँस घुटती पायी और वहाँ से निकलकर मेरे समीप आयी हो। मुझे उस हाथ का चुम्बन कराओ, जिसने मेरी जीवन-डोर काटी है ! तुम भी मेरे अधरों का चुम्बन करो, उन अधरों का, जिन्होंने असत्य का आश्रय लिया और मेरे हृदय की वास्तविकता को छिपाये रखा। इन मुरझायी पलकों को अव अपनी अँगुलियों से बंद कर दो, जिन पर मेरे लहू की छींटें अब भी विद्यमान हैं। जब मेरी आत्मा मुझसे अलग होकर शून्य में विलीन हो जाये, तब मेरे सीधे हाथ में यह कटार पकड़ा देना और उन सबसे कहना कि ईर्ष्या और निराशावश इसने आत्महत्या कर ली है। लैला ! सच में मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ ! पर मैंने विवाह की रात तुम्हारे साथ भागने की अपेक्षा यह अधिक उचित समझा कि अपने हृदय और ज़िन्दगी की खुशी का बलिदान कर दूं। मेरी अन्तरात्मा की प्रिय, मेरी लैला ! इससे पूर्व कि लोग मेरे शव पर दृष्टिपात करें, मेरा चुम्बन लो !—युवक ने यह कहते हुए अपने घायल हृदय को एक हाथ से दबाया और इसी के साथ उसका सिर एक ओर गिर गया, प्राण-पंछी उड़ गये।

तब वधू अपना सिर उठाकर उस मकान की ओर देखती हुई चिल्लायी —तुम-सब यहाँ आकर मेरे वर और विवाह को देखो ! आओ ! मैं तुम्हें अपनी सुहाग-सेज दिखाऊँगी ! ओ निद्रा में निमग्न प्राणियो ! जागो ! ओ मदिरा में मदोन्मत्त जीवो ! होश में आओ ! विलम्ब न करो ! आओ ! मैं तुम्हें प्रेम, मरण और जीवन के रहस्यों से अवगत कराऊँगी !

वधू का स्वर उस घर के प्रत्येक कोने में गूंज उठा। रंगरेलियों में डूबे अतिथि उसकी गूंज से काँप उठे। कुछ क्षण तक वे सकते-जैसी दशा

में रहे, मानो उनकी बेहोशी को चैतन्य छू गया हो। फिर वे शीघ्रता से बाहर अँधेरे में दौड़े और गिरते-पड़ते, लड़खडाते हुए वहाँ आकर रुक गये, जहाँ युवक की लाश पड़ी थी और वधू उसके समीप घुटनों के बल बैठी थी। दृश्य की वीभत्सता से डरकर वे पीछे हट गये। किसी में साहस न हुआ कि घटना का कारण पूछे। शव के वक्ष से बहते हुए लहू और वधू के हाथ में थमी कटार की चमक से उनकी ज़बान को लकवा मार गया और उनके शरीरों को जड़ कर गया।

वधू ने उनकी ओर घूमकर देखा। उसका मुख गम्भीर और ग़मगीन था। वह चीख़ते-जैसे स्वर में कहने लगीं—बुज़दिलो! मौत के स्पर्श से इतना घबराओ नहीं! मेरे निकट आओ! मौत एक बहुत बड़ी न्यामत है और तुम्हारी क्षुद्रता से उसे कोई सरोकार नहीं! आओ! इस कटार से काँपो मत! यह एक अति पवित्र अस्त्र है और तुम्हारे अपवित्र शरीरों और कलुषित हृदयों का स्पर्श यह कदापि न करेगा! इस सुन्दर युवक की ओर निहारो! यह विवाह के अलंकारों से सुसज्जित है न! यह मेरा प्रियतम है और मैंने इसलिए इसकी हत्या की, क्योंकि यह मेरा प्रियतम है! यही मेरा वर है और मैं इसकी वधू हूँ। हमने अपनी सुहागरात मनाने के लिए एक सेज की खोज की थी, पर वह इस संसार में नहीं किली, जो तुम्हारी रीतियों-नीतियों से संकीर्ण, तुम्हारे अज्ञान से अंधकार-मय और तुम्हारे कुकृत्यों से अपवित्र बन गया है। हमारे लिए तब यही उचित था कि हम इन बादलों से परे किसी दूसरे प्रदेश में उसकी खोज करते! कायरो! आगे क्यों नहीं बढ़ते? सम्भवतः हमारे चेहरों पर तुम्हें ईश्वरी छाया के दर्शन हो सकें और उसी की मधुर वाणी को हमारे हृदयों के माध्यम से सुन सको!

—वह दुष्टा ईर्ष्यालु स्त्री कहाँ है, जिसने मुझे मेरे प्रियतम के विरुद्ध बरगलाना चाहा था और कहा था कि वह किसी अन्य पर आसक्त है और मुझे भूल गया है? उसने सोचा था कि इस प्रकार मैं प्रियतम को बिसार दूंगी। पादरी ने जब मेरे और उसके बान्धव के सिर पर हाथ रखा था,

दुष्टा ने विचारा था कि बाज़ी उसके हाथ रही। वह नागिन, विश्वास-घातिनी नजीबी अब आकर देखे कि कैसे उसने तुम लोगों को मेरे प्रियतम के विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में, उस व्यक्ति के विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में नहीं, जिसे उसने मेरे लिए वरा था, आमोद-प्रमोद मनाने के लिए एकत्रित किया है ! शायद तुम मेरे शब्दों के अर्थ नहीं समझ रहे हो। भला कभी अन्धकार इस योग्य हुआ कि सितारों के गीतों को समझे ? पर तुम अपने नौनिहालों को उस स्त्री के बारे में अवश्य बताना, जिसने विवाह की रात ही अपने पति की हत्या की। जब कि तुम्हारी गंदी ज़बानें हमें बुरा-भला कह रही होंगी, वे हमारे लिए दुआएँ माँगेंगी, क्योंकि सत्य और पुण्यात्माएँ कल तक अपने लिए निवास-स्थान खोज लेंगी। मूर्खो ! तुमने मुझे पत्नी बनाने के लिए धन, कपट और छल का प्रयोग किया ! तुम उन मूढ़ जनों के प्रतीक हो, जो अंधकार में प्रकाश की दुराशा करते हैं, चट्टान से जल-स्रोत फूटने की प्रतीक्षा करते हैं और कंकरीली भूमि में मुस्कराते गुलाब के दर्शन की इच्छा रखते हैं ! तुम उस प्रदेश के प्रतीक हो, जो मूर्खों के नेतृत्व में उसी प्रकार है, जिस प्रकार कोई अंधा अंधे पथप्रदर्शक के नेतृत्व में होता है ! तुम उन अज्ञ पुरुषों के प्रतीक हो, जो अपने को अंलकृत करने के लिए अपनी कलाई और ग्रीवा कटाना स्वीकार करते हैं। पर मैं तुम्हारी इस अज्ञता के लिए तुम्हें क्षमा कर दूँगी, क्योंकि बिदाई की बेला को हर्ष का पर्व समझनेवाली आत्माएँ संसार त्यागते समय उसके पापों को क्षमा कर जाती हैं !

यह कहकर वधू ने अपसे हाथ में थमी कटार ऊपर उठायी और उसे उस दृष्टि से देखा, जिस दृष्टि से एक प्यासा अपने अधरों तक आते हुए जल-पात्र को देखता है, और दूसरे क्षण उसे अपने वक्ष में प्रविष्ट कर लिया। तराशे हुए कुमुदिनी के फूल की भाँति वह अपने प्रियतम की बगल में गिर गयी। दूर खड़ी हुई स्त्रियाँ दर्द और भय से चीखीं और मूर्च्छित होती हुई एक-दूसरे पर गिरने लगीं। पुरुष समुदाय भी भय और घबराहट से विचलित हो उठा।

विदा लेती हुई वधू ने उनकी ओर फिर देखा। उसके वक्षःस्थल से रक्त का प्रवाह अभी जारी था। बोली—अपवित्र आत्माओ ! अब हमारे निकट न आना और न हम दोनों को एक-दूसरे से अलग करना, अन्यथा तुम्हारे सिर के ऊपर मँडरानेवाली आत्माएँ तुम्हारी गर्दन पकड़कर जीवन-लीला समाप्त कर देंगी ! इस प्यासी धरती को एक साथ ही हमारा रक्त पीने दो। यह अपने अन्तर में हम दोनों को उसी प्रकार छिपाकर सुरक्षित रखेगी, जिस प्रकार वह बसंत के लिए बीजों को शिशिर के तुषारपात से छिपाकर सुरक्षित रखती है !

वधू अपने प्रेमी के निकट और खिसक गयी और अपने अधरों से उसके शीत अधरों का चुम्बन करने लगी। डूबती हुई अन्तिम साँसों से टूटे-से यह शब्द और फूटे—मेरे प्रियतम ! मेरी ओर निहारो ! मेरी अन्तरात्मा के दूल्हा, मेरी ओर देखो ! देखो, ये ईर्ष्यालु किस प्रकार हमारी सेज के चारों ओर खड़े हैं ! देखो, कैसे यह अपलक हमें निहार रहे हैं ! देखो, किस प्रकार ये अपने में उबल और दाँत पीस रहे हैं ! बहुत समय तक तुम्हें मेरी प्रतीक्षा करनी पड़ी थी, सलीम ! पर अब मैं तुम्हारे क़रीब हूँ। मैं सारे बन्धनों और पाशों को तोड़ आयी हूँ। आओ, हम विलम्ब न करें और प्रकाश की ओर शीघ्रता से प्रस्थान करें, क्योंकि इस अंधकार में हमारा पड़ाव बहुत काल तक रहा है। समस्त वस्तुएँ मेरे सामने से भाग रही या छिप रही हैं। मेरे प्रियतम ! सिवा तुम्हारे अब मेरी दृष्टि इन किसी पर न उठेगी। मेरे इन अधरों की ओर निहारो, जिनसे यह अंतिम साँस निकल रही है। सलीम ! आओ ! अब हम चलें, क्योंकि प्रेम ने अपने डैने फैला दिये हैं और वह प्रकाश में चलने के लिए हमारे सम्मुख मँडरा रहा है !

यह कहकर वधू अपने प्रेमी के वक्ष पर गिर गयी। उसका रक्त युवक के रक्त में मिल गया और उसका युवक सिर की ग्रीवा पर टिक गया। पर उसकी आँखें युवक की आँखों को देखने के लिए खुली रहीं।

वे स्तब्ध-से शान्त खड़े रहे। उनके मुख पर ताले जड़ गये थे और

पैर लड़खड़ाने लगे थे। मृत्यु-सम्राट ने उनकी गतिशीलता और शक्ति का मानो अपहरण कर लिया था।

तभी वहाँ वह पादरी आया, जिसने वधू का विवाह कुछ समय पूर्व सम्पन्न कराया था। उसने अपना सीधा हाथ उठाकर मृत युग्म की ओर हिलाया और उन त्रसित लोगों की तरफ़ देखता हुआ, खुरदरी आवाज़ में चिंघाड़ा—वे हाथ काट देने-योग्य होंगे, जो निर्लज्जता और पाप के रक्त से रंजित इन शवों के लिए उठेंगे! वे नेत्र श्राप पाने के योग्य होंगे, जो इन घृण्य दुरात्माओं के लिए, जो यमदूतों-द्वारा नरक में ले जायी गयी हैं, सहानुभूति में आँसू बहायेंगे! शैतान के इस पुत्र और पाप की इस पुत्री को लहू से चिपचिपी इस धरती पर तब तक पड़े रहने दो, जब तक कुत्ते इनके गोश्त को नोच न डालें और हवा इनकी हड्डियों को बिखेर न दे! तुम सब इन दुरात्माओं के पाप और दुराचार की दुर्गन्ध से दूर रहकर अपने अपने निवास-स्थानों को लौट जाओ! शीघ्रता करो! कहीं ऐसा न हो कि इससे पूर्व ही नरक अग्नि की जिह्वा तुम्हें चाट जाये! तुम सब कान खोलकर सुन लो! जो यहाँ अब भी रहेगा, वह जातिच्युत कर दिया जायगा और ईश्वर के वास-स्थान पवित्र चर्च में उसका प्रवेश निषिद्ध होगा! वह ईसाइयों के पूजन और प्रार्थनाओं में भाग भी न ले सकेगा!

इस पर सुसन आगे बढ़ी, जिसे वधू ने अपने प्रियतम के निकट दूतिनी बनाकर भेजा था। वह पादरी के समक्ष खड़ी हो गयी और डबडबाये नेत्रों से घूरती हुई निर्भीक वाणी में बोली—ओ अज्ञान से अंध पातकी! मैं यहाँ रहूँगी! मैं सुबह तक इनकी निगरानी करूँगी और इन झुरमुटों के नीचे इनके लिए एक कब्र खोदूँगी। यदि तुम मुझे खोदने के साधन से वंचित रखोगे, तो मैं अपनी अंगुलियों के नाखूनों से यहाँ की धरती विदीर्ण कर डालूंगी! यदि तुम मेरे हाथ भी बाँध दोगे तो मैं उसे दाँतों से खोद डालूंगी! तुम-सब इस स्थान से भाग जाओ, क्योंकि लोबान के धुएँ से यह महक रहा है और पशुओं को सुगन्धों से घृणा होती है! तुम इस

अँधेरे में ही अपने विस्तरों में मुँह छिपा लो, क्योंकि जो स्वर्गीय संगीत प्रेम के इन शहीदों के ऊपर वायु में तरंगित हो रहा है, वह उन कानों में कभी प्रवेश न करेगा, जो गंदगी से बंद हैं !

वे-सब तो पादरी की डरावनी मुद्रा से भयभीत होकर वहाँ से चले गये, पर वह लड़की शान्त निर्भीक खड़ी रही। उन शवों को निहारती हुई यह यों दीख रही थी मानो एक माता रात के सन्नाटे में जगकर अपने शिशुओं की रखवाली कर रही हो !